परिवहन विभाग के सड़क सुरक्षा पखवाड़े का हुआ... 10

शिवाजी से लेकर संभाजी तक की याद दिलाती... 12

जन एक्सप्रेस

लखनऊ
वर्षः 14 | अंकः 288
मूल्यः ₹ 3.00/-
पेज : 12
मंगलवार | 01 अगस्त, 2023

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

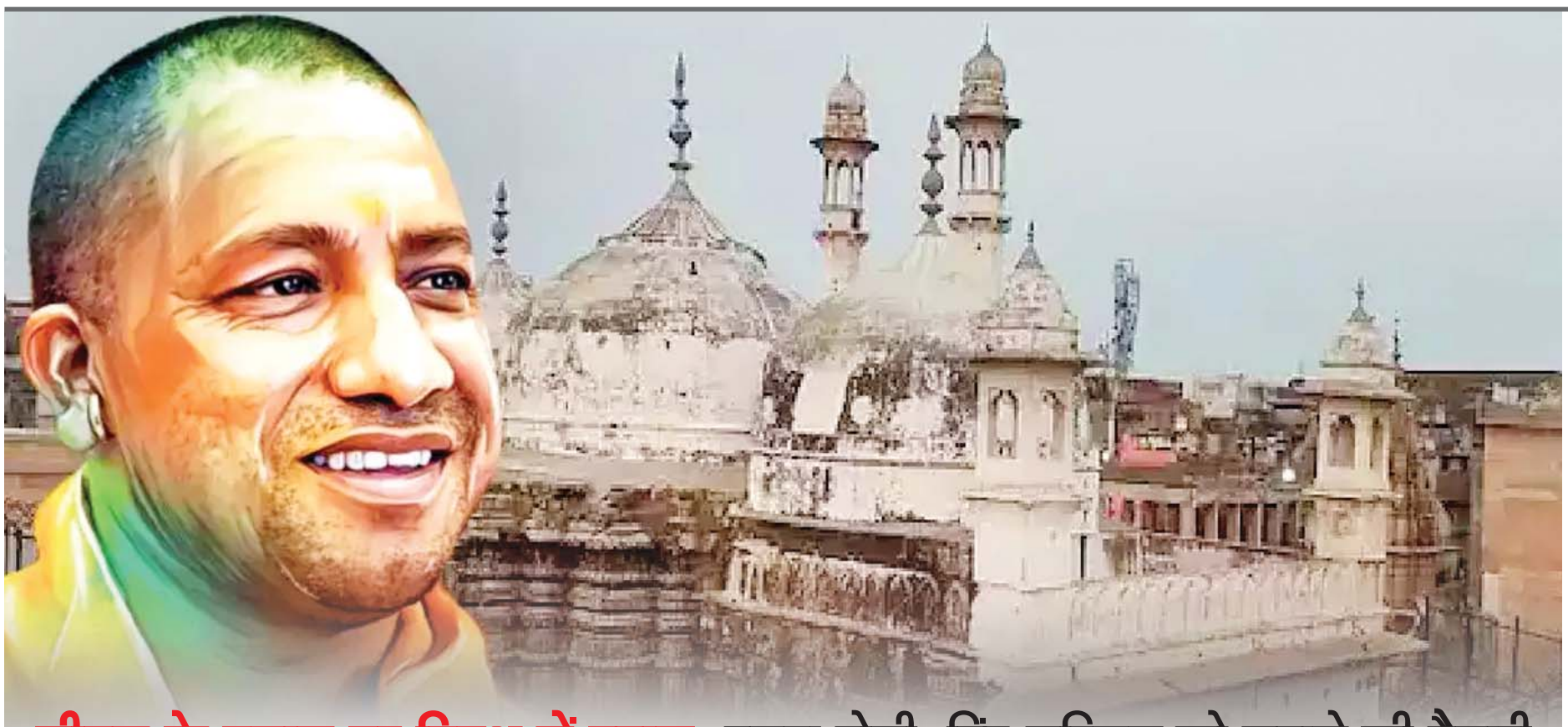

सीएम के बयान पर विपक्ष में उबाल: बसपा बोली, हिंदू-मुस्लिम को लड़ाने की तैयारी

ज्ञानवापी को मस्जिद कहेंगे तो विवाद होगा: सीएम योगी

- त्रिशूल मस्जिद के अंदर क्या कर रहा, मुस्लिम समाज आगे आकर कहे, ये ऐतिहासिक गलती
- असदुद्दीन ओवैसी ने कहा, सीएम ने इस पर बोलकर कानून के दायरे को लांघा है

जन एक्सप्रेस | लखनऊ

सीएम योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को कहा, अगर ज्ञानवापी को हम मस्जिद कहेंगे तो विवाद होगा। भगवान ने जिसको दृष्टि दी है, वो देख न। त्रिशूल मस्जिद के अंदर क्या कर रहा है? हमने तो नहीं रखे हैं न। ज्योर्तिलिंग हैं... देव प्रतिमाएं हैं। पूरी दीवारें चिल्ला-चिल्लाकर क्या कह रही हैं। ये बात योगी ने न्यूज एजेंसी एएनआई को दिए इंटरव्यू में कहीं। उन्होंने कहा, मुस्लिम समाज को ऐतिहासिक गलती दुरुस्त करनी चाहिए। मुझे लगता है कि ये प्रस्ताव मुस्लिम समाज की तरफ से आना चाहिए कि साहब... ऐतिहासिक गलती हुई है। उस गलती के लिए हम चाहते हैं कि समाधान हो। ज्ञानवापी मस्जिद विवाद पर इलाहाबाद हाईकोर्ट में सुनवाई चल रही है। कोर्ट ने ज्ञानवापी के एएसआई सर्वे पर रोक लगा रखी है। अब इस मामले में कोर्ट 3 अगस्त को फैसला सुनाएगा। ऑल इंडिया मजिलस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने कहा, जिस मामले पर हाई कोर्ट का फैसला आना है। यूपी सीएम ने उस पर बोलकर कानून के दायरे को लांघा है। वो कानून की इज्जत करें और ऐसे मामलों पर विवादित बातें नहीं करें।

योगी के इंटरव्यू की 4 बड़ी बातें

- **देश संविधान से चलेगा, मत और मजहब से नहीं:** देखिए मैं ईश्वर का भक्त हूं, लेकिन किसी पाखंड में विश्वास नहीं करता। आपका मत, आपका मजहब, अपने तरीके से होगा, अपने घर में होगा। अपनी मस्जिद, अपने इबादतगाह तक होगा। सड़क पर प्रदर्शन करने के लिए नहीं और इसको आप जो हैं किसी भी अन्य तरीके से दूसरे पर थोप नहीं सकते। नेशन फर्स्ट (देश पहले है)। अगर देश में किसी को रहना है तो राष्ट्र को सर्वोपरि मानना है, अपने मत और मजहब को नहीं।
- **इंडिया गठबंधन को इंडिया नहीं बोलना चाहिए:** इंडिया गठबंधन को इंडिया नहीं बोलना चाहिए। यह तो डॉट कॉम ग्रुप है। चोला बदलने से उन्हें पिछले कर्मों से मुक्ति नहीं मिल जाएगी।
- **देश को बंगाल बनाना चाहते हैं क्या:** मैं पिछले सवा 6 साल से मुख्यमंत्री हूं। 2017 से उत्तर प्रदेश में कोई दंगा तो नहीं हुआ। बड़ी-बड़ी बातें करने वाले लोग देखें कि चुनाव कैसे होते हैं। पंचायत चुनाव, नगर निकाय चुनाव, विधानसभा चुनाव हुए, वेस्ट बंगाल में भी चुनाव हुए, वहां क्या हाल हुए। देखा तो है ही न। क्या वेस्ट बंगाल बनाना चाहते हैं देश को।
- **विपक्ष बंगाल पर कुछ नहीं बोलता:** कुछ लोग सत्ता में आकर जबरन पूरी व्यवस्था को कैद कर देना चाहते हैं। जो हमें वेस्ट बंगाल में देखने को मिला। कैसे वहां विरोधी दलों के लोगों को मारा गया। ये चीजें आंखों को खोलने वाली हैं। उस पर कोई बोलता नहीं। 1990 में जो कुछ कश्मीर में हुआ, उस पर सब मौन हैं। आखिर ये दोहरा दृष्टिकोण क्यों?

हाईकोर्ट ने 3 अगस्त तक सर्वे पर लगाई है रोक

ज्ञानवापी के एएसआई सर्वे पर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने रोक लगा रखी है। कोर्ट 3 अगस्त को इस मामले में फैसला सुनाएगी। उसके बाद स्पष्ट होगा कि सर्वे होगा या नहीं? दरअसल, वाराणसी की जिला कोर्ट ने ज्ञानवापी में वजूस्थल को छोड़कर पूरे परिसर का एएसआई से सर्वे कराने का आदेश दिया था। 24 जुलाई को एएसआई की टीम ने ज्ञानवापी का सर्वे शुरू कर दिया था। हालांकि इस फैसले के खिलाफ मुस्लिम पक्ष सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया था। कोर्ट ने तत्काल सर्वे पर रोक लगाते हुए मुस्लिम पक्ष से हाईकोर्ट में याचिका दाखिल करने को कहा था।

स्वामी ने कहा, हिन्दू धर्म एक जाति विशेष के लिए बना

- ऑल इंडिया मजिलस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने कहा, जिस मामले पर हाई कोर्ट का फैसला आना है। यूपी सीएम ने उस पर बोलकर कानून के दायरे को लांघा है। वो कानून की इज्जत करें और ऐसे मामलों पर विवादित बातें नहीं करें।
- सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य ने कहा- ज्ञानवापी का मामला कोर्ट में है। मैं मस्जिद में मंदिर खोजने वालों को सावधान कर रहा हूं। धर्म के ठेकेदारों ने दलित, पिछड़ों को समय-समय पर अपमानित किया है। लगता है हिन्दू धर्म एक जाति विशेष के लिए बना है। ये दलित, पिछड़ों के लिए बना ही नहीं है।
- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी ने कहा- ज्ञानवापी एक ऐतिहासिक सच्चाई है। सीएम ने उसे स्वीकार करने की बात कही है। उस स्थान को देखकर जो दिखता है, जो राय है। उन्हीं विषयों पर कहा है। यह देश की आस्था से जुड़ा विषय है। मामला कोर्ट में है। कोर्ट ने सर्वे के लिए कहा है। बहुत सारे लोग सर्वे में व्यवधान डालेंगे। हमें मिलकर काम करना चाहिए।
- ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के संस्थापक सदस्य मोहम्मद सुलेमान ने कहा- सीएम के बयान से तकलीफ हुई। सीएम को कानून सम्मत बात कहनी चाहिए। 1991 में जो कानून बना उसकी रक्षा करनी चाहिए। सीएम का बयान योगी या फिर पुजारी की तरह दिया गया है। यह बयान एक पक्ष के लिए दिया है। देश क्या वर्ग विशेष की इच्छाओं और धार्मिक आस्थाओं से चलेगा। उन्हें अपने बयान पर पुनर्विचार करना चाहिए।

रिपोर्ट: ज्ञानवापी में त्रिशूल, डमरू और कमल जैसे चिह्न

- दरअसल, स्थानीय कोर्ट के आदेश पर मई 2022 मे ज्ञानवापी का कमीशन सर्वे हुआ था। अदालत ने कोर्ट कमिश्नर नियुक्त किया था। इसकी रिपोर्ट कोर्ट में दाखिल होने के साथ ही लीक हुई थी।
- मस्जिद के भीतर हाथी के सूंड़, त्रिशूल, पान, घंटियां दिखीं। मुख्य गुंबद के नीचे दक्षिणी खंभे पर स्वास्तिक का चिह्न मिला।
- मस्जिद के प्रथम गेट के पास तीन डमरू के चिह्न मिले। उत्तर-पश्चिम दिशा में 15X15 फीट का एक तहखाना दिखा, जिसके ऊपर मलबा पड़ा था, वहां पड़े पत्थरों पर मंदिर जैसी कलाकृतियां।
- 3 फीट गहरा कुंड मिला। कुंड के चौतरफा 30 टोटियां लगी थीं। कुंड के बीच में लगभग 6 फीट गहरा कुआं दिखा। कुएं के बीचो-बीच गोल पत्थरनुमा आकृति दिखी।
- बाहर विराजमान नंदी और अंदर मिले कुंड (जिसके बीचो-बीच एक पक्ष द्वारा शिवलिंग स्थापित बताया गया) के बीच की दूरी 83 फीट 3 इंच है।
- कुंड के बीचो-बीच स्थित पत्थर की गोलाकार आकृति (जिसे एक पक्ष द्वारा शिवलिंग कहा गया) में सींक डालने पर 63 सेमी गहराई मिली। पत्थर की गोलाकार आकृति के बेस का व्यास 4 फीट था।

जरूरतमंदों के आवास की आस हुई पूरी: योगी

मुख्यमंत्री योगी ने पीएम आवास योजना के 5100 लाभार्थियों के खातों में ट्रांसफर किया 51.52 करोड़

जन एक्सप्रेस। गोरखपुर

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गोरखपुर के हर दौरे पर विकास व जनकल्याणकारी कार्यों की सौगात देते हैं। इसी कड़ी में असोमवार को सीएम योगी ने गोरखपुर में 5100 जरूरतमंदों के आवास की आस पूरी की है।

आपको बता दें कि आज सुबह करीब 11 बजे से वीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज परिसर में आयोजित लाभार्थी सम्मेलन में सीएम ने प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के लाभार्थियों के बैंक खातों में 51.52 करोड़ रुपये की धनराशि ट्रांसफर की। लाभार्थी सम्मेलन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 250 लाभार्थियों को 50 हजार रुपये की दर से प्रथम किश्त, 2602 लाभार्थियों को 1.50 लाख रुपये की दर से दूसरी किश्त तथा 2248 लाभार्थियों को 50 हजार रुपये की दर से तीसरी किश्त की धनराशि सिंगल क्लिक से लाभार्थियों के बैंक खातों में अंतरित की है। पीएम आवास योजना के तहत गोरखपुर में 43600 आवास स्वीकृत हैं। इसमें से 35500 आवास पूर्ण हो चुके हैं। इसमें 8400 आवास चार माह पूर्व ही स्वीकृत हुए हैं। इन सभी को प्रथम किश्त जारी कर दी गई है और निर्माण कार्य कराया जा रहा है। उक्त के अतिरिक्त जुलाई माह में जिले में 5522 आवास और स्वीकृत किए गए हैं। योजना के पोर्टल पर इनके अटैचमेंट का कार्य चल रहा है।

सीएम योगी ने 350 से अधिक लोगों की सुनी समस्याएं

गोरखपुर दौरे पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को जनता दर्शन में आये लोगों की समस्याओं को सुना। अधिकारियों को उनके तीव्र गति से निस्तारण का निर्देश दिया। गोरखनाथ मंदिर में लगे जनता दर्शन कार्यक्रम में प्रदेश के कई जिलों के लोग पहुंचे थे। लगभग 350 की संख्या में आये लोगों की अलग अलग समस्याएं रहीं। इनमें से कईयों की समस्याएं राजस्व से जुड़ी रहीं तो कई ने इलाज में आ रही दिक्कतों को दूर करने की गुहार लगायी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लोगों की पीड़ा सुनने के बाद सम्बन्धित विभागों के उच्चाधिकारियों को इनका निस्तारण तीव्र गति से करने का निर्देश दिया। इस दौरान सीएम ने कहा कि किसी भी बीमार के इलाज में धन की कमी नहीं आने दी जाएगी। सबकी समस्याओं का न सिर्फ समय बद्ध निस्तारण होगा बल्कि न्याय भी मिलेगा। शिकायतकर्ताओं के साथ आये बच्चों को सीएम योगी ने दुलार भी किया।

फतेहपुर में ट्रक ने कार को मारी टक्कर दो महिला समेत पांच लोगों की मौत

जन एक्सप्रेस। फतेहपुर

यूपी के फतेहपुर स्थित हुसैनगंज थाना क्षेत्र के बेरागढ़ीवा के पास सोमवार दोपहर साढ़े तीन बजे भीषण सड़क हादसा हो गया। इसमें ट्रक और आल्टो कार की आमने-सामने भिड़ंत हो गई। हादसे में कार सवार पांच लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, दो महिला समेत पांच लोगों की दर्दनाक मौत हुई है। घटना से लोगों में चीख-पुकार मच गई। बताया जा रहा है कि ओवरटेक करने के चक्कर में कार सोमवार दोपहर करीब साढ़े तीन बजे सामने से आ रहे ट्रक में टकरा गई। हादसे में कार सवार दंपती समेत पांच लोगों की मौत हो गई। मौके पर डीएम श्रुति, एसपी उदय शंकर सिंह पहुंचे। फोरेंसिक टीम भी जांच को पहुंची। गाजीपुर थाना क्षेत्र के पैगंबरपुर बकरी गांव निवासी दयाशंकर (70) के रिश्तेदार के रामपाल की हार्टअटैक से मौत हो गई थी। अंतिम संस्कार में शामिल होने दयाशंकर अपनी पत्नी बृजरानी (65), भाई गोरेलाल (60) व परिवार की सुदमिया (55) पत्नी शिवशंकर को लेकर हुसैनगंज थाने के 12 मील जमरावां निवासी प्रमोद यादव (35) कार चालक के साथ जा रहे थे। मृतक रामपाल का गांव भी 12 मील है। हुसैनगज थानांतर्गत बेरागढ़ीवा बकरी मंडी के पास कार ने ट्रक को ओवरटेक किया। सामने से भी ट्रक आ गया। उसी ट्रक में सामने से कार भिड़ गई।

योगी सरकार की बड़ी पहल: बाढ़ वाली नदियों के पानी को सूखे खेतों तक पहुंचाएगी सरकार, भरेंगे जलाशय भी

जन एक्सप्रेस/लखनऊ। सीएम योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के आसपास के राज्यों से आने वाले बाढ़ के पानी को सुनियोजित ढंग से सूखे खेतों तक पहुंचाने की व्यवस्था करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने संबंधित विभाग के अधिकारियों को कहा है कि प्रदेश के सभी 71 जलाशयों में बाढ़ के पानी को चैनलाइज करते हुए इनमें पहुंचाने की समुचित व्यवस्था करें। इसके लिए उन्होंने सिंचाई विभाग को विस्तृत कार्ययोजना तैयार करने को कहा है। पिछले दो वर्षों से प्रदेश के जिलों को अल्पवृष्टि की समस्या से जूझना पड़ रहा है, जिससे खरीफ की फसलों को भारी नुकसान हो रहा है। इस साल भी प्रदेश के 40 जिलों में अब तक अल्पवृष्टि दर्ज की गयी है। वहीं हाल ही में उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में हुई भारी बारिश के बाद प्रदेश की कई नदियों का जलस्तर बढ़ा है। इससे सरयू, गंगा और यमुना से सटे जिलों में बाढ़ की समस्या उत्पन्न हुई है। काफी गांव बाढ़ की चपेट में आ गए। पिछले साल भी अक्टूबर में आई बाढ़ ने प्रदेश के कई जनपदों में भारी नुकसान पहुंचाया था। हैरत की बात यह है कि नदियों में उफान के बावजूद ज्यादातर इलाके सूखे की कगार पर हैं। इस वर्ष पूर्वी उत्तर प्रदेश में दक्षिणी पश्चिमी मानसून से कुल 233.5 मिली मीटर वर्षा रिकॉर्ड की गयी है, जो सामान्य से 64.8 मिली मीटर कम है। इनमें संतकबीर नगर, पीलीभीत, मऊ, मीरजापुर, देवरिया, कुशीनगर और कौशांबी में सबसे कम बारिश दर्ज की गयी है। इन इलाकों में 60 से 90 प्रतिशत कम बारिश रिकॉर्ड की गई है। इसके अलावा पूर्वी उत्तर प्रदेश के 33 जिले ऐसे हैं, जहां 20 से 60 प्रतिशत बारिश दर्ज की गयी है। प्रदेश के केवल 18 जिले ही ऐसे हैं, जहां पर सामान्य बारिश हुई है। वहीं 17 जिलों में सामान्य से अधिक बारिश हुई है। एक तरफ नदियों में उफान है तो दूसरी तरफ खेत सूखे हैं। सीएम योगी आदित्यनाथ ने सिंचाई विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया है कि बाढ़ के पानी का अधिक से अधिक उपयोग किसानों के हितों में किया जा सके, इस योजना पर काम करें। प्रदेश में 75090.90 किलोमीटर की नहर प्रणाली है। इनमें वृहद और मध्यम स्तर के पंप नहरों की संख्या 30 है, जबकि लघु डाल नहरें 254 हैं।

प्रमोशन से इनकार किया तो कभी नहीं होगी पदोन्नति, बैठेगी जांच भी

जन एक्सप्रेस | लखनऊ

राज्य कर विभाग में बरसों से जमे कर्मचारियों पर सख्ती शुरू हो गई है। विभाग ने प्रोन्नति कोटे को लेकर सभी कर्मचारियों से अग्रिम फोरगो (पदोन्नति से इनकार) मांग लिया है। इसके तहत प्रमोशन से इनकार करने पर शपथ पत्र देना होगा कि भविष्य में कभी प्रमोशन की मांग नहीं करेगा। साथ ही पदोन्नति से इनकार करने वाले कर्मचारियों की जांच भी होगी। इस संबंध में अपर आयुक्त (प्रशासन) राज्यकर मुख्यालय ओमप्रकाश वर्मा ने सभी अपर आयुक्तों को पत्र जारी कर दिया है। इस फरमान से पूरे प्रदेश के राज्य कर विभाग में खलबली मच गई है। वर्ष 2022-23 और वर्ष 23-24 में विभागीय प्रोन्नति कोटे की रिक्तियों के सापेक्ष लोक सेवा आयोग के माध्यम से चयन किया जाना है। इसमें रिक्तियों की संख्या के आधार पर 10 अप्रैल को जारी वरिष्ठता सूची के आधार पर पदोन्नति की जानी है। इसे अमल में लाने से पहले कर्मचारियों से फोरगो मांगा गया है। राज्य कर विभाग में एक ही सीट पर जमे कर्मचारियों की निगरानी होगी। उनकी मनमानी रोकने के लिए पदोन्नति न चाहने का लिखित शपथपत्र देना होगा। एक बार पदोन्नति से इनकार का शपथपत्र देने के बाद उसे भविष्य में होने वाली पदोन्नति की पात्रता सूची में कभी शामिल नहीं किया जाएगा। पदोन्नति न लेने वाले कर्मचारियों के कामकाज की जांच वरिष्ठ अधिकारी करेंगे।

निर्देश माफिया मुख्तार अंसारी के छोटे बेटे उमर अंसारी को सुप्रीम कोर्ट से नहीं मिली कोई राहत

हेट स्पीच मामलों में न्यायपालिका का रुख सख्त

- भड़काऊ भाषण देने के आरोप में फंसे उमर अंसारी ने अपने ऊपर लगे आरोपों को हटाने और गैर जमानती वारंट को रद्द करने की मांग की थी
- हाल ही में समाजवादी पार्टी के नेता और पूर्व मंत्री आजम खां को भी इलाहाबाद हाईकोर्ट से राहत नहीं मिली थी

जन एक्सप्रेस | डॉ. वैभव शर्मा

लखनऊ। हेट स्पीच मामलों में न्यायपालिका का रुख सख्त होता जा रहा है। राजनीतिक व निजी स्वार्थों के लिए समाज को भड़काने वालों को छूट की कोई गुंजाइश नहीं दी जा रही। इसी कड़ी में उत्तर प्रदेश के बांदा जेल में बंद माफिया मुख्तार अंसारी के छोटे बेटे उमर अंसारी को सुप्रीम कोर्ट से राहत नहीं मिली है। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022 के दौरान भड़काऊ भाषण देने के आरोप में फंसे उमर अंसारी ने अपने ऊपर लगे आरोपों को हटाने और गैर जमानती वारंट को रद्द करने की मांग सुप्रीम कोर्ट से की थी। हाल ही में समाजवादी पार्टी के नेता और पूर्व मंत्री आजम खां को इलाहाबाद हाईकोर्ट से राहत नहीं मिली थी। यहां तक कि कोर्ट ने आजम खां को अपनी आवाज का सैंपल देने के भी निर्देश दिए हैं।

मुख्तार अंसारी और उसका बेटा उमर अंसारी

मामला 2022 के यूपी विधानसभा चुनाव से जुड़ा है

मामला 2022 के यूपी विधानसभा चुनाव से जुड़ा है। जब उमर अंसारी के बड़े भाई अब्बास अंसारी सपा गठबंधन की तरफ से सुभासपा उम्मीदवार के तौर पर मैदान में थे। इस दौरान एक चुनावी जनसभा में मुख़्तार अंसारी के बेटों के द्वारा आपत्तिजनक भाषण देने का वीडियो वायरल हुआ था। इस मामले में उमर अंसारी को भी आरोपी बनाया गया है और उनके खिलाफ गैर जमानती वारंट भी जारी है। जिसके बाद उमर अंसारी ने राहत के लिए इलाहाबाद हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया लेकिन उनकी याचिका खारिज हो गई। जिसके बाद उमर अंसारी सुप्रीम कोर्ट पहुंचे थे, जहां से भी राहत नहीं मिली है।

हाईकोर्ट से भी कोई राहत नहीं मिली और हम भी कोई राहत नहीं देंगे: सुप्रीम कोर्ट

उमर अंसारी के वकील ने सुप्रीम कोर्ट में दलील दी कि आपत्तिजनक भाषण उन्होंने नहीं दिया था, वे सिर्फ स्टेज पर बैठे थे, जहां पर भाषण दिया गया था। जिसपर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हाईकोर्ट से भी कोई राहत नहीं मिली और हम भी कोई राहत नहीं देंगे। सुप्रीम कोर्ट ने उमर अंसारी से कहा कि आप निचली अदालत में जाकर नियम के मुताबिक राहत मांग सकते हैं।

फतेहपुर का आदर्श रेलवे स्टेशन ग्रेड-1 में चयनित, 37.2 करोड़ से होगा तैयार

जन एक्सप्रेस। फतेहपुर

जिले की सांसद एवं केंद्रीय राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति के अथक प्रयासों से जिले को एक और उपलब्धि हासिल होने वाली है। फतेहपुर आदर्श रेलवे स्टेशन को अब केंद्र सरकार ने ग्रेड-1 के लिए चयनित किया है। इस पर केंद्रीय राज्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार जताते हुए प्रयागराज डीआरएम समेत अन्य अधिकारियों के साथ बैठक कर कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई। संभवतः छह अगस्त को जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्रयागराज रेलवे स्टेशन से सामूहिक रूप से शिलान्यास करेंगे वहीं स्थानीय स्तर पर केंद्रीय राज्यमंत्री रेलवे स्टेशन का शिलान्यास करेंगी।

यह जानकारी देते हुए भाजपा जिला मंत्री एवं सांसद कार्यालय प्रवक्ता शिव प्रताप सिंह ने बताया कि केंद्रीय राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति ने अथक प्रयास करके फतेहपुर आदर्श रेलवे स्टेशन को ग्रेड-1 में शामिल कराया है। ग्रेड-1 में शामिल होने के बाद फतेहपुर रेलवे स्टेशन की तस्वीर ही बदल जायेगी। आधुनिक सुविधाओं के साथ-साथ आधुनिक बिल्डिंग से यह रेलवे स्टेशन लैस हो जायेगा।

इसको लेकर केंद्रीय राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति ने प्रयागराज के डीआरएम कॉमर्स हिमांशु शुक्ला व कामर्शियल इंस्पेक्टर महेंद्र गुप्ता के साथ बैठक किया। बैठक में केंद्रीय राज्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि शिलान्यास कार्यक्रम आगामी छह अगस्त को कराया जायेगा। क्योंकि इसी दिन प्रयागराज रेलवे स्टेशन से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सामूहिक रूप से छह रेलवे स्टेशन का शिलान्यास करेंगे। इसी दिन उनके द्वारा भी फतेहपुर स्टेशन का शिलान्यास किया जायेगा। केंद्रीय राज्यमंत्री ने इस उपलब्धि पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत रेल विभाग के मंत्री समेत अन्य अधिकारियों का आभार जताया। केंद्रीय राज्यमंत्री ने कहा कि इस रेलवे स्टेशन का आधुनिक निर्माण हो जाने से यात्रियों को और अधिक सुविधाएं मिलेंगी। यह रेलवे स्टेशन आस-पास के जनपदों में अपनी एक अलग छाप छोड़ने का काम करेगा। उन्होने बताया कि स्टेशन में स्वचालित सीढ़ियां, लिफ्ट, फूड प्लाजा, दोनों तरफ से एंट्री, पार्किंग, ग्रीनरी, ऊंचा तिरंगा झंडा, रैंप वाले फुट ओवर ब्रिज, काफी संख्या में टिकट काउंटर के अलावा बहुत सारी सुविधाएं होंगी। साध्वी जी ने अधिकारियों से सैनिक व पूर्व सैनिकों की सुविधा के लिए एमसीओ ऑफिस के साथ अलग विश्राम गृह बनवाने का सुझाव दिया। अधिकारियों ने साध्वी जी को इस स्टेशन का लेआउट व डिजाइन दिखाया। बताया कि इस स्टेशन के स्ट्रक्चर को तोड़ा नहीं जाएगा। सिर्फ इसे मोडिफाई करके बनाया जाएगा। जिसका फोटो साध्वी को दिखाया गया। इसकी लागत 37.2 करोड़ रुपया है।

जिलाधिकारी ने किया नवनिर्मित विकास प्राधिकरण कार्यालय का फीता काटकर शुभारम्भ

जन एक्सप्रेस/चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने सोमवार को नवनिर्मित भवन चित्रकूट क्षेत्र विशेष विकास प्राधिकरण चित्रकूट कार्यालय का पूजन अर्चन कर लोकार्पण, फीता काटकर शुभारंभ किया गया।

जिलाधिकारी ने कार्यालय एवं परिसर का निरीक्षण किया तथा किए गए कार्यों की प्रशंसा करते हुए प्राधिकरण कर्मियों को नए भवन की बधाई भी दिया। इस मौके पर प्राधिकरण की सचिव अपर जिलाधिकारी न्यायिक वंदिता श्रीवास्तव, अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे सुनंदू सुधाकरण, उप जिलाधिकारी सदर राजबहादुर, वरिष्ठ कोषाधिकारी शैलेश कुमार, वित्तीय परामर्शदाता पंचानन वर्मा, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद कर्वी लालजी यादव, नायब तहसीलदार कर्वी रामानंद मिश्रा, मंगल सिंह, अवर अभियंता प्राधिकरण आनंद प्रकाश द्विवेदी, अवर अभियंता नगर पालिका परिषद कर्वी संतोष सिंह राठौर, अवर अभियंता आवास विकास परिषद अनूप कुमार विमल, वरिष्ठ सहायक शैलेंद्र सिंह, मानचित्रकार राकेश गुप्ता, कनिष्ठ सहायक आशा शुक्ला आदि मौजूद रहे।

कार और ट्रक की आमने-सामने टक्कर मे पॉच की मौत

जन एक्सप्रेस। फतेहपुर

रफ्तार के कहर ने पांच जिन्दगी छीन लिया। हुसैनगंज थाना क्षेत्र के बेरागढ़ीवा के पास कार और ट्रक की आमने-सामने जोरदार टक्कर हो गयी। कार का अगला हिस्सा ट्रक में घुस गया और हादसा इतना भयावह था कि कार के परखच्चे उड़ गये। तेज आवाज और चीख-पुकार सुन आस पास के लोग मौके पर पहुंचे। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने सभी कार सवारो को बाहर निकाला लेकिन मौके पर ही पांचों की मौत हो चुकी थी। बताया जा रहा है कि मृतक गाजीपुर थाना क्षेत्र के रहने वाले थे। जो अपने रिश्तेदार के अंतिम संस्कार में शामिल होने जा रहे थे। मृतकों में दो महिलाएं और दो पुरुष शामिल हैं। भीषण सड़क हादसे से चारो ओर हड़कंप मच गया है। गाजीपुर थाना क्षेत्र के बकरी गांव के रहने वाले लोग अपने रिश्तेदार के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए हुसेनगंज थाना क्षेत्र के बारह मील जा रहे थे। जानकारी के मुताबिक बेरागढ़ीवा पेट्रोल पंप के पास विपरीत दिशा से आ रहे ट्रक से ऑल्टो की आमने-सामने की टक्टर हो गयी। जिससे कार सवार पांच लोगों की मौके पर ही मौत हो गयी। हादसे के बाद मौके पर पहुंची पुलिस और क्षेत्रीय लोगों ने कार सवार लोगों को बाहर निकाला लेकिन उनमें से कोई भी जीवित नहीं था। पुलिस ने ट्रक को कब्जे में ले लिया है और शवो को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर आगे की कार्यवाही में जुट गयी। समाचार लिखे जाने तक मृतको की पहचान नही हो सकी। वही घटना की जानकारी होते ही मौके पर जिलाधिकारी श्रुति और पुलिस अधीक्षक उदय प्रताप सिंह भारी पुलिस बल के साथ पहुॅचे।

वाहन चोर गैंग के पांच सदस्य गिरफ्तार, सात बाईक बरामद

जन एक्सप्रेस। फतेहपुर

थाना पुलिस और एसओजी की संयुक्त टीम ने अंतर्जनपदीय वाहन चोर गिरोह के गैंगस्टर सहित पांच सदस्यों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से सात चोरी की बाइकों के साथ अवैध असलहा और कारतूस भी पुलिस ने बरामद किया है। अपर पुलिस अधीक्षक विजय शंकर मिश्र ने पुलिस लाइन सभागार में पत्रकार वार्ता के दौरान जानकारी दिया। बताया कि बीते दिनों राधानगर थाना व सदर कोतवाली से चोरी हुई बाइकों की दर्ज शिकायतों पर पुलिस वाहन चोरों की सुरागरसी में जुटी हुई थी। उन्होंने बताया कि मुखबिर की सूचना पर राधानगर थाना पुलिस व एसओजी प्रथम टीम ने संयुक्त कार्यवाही करते हुए सथरियांव पुलिया के पास से दो मोटरसाइकिलों में सवार चार लोगों को धर दबोचा। इनमें शिवम शर्मा व फारूक अली निवासी अस्ती कॉलोनी थाना सदर कोतवाली के साथ प्रशांत शुक्ला निवासी गंगानगर और विकास कुमार गुप्ता उर्फ विक्की निवासी नई बस्ती थाना राधानगर है। इनके कब्जे से एक अवैध तमंचा और कारतूस भी पुलिस को मिले हैं।

उन्होंने बताया कि अभियुक्तों की निशानदेही पर जयरामनगर नहर पुलिया के पास से चोरी की अन्य पांच बाइकों के साथ एक शातिर रामानंद लोधी निवासी कासिमपुर बीबीहाट थाना थरियांव भी पुलिस के हत्थे चढ़ गया। एएसपी ने बताया कि वाहन चोर गिरोह के रुखसार अहमद और संदीप मौके से भाग निकले। फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए टीम का गठन किया गया है। जल्द ही फरार आरोपी पुलिस की गिरफ्त में होंगे। उन्होंने बताया कि हत्थे चढ़े अभियुक्त शातिर किस्म के अपराधी हैं। अभियुक्तों पर पहले से ही जिले के राधानगर और सदर कोतवाली थाने में गैंगेस्टर, आर्म्स एक्ट, चोरी सहित अन्य विभिन्न धाराओं में आठ मुकदमे दर्ज हैं। पकड़े गए आरोपियों पर विभिन्न धाराओं मुकदमा दर्ज कर जेल भेजा गया है।

शिक्षक बच्चों के रोल मॉडल: अमृतपाल कौर

जन एक्सप्रेस। चित्रकूट

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान शिवरामपुर द्वारा संकुल शिक्षकों के क्षमता संवर्धन के लिए जनपद स्तर पर एक दिवसीय शिक्षक संकुल कार्यशाला का आयोजन भजन संध्या स्थल रैन बसेरा चित्रकूट में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर, प्राचार्य डायट डॉ आदर्श कुमार त्रिपाठी तथा जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी लव प्रकाश यादव द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया गया।

मुख्य विकास अधिकारी अमृत पाल कौर ने सभी शिक्षकों, शिक्षक संकुलों को 5 बच्चों का प्रत्येक दिन निपुण लक्ष्य ऐप के माध्यम से स्पॉट असेसमेंट कर बच्चों के स्तर के अनुरूप शिक्षण रणनीतियां अपनाते हुए शिक्षण कार्य किये जाने के लिए प्रेरित किया गया।

उन्होने बताया कि बच्चे शिक्षक के आचार-व्यवहार, पढ़ाने के तरीके, अनुशासन, कार्य-व्यवहार आदि से बहुत प्रभावित होते हैं। अतः शिक्षकों का आचरण, कार्य शैली उत्कृष्ट कोटि की होनी चाहिए। डायट प्राचार्य डॉ आदर्श कुमार त्रिपाठी ने ऋग्वेद की ऋचाओं का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए शिक्षक संकुल को प्रत्येक अध्यापकों के लिए आदर्श प्रस्तुत करने एवं बच्चों को निपुण बनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने प्रत्येक शिक्षक संकुल को राज्य परियोजना द्वारा उपलब्ध कराए गए समस्त शैक्षणिक सामग्रियों गणित किट, विज्ञान किट, निपुण तालिका, शिक्षक संदर्शिका, कहानी पोस्टर, चित्र पोस्टर इत्यादि के समुचित उपयोग के लिए संवेदनशील होकर प्रभावी प्रयोग के लिए निर्देशित किया।

कार्यशाला को प्रभावी एवं उपयोगी बनाने के लिए राज्य परियोजना कार्यालय द्वारा निर्धारित मिनट-टू-मिनट कार्यक्रम के अनुसार जनपद के समस्त एसआरजी, जिला समन्वयक (प्रशिक्षण), जिला समन्वयक (सामुदायिक सहभागिता), जिला समन्वयक (एमआईएस) द्वारा प्रेरक वीडियो का प्रदर्शन, जनपद को निपुण बनाने के लिए एकेडमिक स्ट्रैटजी, शिक्षक संकुल बैठकों को प्रभावशाली बनाने के तरीके, 10 प्वांइट टूल किट, उत्कृष्ट शिक्षक संकुलों द्वारा सिचुएशन एनालिसिस एक्टिविटी, दीक्षा ऐप का महत्व, यू- डाइस, सामुदायिक सहभागिता, प्रेरणादायी व प्रभावी शिक्षण संस्कृति, शिक्षा मंत्री का वीडियो संदेश आदि विषयों पर प्रस्तुतीकरण किया गया। सभी प्रतिभागियों को अपने विद्यालय, ब्लॉक, जनपद एवं प्रदेश को निपुण बनाने सम्बन्धी शपथ दिलायी गयी। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक साकेत बिहारी शुक्ला ने किया गया।

जिलाधिकारी, एसपी ने जिला कारागार का किया निरीक्षण

जन एक्सप्रेस। फतेहपुर

जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक ने सयुक्त रुप से जिला करागार का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जहॉ बन्दियो के भोजन आदि की जानकारी लिया गया। वही बन्दियो के बैग आदि का भी निरीक्षण कराया गया। जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने बन्दियो की परेशानियो के लिए सीधा संवाद किया गया।

जिला कारागार का जिलाधिकारी श्रुति, पुलिस अधीक्षक उदय शंकर सिंह ने संयुक्त रूप से निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पुरुष, महिला बैरिक, पाकशाला आदि का स्थलीय निरीक्षण किया। वही पाकशाला में मीनू के आधार पर बनाई जा रही दाल, सब्जी की गुणवत्ता को देखा और बन्दियो से भेजन आदि के बारे मे जानकारी लिया। वही महिला व पुरुष बैरिक में बंदियों के बैग आदि की तलाशी लिया गया। जिसमे कोई अवंक्षनीय वस्तु नहीं पाई गयी। निरुद्ध बंदियों से उनकी समस्याओं को पूंछा गया।

हाई स्कूल के अंक पत्र के डाटा के आधार पर कराएं आधार कार्ड अपडेट

जन एक्सप्रेस। चित्रकूट

जिला समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेन्द्र सिंह भदौरिया ने बताया कि उत्तर प्रदेश शासन द्वारा वित्तीय वर्ष शैक्षिक सत्र 2020-21 से छात्रवृत्ति योजना में छात्रों के आधार नम्बर अनिवार्य किये गये हैं। आनलाइन आवेदन पत्र में छात्रों द्वारा भरे गये आधार नम्बर का आथेन्टिकेशन होने के पश्चात ही आवेदन पत्र अग्रसारित होगा। इस सम्बन्ध में छात्रों के हाई स्कूल अंकपत्र में दिये गये नाम, पिता का नाम एवं जन्म तिथि के आधार पर आधार कार्ड बनवाया जाना आवश्यक है। यदि किसी छात्र का आधार कार्ड बन गया है और उसमें त्रुटि है तो उसे हाई स्कूल अंक पत्र में दिये गये डाटा के आधार पर आधार कार्ड को अपडेट किया जाना है। यदि किसी के माता-पिता की पुत्री का विवाह हो गया है तो आधार कार्ड में पति का नाम एवं ससुराल के पते को अपडेट कराया जाना है। यदि आधार कार्ड में छात्र का नाम, जन्म तिथि अथवा आधार नम्बर मिसमैच होगा तो आधार नम्बर आथेन्टिकेट न होने के कारण आवेदन पत्र अग्रसारित नहीं होगा। चालू वित्तीय वर्ष 2023-24 में छात्रवृत्ति के पोर्टल को मिनिस्ट्री आफ इलेक्ट्रानिक्स एण्ड इन्फारमेशन टेक्नालाजी भारत सरकार नई दिल्ली के डिजिटल प्लेटफार्म डिजीलॉकर को एपीआई से लिंक किया जा रहा है। सरकारी दस्तावेज प्रमाणपत्र का निर्गत करने वाले जो विभाग, संस्थाएं डिजीलॉकर पर रजिस्टर्ड हैं, के द्वारा निर्गत समस्त सरकारी दस्तावेज, प्रमाणपत्र विश्वविद्यालयों के परीक्षाफल, समस्त बोर्ड के प्रमाणपत्रों आदि को एपीआई के माध्यम से आनलाइन सत्यापित कराया जायेगा। इसके अतिरिक्त छात्रवृत्ति के लिए छात्र के स्तर से रजिस्ट्रेशन के समय उसका व्यक्तिगत विवरण अटैच किया जायेगा। इस सम्बन्ध में किसी भी छात्र का व्यक्तिगत विवरण नाम, पिता का नाम, जन्मतिथि, जेंडर व फोटो आधार को आटोकेच होगा। इसलिए इस वर्ष समस्त छात्रों को आधार कार्ड में उसके समस्त व्यक्तिगत विवरण में यदि कोई त्रुटि है या आधार कार्ड पर उसका फोटो पुराना लगा हुआ है, तो उसे अपडेट कराते हुए नये फोटोग्राफ के साथ आधार कार्ड को जारी कराया जाना अनिवार्य है।

सड़क दुर्घटना के क्लेम के त्वरित निस्तारण के लिए समस्त थानों के 13 उपनिरीक्षकों को दिया गया प्रशिक्षण

जन एक्सप्रेस/चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी के पर्यवेक्षण में क्षेत्राधिकारी यातायात शीतला प्रसाद पाण्डेय ने प्रभारी यातायात मनोज कुमार के साथ पुलिस कार्यालय स्थित राघव प्रेक्षागार में सड़क दुर्घटना के क्लेम के त्वरित निस्तारण के लिए समस्त थानों के 13 उप निरीक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया। यातायात निदेशालय लखनऊ के निर्देशों के क्रम में प्रत्येक थाना स्तर पर एक स्पेशल यूनिट मोटर एक्सीडेन्ट क्लेम एक्सीडेन्ट केसेज के त्वरित निस्तारण के लिए गठित किये जाने एवं थाना स्तर से चिन्हित उप निरीक्षकों को भौतिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जिसमें सड़क दुर्घटनाओं की अन्वेषण प्रक्रिया में प्रशिक्षण के दौरान थाना स्तर पर चिन्हित उप निरीक्षकों को पॉवर प्वाइन्ट प्रजेन्टेशन के माध्यम से निर्गत मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) के अनुसार स्पेशल यूनिट मोटर एक्सीडेन्ट क्लेम एक्सीडेन्ट केसेज के त्वरित निस्तारण की कार्यवाही के लिए प्रशिक्षित किया गया। एसओपी में दिये गये 19 बिन्दुओं के अनुसार प्रारूप भरने एवं इससे सम्बन्धित होने वाली समस्त कार्यवाही को सुनिश्चित कराये जाने के सम्बन्ध में प्रशिक्षित किया गया।

संयुक्त टीम ने चलाया संघन जांच अभियान

जन एक्सप्रेस/चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी एवं पुलिस उपाधीक्षक एलआईयू अनुज मिश्र के पर्यवेक्षण में डॉग स्क्वॉयड एवं एलआईयू चित्रकूट की संयुक्त टीम द्वारा श्रावण मास के चतुर्थ सोमवार के अवसर पर एवं एक अगस्त को पड़ने वाली पूर्णिमा पर्व के दृष्टिगत रामघाट, रोडवेज बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन आदि स्थानों पर सघन चेकिंग की गई।

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा चलाये जा रहे सड़क सुरक्षा पखवाडे का हुआ समापन

जन एक्सप्रेस/चित्रकूट। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के निर्गत निर्देशों के अनुपालन में निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पुलिस अधीक्षक वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी के पर्यवेक्षण एवं क्षेत्राधिकारी यातायात शीतला प्रसाद पांडेय के नेतृत्व में प्रभारी यातायात मनोज कुमार द्वारा सड़क सुरक्षा के दौरान कार्यक्रमों का आयोजन कराया गया। इसी क्रम में सोमवार को सड़क सुरक्षा पखवाडे का नवीन रोडवेज बस स्टैंड बेड़ी पुलिया में जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव, सांसद प्रतिनिधि शक्ति सिंह तोमर, डिस्ट्रिक्ट कोऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष पंकज अग्रवाल, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी प्रवर्तन विवेक शुक्ला, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी प्रशासन प्रदीप कुमार, पीटीओ संतोष तिवारी द्वारा सड़क सुरक्षा पखवाडा का समापन कार्यक्रम कराया गया। समापन कार्यक्रम के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले ट्रैफिक पुलिस के तीन कर्मियों मुख्य आरक्षी मुबीन खान, देवेन्द्र सिंह व आरक्षी नीतेश कुमार यादव को जिला पंचायत अध्यक्ष ने पुरस्कृत किया गया।

पॉच लाख से बना सुलभ शौचालय शो पीस, ताला बन्द

जन एक्सप्रेस। फतेहपुर

नगर पंचायत बहुआ के बगल में स्थित पार्क में सैर सपाटा करने वाले लोगों की सुविधा के लिए दो साल पहले बनाये गये सुलभ शौचालय को चालू कराना तो दूर सुलभ शौचालय का ताला खोलना नगर पंचायत बहुआ भूल गया। जिससे सुबह पार्क में सैर सपाटे को आने वाले लोगो को खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

नगर पंचायत बहुआ कार्यालय के बगल में स्थित पार्क में सुबह शाम सैर सपाटे के लिए आने वालों लोगो की खासी भीड़ जुटती है। जिसमें सुबह-सुबह पुरुष, महिलाएं और बच्चे जाकर टहलते हुए दौड़ लगाते हैं। वहीं पार्क में आने वाले लोगों की सुविधा के लिए नगर पंचायत बहुआ ने करीब 5 लाख रूपये की लागत से सुलभ शौचालय का निर्माण ठेकेदार संदीप श्रीवास्तव द्वारा करवाया था। सुलभ शौचालय तो बनकर तैयार हो गया लेकिन नगर पंचायत बहुआ के जिम्मेदारों द्वारा दरवाजे पर ताले जड़ दिये गये। जिसकी वजह से शौचालय दो साल से बंद पड़ा हुआ है। पानी और बिजली की कोई व्यवस्था नहीं किया गया है।

वहीं शौचालय के दरवाजों पर नगर पंचायत बहुआ के ताले जड़े हुए हैं। जिससे पार्क में सुबह शाम आने वाले लोगो को काफी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। इस विषय पर जब नगर पंचायत के ईओ आशीष चक्रवर्ती से बात करने का प्रयास किया गया तो उन्होने फोन नहीं रिसीव किया।

हत्यारोपी भाई समेत दो को आजीवन कारावास की सजा

जन एक्सप्रेस। चित्रकूट

मामूली विवाद में साथी के साथ मिलकर सगे भाई का बेरहमी से कत्ल कर मौत के घाट उतारने के बाद गलत तरीके से हत्या की रिपोर्ट दर्ज कराने वाले को जिला जज विष्णु कुमार शर्मा ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही दोनों आरोपियों को 10-10 हजार रूपए के अर्थदण्ड से भी दण्डित किया है।

जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी श्यामसुन्दर मिश्रा ने बताया कि कर्वी कोतवाली क्षेत्र के अन्तर्गत विनायकपुर गांव के निवासी पुष्पेन्द्र सिंह पुत्र राकेश सिंह ने बीती 6 जून 2020 को रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उसने बताया था कि उसका बडा भाई हेमराज सिंह गांव के ही रामचन्द्र पुत्र बसंतलाल के साथ 5 जून 2020 की शाम सात बजे के बाद घर से कहीं गया था। दूसरे दिन 6 जून को सबेरे लगभग 9 बजे उसके भाई हेमराज का शव गांव के खेत में पडा हुआ मिला। मृतके सर पर काफी चोटें थीं व गहरे घाव थे। पुष्पेन्द्र सिंह ने अपने भाई की हत्या के लिए रामचन्द्र पर संदेह जाहिर करते हुए हत्या की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। विवेचना के दौरान इस मामले में उजागर हुआ कि पुष्पेन्द्र ने ही राचन्द्र के साथ मिलकर अपने बडे भाई हेमराज की हत्या की है और अपराध छिपाने के उद्देश्य से रामचन्द्र पर संदेह जाहिर करते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुष्पेन्द्र के पास मृतक हेमराज का मोबाइल और लोवर आदि सामग्री भी बरामद हुई थी। जिसके बाद पुलिस ने इस मामले में पुष्पेन्द्र और रामचन्द्र को गिरफ्तार करते हुए न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था। बचाव और अभियोजन पक्ष के अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने के बाद जिला जज विष्णु कुमार शर्मा ने इस मामले में निर्णय सुनाया।

सेवानिवृत्त निरीक्षक व उपनिरीक्षकों को दी गयी भावभीनी विदायी

जन एक्सप्रेस। चित्रकूट

पुलिस कार्यालय स्थित राघव प्रेक्षागार में अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी की अध्यक्षता में पुलिस विभाग में अपनी सेवा पूर्ण करने वाले अधिकारी, कर्मचारियों की विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान अपर पुलिस अधीक्षक ने सेवानिवृत हो रहे निरीक्षक रामजीत यादव, उप निरीक्षक मलखान सिंह एवं उप निरीक्षक बलवान सिंह को माला पहनाकर, प्रशस्ति-पत्र एवं उपहार प्रदान कर भावभीनी विदाई दी गयी। अपर पुलिस अधीक्षक ने सेवानिवृत हो रहे अधिकारी, कर्मचारियों से कहा कि वह घर जाकर अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें एवं निरन्तर व्यायाम करते रहें। इस मौके पर क्षेत्राधिकारी प्रज्ञान अनुज कुमार मिश्र, क्षेत्राधिकारी यातायात लाइन्स शीतला प्रसाद पाण्डेय, प्रतिसार निरीक्षक शिव नारायण, उप निरीक्षक एपी रामदीन, प्रधान लिपिक अनुज पाण्डेय आदि मौजूद रहे।

G20 उत्तर रेलवे 75 आज़ादी का अमृत महोत्सव
ई–ऑक्शन सूचना
वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबन्धक, उत्तर रेलवे, लखनऊ के द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु ई–ऑक्शन से सम्बन्धित सूचना।

एडमिन यूनिट / जोन	लखनऊ–उ0रे0–मण्डल–वाणिज्य / उ0रे0
नीलामी सूची सं0 / लॉट सं0	Pnu-LKO-LKO-WRL-33-22-2 (Pay and Use-Lounges/Waiting/ Retiring/Cloak Rooms)
नीलामी सूची प्रकाशन तिथि	31-07-2023
नीलामी प्रारम्भ तिथि (समस्त लॉट)	17-08-2023 समय 12:00 बजे
नीलामी बंद करने की तिथि एवं समय	17-08-2023 समय 12:30 बजे
नीलामी का प्रकार	Close Ended
वेबसाइट विवरण जहां पंजीकृत बोलीदाताओं द्वारा नीलामी का पूरा विवरण देखा जा सकता है।	E-Auction Module of www.ireps.gov.in

2364/2023
ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

कला संकाय के विद्यार्थियों के लिए हुआ कैरियर गाइडेंस वर्कशॉप का आयोजन

जन एक्सप्रेस। चित्रकूट

गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में सोमवार को आइक्यूएसी तथा हिंदी विभाग के तत्वावधान में स्नातक तथा परास्नातक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों के लिए कैरियर गाइडेंस वर्कशॉप का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य तथा संरक्षक प्रो विनय कुमार चौधरी द्वारा किया गया। प्राचार्य प्रो विनय कुमार चौधरी ने छात्र-छात्राओं से विद्यार्थी जीवन में अपने लिए एक लक्ष्य निर्धारित करने तथा उस लक्ष्य की दिशा में बढ़ने के लिए सतत प्रयत्नशील रहने की बात कही। साथ ही कार्यशाला के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी लक्ष्य प्राप्ति में आने वाली कठिनाइयों तथा जिज्ञासाओं के निराकरण के लिए प्रश्न पूछने के लिए भी प्रेरित किया। अर्थशास्त्र विभाग के असिस्टेंट प्रो डॉ गजेंद्र सिंह ने विद्यार्थियों को सिविल सेवा परीक्षाओं की तैयारी विषयक विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया और सिविल सेवा परीक्षाओं के सम्बन्ध में छात्र-छात्राओं की जिज्ञासा का निराकरण भी किया। हिंदी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ गौरव पांडेय ने प्राथमिक विद्यालय से लेकर महाविद्यालय, विश्वविद्यालय स्तर तक नियुक्ति संबंधी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के स्तर तथा तैयारी आदि के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम में महाविद्यालय के अनेक छात्र-छात्राओं सहित समस्त प्राध्यापक डॉ0 राजेश कुमार पाल, डॉ0 राम नरेश यादव, डॉ0 सीमा कुमारी, डॉ0 मुकेश कुमार, डॉ0 अतुल कुमार कुशवाहा, डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह, डॉ0 हेमन्त कुमार बघेल, डॉ0 वंशगोपाल, डॉ0 आशुतोष कुमार शुक्ला, डॉ0 रचित जायसवाल, डॉ0 सिद्धान्त चतुर्वेदी, बलवन्त सिंह राजोदिया उपस्थित रहे।

janexpressnews janexpresslive janexpresslive

कानपुर नगर एक्सप्रेस

www.janexpresslive.com/epaper | हिंदी दैनिक, जन एक्सप्रेस । | लखनऊ । मंगलवार । 01 अगस्त 2023 | 03

मौसम पूर्वानुमान

पूर्वानुमान

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार,अगले पांच दिनों में हल्के बादल छाए रहने के कारण दिनांक 31 जुलाई से 03 अगस्त 2023 के मध्य मेघ गर्जना एवं बज्रपात के साथ हल्की वर्षा होने की संभावना है।

अधिकतम (डिग्री0से0) : 35.2 (+0.8)
न्यूनतम तापमान (डिग्री0से0) : 26.6 (+1.2)
सापेक्षिक आर्द्रता अधिकतम : 86 प्रतिशत
सापेक्षिक आर्द्रता न्यूनतम : 57 प्रतिशत
हवा की औसत गति : 7.9 कि0मी0/घंटा
हवा की दिशा : उत्तर -पश्चिम
वर्षा (मि0मी0) : 1.2

- कृषि मौसम वैज्ञानिक

दसवीं के छात्र ने सहपाठी को चाकुओं के वार से उतारा मौत के घाट

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

शहर में बीते दिन थाना बिधनू क्षेत्र स्थित न्यू आजाद नगर इलाके में उस समय हड़कंप मच गया जब प्रज्ञा विद्या मंदिर इंटर कॉलेज के अंदर एक दसवीं के छात्र ने अपने सहपाठी को चाकुओं से गोद डाला। घायल छात्र को प्राथमिक उपचार के लिए जैसे ही प्रबंध तंत्र के लोग अस्पताल ले पहुंचे वहां पर तैनात डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। छात्र के परिजनों को जैसे ही घटना की जानकारी हुई उनके घर में कोहराम मच गया। बिधनू पुलिस फॉरेंसिक टीम के साथ पुलिस के आला अधिकारी भी घटना स्थल पर पहुंचे और साक्ष्य जुटाने के साथ-साथ आरोपी छात्र से भी पूछताछ करनी आरंभ कर दी। मिली जानकारी के अनुसार गंगापुर कॉलोनी यशोदा नगर निवासी जितेंद्र तिवारी प्राइवेट कर्मचारी हैं। उनका बेटा नीलेंद्र तिवारी जिसकी उम्र लगभग 15 वर्ष थी वह थाना बिधनू के न्यू आजाद नगर स्थित प्रयाग विद्या मंदिर इंटर कॉलेज में दसवीं का छात्र था। सोमवार को उसी की क्लास में पढ़ने वाले छात्र ने स्कूल में उस पर चाकू से ताबड़तोड़ वार किया जिससे वह वहीं बेसुध होकर गिर पड़ा आनन-फानन में विद्यालय के प्रबंधन तंत्र के द्वारा उसे प्राथमिक उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। बेटे की मौत से जहां नीलेंद्र के घर में कोहराम मच गया तो वहीं दूसरी ओर पुलिस प्रशासन के पैरों तले भी जमीन खिसक गई। पुलिस ने फोरेंसिक टीम के साथ पहुंचकर घटनास्थल पर जांच करने के साथ ही आरोपी छात्र से भी पूछताछ की है। पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों का कहना था कि वह सभी बिंदुओं पर जांच कर रहे हैं शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

बिना रजिस्ट्रेशन चल रहा शिव हॉस्पिटल एवं सर्जिकल सेंटर

झोलाछाप कर रहे सर्जरी, मरीजों की जिंदगी खतरे में

जन एक्सप्रेस। सनी राव मोघे

कानपुर नगर। शहर में मानक विहीन अस्पतालों की बाढ़ सी आ गई है। शिवराजपुर खेरेश्वर मार्ग पर अवैध रूप से संचालित शिव हॉस्पिटल एवं सर्जिकल सेंटर का ना तो अभी रजिस्ट्रेशन कंप्लीट हुआ है। और ना ही हॉस्पिटल के मानक ही पूरे हैं। मजे की बात तो यह है कि हॉस्पिटल संचालकों के पास डॉक्टरेट की डिग्री भी नहीं है।

आपको बताते चलें शिव हॉस्पिटल एवं सर्जिकल सेंटर खेरेश्वर मार्ग पर स्थित है। इस हॉस्पिटल की कमान झोलाछाप डॉक्टरों के हाथों में है। यह डॉक्टर सरकारी नियमों को ताक पर रखकर हॉस्पिटल का संचालन कर रहे हैं। हॉस्पिटल का नर्सिंग स्टाफ भी अनट्रेंड है इतना ही नहीं किसी भी नर्सिंग स्टाफ के पास डिग्री नहीं है। यहां पर अक्सर मरीजों की जान के साथ खिलवाड़ किया जाता है। इस अस्पताल के संचालक रणवीर सिंह व के के उर्फ राजू बाबा जो अपने आप को सर्जन बताते हैं। इन दोनों के पास किसी भी प्रकार की कोई डिग्री नहीं है। केके उर्फ राजू बाबा पहले कई हॉस्पिटल में डॉक्टर के सहायक का काम कर चुके हैं अब खुद सर्जरी कर रहे हैं। इस अस्पताल में इलाज कराने आने वाले मरीजों की जिंदगी के साथ खिलवाड़ किया जाता है। सूत्रों ने बताया कि कुछ दिन पूर्व एक महिला डिलीवरी कराने आई थी। और ऑपरेशन के दौरान डिलीवरी कराने आई महिला की ऑपरेशन के दौरान इस्टेक्टमी ही बाहर निकाल दी। अभी तक इस अस्पताल पर जिले के स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों की नजर नहीं गई है। जिसका फायदा उठाते हुए हॉस्पिटल संचालक धड़ल्ले से बिना किसी लाइसेंस बन डिग्री के मरीजों का इलाज कर रहे हैं।

राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के प्रतिनिधि मंडल ने मंडलायुक्त से मिलकर बताई अपनी समस्या

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद कानपुर के प्रतिनिधि मंडल ने बीते दिन सोमवार को कानपुर के मंडलायुक्त अमित गुप्ता से शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर परिषद द्वारा मंडलायुक्त से कर्मचारियों व शिक्षकों की समस्याओ में आ रही कठिनाइयों को दूर कर समाधान कराए जाने की बात कही गयी। जिलाध्यक्ष प्रभात मिश्रा ने बताया कि मंडलायुक्त ने कर्मचारियों व शिक्षकों की समस्याएं संज्ञान में आने के बाद उचित समाधान कराए जाने के लिए आश्वस्त किया।

इस अवसर पर मंडलीय अध्यक्ष देवेश द्विवेदी मंडलीय महामंत्री संतोष तिवारी, जिला अध्यक्ष प्रभात मिश्रा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष देवर्षि दुबे संप्रेक्षक मेवालाल, अजय द्विवेदी, रति कान्त पाल आशीष यादव एवं अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

बिठूर पुलिस के हत्थे चढ़े चार शातिर चोर, चोरी किया हुआ माल बरामद

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

बिठूर थाना क्षेत्र के अंतर्गत मकसूदाबाद में दो चोरी की घटना का खुलासा करते हुए बिठूर पुलिस ने चार शातिर चोरों को गिरफ्तार किया। वहीं पुलिस ने शातिर चोरों के पास से चोरी किया हुआ माल भी बरामद कर जेल भेजने की कार्रवाई की है।

बिठूर थाना प्रभारी अतुल कुमार सिंह ने बताया कि बीते शनिवार की देर रात्रि चंदन विश्वकर्मा के जनरेटर में लगा अल्टीनेटर और जमुना प्रसाद रिंकू और मोनू पाल के घर में चोरी हो गई थी इस दौरान पीड़ितों की तहरीर के आधार पर अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर घटना का खुलासा करने के लिए टीम गठित की गई थी। मुखबिर द्वारा सूचना मिली की मकसूदाबाद में जो जनरेटर के अल्टीनेटर की चोरी हुई थी वह चोरी का माल तीन शातिर चोर ईको वैन में लेकर कल्याणपुर पुल की तरफ से कुरसौली नहर पटरी के तरफ आ रहे हैं। वह माल कहीं छुपाने जा रहे हैं इस दौरान पुलिस ने वाहन चेकिंग अभियान के दौरान तीन शातिर चोरों को गिरफ्तार किया पूछताछ के दौरान शातिर चोरों ने अपना नाम राहुल कुमार निवासी कानपुर देहात, अजय कुमार निवासी जिला हमीरपुर, प्रांशु सोनकर निवासी पेम मंधना थाना बिठूर बताया गहनता से पूछताछ करने पर तीनों ने बताया कि मसूदाबाद से अल्टीनेटर चुराया था और उसे छुपा कर झाड़ियों में रख दिया था जिसे बेचने के लिए घर जा रहे थे बीते रविवार को मुखबिर की सूचना पर तीन घरों में चोरी करने वाले एक शातिर चोर को बिठूर पुलिस ने किया गिरफ्तार पूछताछ के दौरान शातिर चोर ने अपना नाम कुंवरपाल निवासी ग्राम फत्तेपुर थाना ककवन बताया तलाशी के दौरान शातिर चोर के पास से 1लाख 62 हजार रुपए व एक मोबाइल आभूषण बरामद कर जेल भेजने की विधिक कार्रवाई की गई।

प्रेस वार्ता में एडीसीपी वेस्ट लखन यादव ने बताया

एडीसीपी वेस्ट लखन यादव ने बताया कि बीते शनिवार की देर रात्रि बिठूर थाना क्षेत्र के अंतर्गत जनरेटर में लगा अल्टीनेटर और 3 घरों में अज्ञात चोरों द्वारा चोरी की गई थी पीड़ितों की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर चोरी की घटना का खुलासा करने के लिए टीम गठित की गई थी बीते रविवार को बिठूर पुलिस ने चार शातिर चोरों को गिरफ्तार किया पुलिस ने चार शातिर चोरों के पास से अल्टीनेटर, 1 लाख 62 हजार रुपए एक मोबाइल, 9 जोड़ी पायल, 12 जोड़ी बिछिया, दो अंगूठी, तीन मंगलसूत्र आदि अन्य सामान बरामद कर जेल भेजने की विधिक कार्रवाई की जा रही है।

सीएसए के प्रोफेसर में किसानों को खरीफ के मौसम में तिलहनी फसलों के बारे में दी जानकारी

मूंगफली के सेवन से त्वचा रहती है जवां

डॉ. सिंह ने बताया मूंगफली के दानों में प्रोटीन 25 से 30 फीसदी जो मांस की तुलना में 1.3 गुना, अंडो से 2.5 गुना एवं फलो से 8 गुना अधिक होता है। वही कार्बोहाइड्रेट 10 से 12 फीसदी तथा वसा 45 से 55 फीसदी पाई जाती है। उन्होंने बताया कि मूंगफली में प्रोटीन, लाभदायक वसा,फाइबर, खनिज, विटामिंस और एंटीऑक्सीडेंट भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इसलिए इसके सेवन से त्वचा उम्र भर जवां दिखाई देती है।

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के प्रोफेसर डॉ. महक सिंह ने बीते दिन सोमवार को किसानों को खरीफ के मौसम में तिलहनी फसलों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि खरीफ के मौसम में तिलहनी फसलों के अंतर्गत मूंगफली की खेती का महत्वपूर्ण स्थान है। देश मे मूंगफली के उत्पादन की विश्व के उत्पादन में 34 फीसदी की भागीदारी है। उन्होंने बताया की मूंगफली का देश में क्षेत्रफल 5.02 मिलियन हेक्टेयर, उत्पादन 8.11 मिलियन टन तथा उत्पादकता 1616 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है।

जबकि उत्तर प्रदेश में मूंगफली का क्षेत्रफल 1.01 लाख हेक्टेयर, उत्पादन एक लाख मीट्रिक टन तथा उत्पादकता 984 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। उन्होंने किसानो से कहा कि फसल 35 से 40 दिन की हो गई हो तथा खूंटियां बननी शुरू हो गई हो तो निराई गुड़ाई नही करनी चाहिए। उन्होंने खुटिया निकलने पर जिप्सम का प्रयोग करने की बात कही। जिससे तेल की मात्रा में बढ़ोत्तरी होती है।

उन्होंने मूंगफली की फसल में टिक्का बीमारी होने पर फफूंदी नाशक खड़ी फसल में मैनकोज़ेब 50 फीसदी व डब्ल्यूपी 225 ग्राम प्रति हेक्टेयर 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करने की सलाह दी।

कृषि छात्र एकजुट होकर अपनी एकता का करेंगे प्रदर्शन

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

बीते दिन सीएसए कैम्पस में आयोजित कार्यक्रम में ऑल इंडिया एग्रीकल्चर स्टूडेंट यूनियन के 'चलो लखनऊ' कार्यक्रम का पोस्टर जारी किया गया। प्राप्त जानकारी अनुसार 10 अगस्त 2023 को लखनऊ में ऑल एग्रीकल्चर स्टूडेंट यूनियन का सदस्यता ग्रहण अभियान एवं कृषि छात्रों की परिचर्चा पर कृषि महाकुंभ आयोजित किया जाना प्रस्तावित है जिसमे प्रदेश भर के कृषि छात्र एकजुट होकर अपनी एकता का प्रदर्शन करेंगे। उसी क्रम में छात्र नेता सौरभ सौजन्य के नेतृत्व में सीएसए के छात्रों ने रिसर्च स्कलर्स की अगुवाई में लखनऊ चलो कार्यक्रम का पोस्टर जारी कर लखनऊ चलने के लिए हुंकार भरी.सौरभ ने कहा कि कृषि छात्रों की समस्याओं को हमेशा से नज़रंदाज़ किया जाता रहा है पर अब ऑल एग्रीकल्चर स्टूडेंट यूनियन के माध्यम से हम अपनी मांगों को मजबूती से रखेंगें। इस दौरान कृषि छात्रों ने कृषि प्राविधिक सहायक भर्ती में विलंब पर आंदोलन करने की भी बात कही। कार्यक्रम में मुख्य रूप से संजय, धीरेंद्र कुमार, वीरेंद्र यादव, जयकार, रजत यादव,अमित शर्मा, प्रेम सिंह, मनीष, आकाश कुशवाहा,शिवम,हिमांशु इत्यादि छात्र उपस्थित रहे।

सीएसजेएमयू की प्लेसमेंट सेल द्वारा रोजगार मेले का आयोजन

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट सेल द्वारा बीते दिन सोमवार को रोजगार मेले का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन प्रति कुलपति प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी व डीन प्रशासन प्रो. सुधांशू पाण्ड्या द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रति कुलपति प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी ने छात्र-छात्राओं से कहा कि आप सभी लोग आत्मविश्वास, दृढ़ता एवं पूरे मनोबल के साथ बिना किसी हिचक के रोजगार मेले में प्रतिभाग कर साक्षात्कार दें और किसी भी कम्पनी में अपनी जॉब सुनिश्चित करें। डीन एकेडमिक डॉ.सुधांशू पाण्ड्या ने कहा कि विश्वविद्यालय सभी छात्र-छात्राओं के कुशल शिक्षण व रोजगार के लिए अग्रिम भूमिका निभाता रहेगा। जो छात्र-छात्राएं रोजगार मेले में हिस्सा ले रहे है वो आगे बढ़कर देश के सर्वांगीण विकास में भागीदार बने।

रोजगार मेले के संयोजक डॉ.प्रभात द्विवेदी ने बताया कि रोजगार मेले में विश्वविद्यालय परिसर एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों के 1000 से अधिक छात्र-छात्राओं ने ऑनलाइन तथा ऑन स्पॉट रजिस्ट्रेशन कराया था। इस रोजगार मेले में 12 कम्पनियों के प्रतिनिधियों द्वारा सीनियर सेकेण्ड्री स्नातक, परास्नातक, सभी अन्तिम वर्ष के व पूर्व छात्र-छात्राओं के बैक ऑफिस, कम्प्यूटर ऑपरेटर, अकाउन्ट्स, ग्राफिक डिजाइनर, बिजनेस डेवलप्मेन्ट इत्यादि पदो के लिए साक्षात्कार लिया गया। जिसमे कुल 305 प्रतिभागियों को 1.8 लाख से 4 लाख तक के सालाना पैकज पर चयन किया गया।

रोजगार मेले में अभिषेक सिंह, अमित सोनकर, मनीष द्विवेदी, विशाल बाजपेई, सुनील कुमार, सौरभ गुप्ता, सुनील दत्त तिवारी, मानवेन्द्र प्रताप सिंह आदि मौजूद रहे।

रामपुर गांव में नालियां चोक, सड़क के ऊपर से बह रहा पानी

ग्राम विकास अधिकारी ने मामले से झाड़ा पल्ला, बोले ये जिम्मेदारी ग्राम प्रधान की

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

देश की डबल इंजन सरकार के मंसूबो पर ग्राम प्रधान समेत अन्य अधिरकारी पानी फेर रहे हैं।गांव रामपुर में गलियों की हालत हद से ज्यादा बदतर बनी हुई है गाँव के ग्रामीणों का कहना कि अगर हल्की फुल्की बारिश हो जाती तो गाँव की गलियों में पानी व कीचड़ लबालब भर जाता है जिसके विषय मे हम लोगो के द्वारा ग्राम प्रधान डॉक्टर के.के. साहू को कई बार अवगत कराया लेकिन उन्होंने हमारी बात को हवा में उड़ा दिया ।जिसके कारण हम सभी ग्रामीण मुन्नु यादव, राजकुमार यादव, छुटकऊ यादव, उदय भानसिह, नवनीत, रमेश यादव व संजय यादव पिछले कई महीनों से दिक्कत झेल रहे है ग्रामीणों का कहना कि सरकार ने ग्राम प्रधान व सचिव को खुले निर्देश दिए थे कि बरसात के पहले सभी गाँव की गलियां व नालियों की सफाई हो जानी चाहिए और कही पर जल भराव की समस्या न हो ।अगर कोई अधिकारी व कर्मचारी इस मामले पर संवेदनहीनता करता पाया गया तो उसके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही होगी ।लेकिन सरकार के सारे आदेश हवा हवाई नजर आ रहे है इस मामले पर जब भीतरगांव ग्राम विकाश अधिकारी चंद्र मणि से बात की गई तो तो उनका कहना है कि ये जिम्मेदारी ग्राम प्रधान की होती है क्योंकि उनके पास गाँव के विकाश के लिए पैसा आता उनसे बात कर लिए जब इस मामले पर ग्राम प्रधान डॉक्टर के के साहू से बात करने की कोशिश की गई तो उनका फोन रिसीव न हुआ।

फास्ट फॉरवर्ड

बाकरगंज में पंडोखर धाम दरबार 3 अगस्त से

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। सार्वजनिक शिव दुर्गा मंदिर समिति द्वारा शिव महापुराण कथा एवं त्रिकालदर्शी पंडोखर सरकार धाम द्वारा दिव्य दरबार का आयोजन किया जा रहा है। संपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन 1 अगस्त से 9 अगस्त तक किया जाएगा यह जानकारी देते हुए समिति के अध्यक्ष सत्यप्रकाश गुप्ता प्रमोद अग्रहरि बॉर्डर ने बताया कि आयोजन की शुरुआत कलश यात्रा से की जाएगी जो मंदिर प्रांगण से उठकर बाकरगंज बाजार किदवई नगर चौराहे होकर नए सेंट्रल पार्क में समाप्त होगी। कथा स्थल पर श्री पंडोखर सरकार द्वारा जन समुदाय का दर्द बांटने के लिए 3 से 5 अगस्त तक दरबार भी लगाया जाएगा। आयोजन का समापन 9 अगस्त को 40 दुकान बाबू पुरवा में आयोजित भंडारे के साथ किया जाएगा। इस आयोजन के समापन में प्रेम चंद्र गुप्ता, रमाकांत, सत्य शरण, विजय गुप्ता, स्वामी दीन, वेद प्रकाश कटियार, व राजकुमार भोला की मुख्य भूमिका होगी।

मारवाड़ी इंटर कालेज में मेधावियों को किया गया सम्मानित

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। नयागंज स्थित मारवाड़ी विद्यालय इंटर कालेज में मुंशी प्रेमचन्द की पुण्यतिथि पर सोमवार को प्रधानाचार्य, मेधावी एवं पूर्व छात्रों को सम्मानित किया गया। जहां मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे गोल्डी समूह के निदेशक व मारवाडी सोसायटी अध्यक्ष सोमप्रकाश गोयनका ने कार्यक्रम में पहुंचकर शोभा बढ़ाते हुए दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की । यही नही सोमप्रकाश गोयनका व उनके पुत्र आकाश गोयनका ने बच्चो को संबोधित करते हुए बताया कि मारवाड़ी कालेज में कार्यक्रम के दौरान माइक से स्पीकर में बोलने पर आवाजे गूंजती है । दर्शाते हुए बताया कि आवाज इसलिए गूंजती है क्योंकि 1913 में इस संस्थान की शुरूआत हुई थी । जो कि आज बीते 110 वर्षो बाद संस्थान इतना मजबूत हो चुका है इसलिए आवाजे पूरे देश में गूंज रही है । तथा संबोधन में यह भी बताया कि मारवाड़ी कालेज के बच्चों को आगे बढ़ते हुए तरक्की करनी है । वर्ष 1927 में मारवाड़ी कालेज को सरकारी मान्यता प्राप्त हो गई थी । वही स्कूल में टॉपर आए चार छात्रों को घड़ी, प्रशस्ति पत्र व मोमेंटो देकर गोल्डी समूह निदेशक द्वारा सम्मानित किया गया ।

श्रम विभाग कर्मचारी संघ ने अपर श्रमायुक्त कार्यालय के वरिष्ठ सहायक का किया स्वागत

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। अपर श्रमायुक्त कार्यालय कानपुर के वरिष्ठ सहायक निजामुद्दीन खान के जनसेवा के लिए वी आर एस लेने पर बीते दिन सोमवार को श्रम विभाग कर्मचारी संघ द्वारा उनका स्वागत समारोह आयोजित किया गया। जिसमें अपर श्रमायुक्त सरजूराम शर्मा ने उन्हें माला पहनाकर व शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि आपने साहसिक निर्णय लेकर जनसेवा का मार्ग चुना है हम सब आपकी सफलता की कामना करते है। वही संघ के प्रदेश अध्यक्ष प्रभात मिश्रा ने कहा कि निजामुद्दीन अपने परिवार की देख भाल के साथ जनसेवा में लगे। कार्यक्रम में प्रभात मिश्रा, हेमंत कुमार, सुरेश सिंह यादव, प्रदीप कुमार, राजीव शुक्ला, रजनीश उपाध्याय, रूपेश गौतम, संजय राठौर, विनय कुमार आदि मौजूद रहे।

राजकीय आईटीआई पांडू नगर में अप्रेंटिस मेला आयोजित

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। राजकीय आईटीआई पाण्डु नगर कानपुर में अप्रेंटिस मेले का आयोजन सोमवार को प्लेसमेंट अधिकारी/प्रधानाचार्य मयंक मिश्रा के मार्गदर्शन में हुआ। अप्रेंटिसशिप मेले में कुल 256 बच्चों ने प्रतिभाग किया जिसमे टाटा मोटर्स लखनऊ द्वारा कुल 120 बच्चो का अंतिम रूप से चयन किया गया। बताते चलें कि इससे पूर्व टाटा मोटर्स लखनऊ मे राजकीय आईटीआई कानपुर के द्वारा 60 बच्चों का चयन किया जा चुका है वो कंपनी में ज्वाइन करके काम करना भी स्टार्ट कर चुके है। इस अवसर पर कार्यदेशक श्रवण कुमार शुक्ला, प्लेसमेंट प्रभारी प्रमोद कुमार पाण्डेय, विभव शुक्ला, प्रखर शुक्ला ,सर्वेश माथुर आदि मौजूद रहे।

एनजीओ संचालक से रंगदारी मांगना पड़ा महंगा, मुकदमा

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। शहर के रावतपुर थाना क्षेत्र में रहने वाले एनजीओ संचालक से रंगदारी मांगना दबंगों को महंगा पड़ गया। पीड़ित की तहरीर पर थाना रावतपुर में गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज करने के बाद पुलिस ने जांच करनी आरंभ कर दी है। पीड़ित पवन कुमार सिंह ने बताया कि वह एनजीओ संचालक हैं। दबंग प्रवृत्ति के सौरभ द्विवेदी रंगदारी न देने पर अपने गुर्गे रेशू मोहन उर्फ नाटी, मनोज ऋषि उर्फ मोनू के साथ मिलकर उनके घर में ज़बरन घुस गए और कट्टा लगाकर हत्या की धमकी देकर एक लाख रुपया की मांग की थी। पीड़ीत ने बताया कि उनके द्वारा पुलिस कमिश्नर बीपी जोगदंड से मिलकर अपना दुखड़ा सुनाया गया था जिसके बाद उनके आदेश पर पुलिस ने पांच लोगों के खिलाफ 384, 452, 504, 506, 420, 406, 34 जैसी गम्भीर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की है।

इंस्टाग्राम एप से हुई दोस्ती पुलिस ने कराई थाने में शादी

जन एक्सप्रेस। अमेठी

जनपद में एक अनोखा मामला सामने आया है। जहां इंस्टाग्राम पर हुई दोस्ती के बाद युवती का प्यार इस कदर परवान चढ़ा कि वो भागकर युवक के पास पहुंच गई। इधर युवती के परिजनों ने गायब होने की शिकायत थाने में दर्ज करा दिया। लेकिन हकीकत कुछ और ही निकली। मामला दर्ज होने के बाद जैसे ही पुलिस हरकत में आई और दोनों को पड़ोसी जिले प्रतापगढ़ से बरामद कर लिया। दोनों के परिजनों को थाने में बुलाकर समझौता करवाने के बाद पुलिस ने थाना परिसर में ही बने मंदिर में दोनों की शादी करवा दी। पूरा मामला संग्रामपुर थाना क्षेत्र से जुड़ा है। जहां की रहने वाली नेहा की इंस्टाग्राम पर पड़ोसी जिले प्रतापगढ़ के लीलापुर थाना क्षेत्र के रहने वाले अर्जुन वर्मा से दोस्ती हो गई। धीरे धीरे दोनों में लगातार बातें होने लगीं। कुछ दिन पहले युवती एक स्थानीय मेले में अर्जुन से मिलने गई। जहां से दोनों फरार हो गए। युवती के लापता होने के बाद पिता ने थाने में रिपोर्ट दर्ज करा दिया। वहीं रिपोर्ट दर्ज होने के बाद पुलिस ने युवती का मोबाइल सर्विलांस पर लगाया तो युवती की लोकेशन लीलापुर बाजार में मिली जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और युवक के साथ हिरासत में ले लिया। पकड़े जाने पर दोनों युवक-युवती एक दूसरे से प्यार की बात जाहिर करते हुए शादी की जिद पर अड़ गए। पुलिस दोनों को लेकर संग्रामपुर थाने पहुंची जहां से दोनों के परिजनों को बुलाया गया। मौके पर पहुंचे परिजनों को पुलिस ने समझाया।जिसके बाद परिजन दोनो की शादी को तैयार हो गए।मंदिर परिसर में ही बने शिव के मंदिर में भगवान को साक्षी मानकर दोनो की शादी हो गई। वहीं संग्रामपुर थाना प्रभारी निर्मल सिंह ने बताया कि पकड़े गए दोनों युवक-युवती ने पुलिस की पूछताछ में बताया कि उनकी इंस्टाग्राम पर दोस्ती हुई थी।जिसके बाद शादी का फैसला करते हुए फरार हो गए थे। जिसके बाद युवती के पिता ने थाने में तहरीर दी थी जिसके आधार पर पुलिस ने युवती का फोन सर्विलांस पर लगाया और उसे लीलापुर बाजार मे युवक के साथ बरामद कर लिया।ऐसे में परिवार वालों को बुलाया गया। और सभी की सहमति से दोनों की शादी थाना परिसर में बने मंदिर में करा दी गई। इस पूरे मामले पर परिजनों का कहना है कि वे दोनों बालिग हैं। और अपनी जिंदगी का फैसला स्वयं ले सकते हैं।

आयुष्मान कार्ड योजना में जिले को मिला यूपी में प्रथम स्थान

जन एक्सप्रेस/सुलतानपुर। सीडीओ अंकुर कौशिक ने बताया कि आयुष्मान कार्ड योजना में सुलतानपुर जनपद ने प्रदेश में प्रथम प्राप्त किया है। सीडीओ ने सभी संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सराहना करते हुए बधाई दी है।

सीडीओ ने कहा कि शासन की मंशानुसार जिले में विकास एवं स्वास्थ्य योजनाओं का सफल क्रियान्यवन किया जा रहा है। आयुष्मान योजना के अंतर्गत विगत 30 जुलाई 2023 को एक दिन में पांच हजार 74 कार्ड बनाया गया। जिसमें 25 सौ 48 कार्ड सत्यापित किये जा चुके हैं तथा 19 सौ 72 कार्ड अभी पोर्टल पर लंबित हैं और 9 कार्ड डिलेवर हुए। उन्होंने बताया कि आयुष्मान योजना के पात्र लाभार्थियों को इस योजना के अंतर्गत पांच लाख तक का इलाज मुफ्त में मिलता है।

जिलाधिकारी ने प्रेस क्लब का निरीक्षण कर समस्याओं के निराकरण का दिया आश्वासन

जन एक्सप्रेस। सुल्तानपुर।

प्रेस क्लब की दुर्दशा को लेकर उप्र श्रमजीवी पत्रकार यूनियन (यूपीडब्लूजेयू) की जिला इकाई ने सोमवार को जिलाधिकारी जसजीत कौर को एक ज्ञापन सौंपा। जिलाधिकारी को दिए ज्ञापन में पत्रकारों ने प्रेस क्लब की असुविधाओं को दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाने की मांग की। जिलाध्यक्ष दर्शन साहू ने उन्हें अवगत कराया गया कि जिले में पत्रकारों के लिए प्रेस क्लब ही एक स्थान है जहां पत्रकार एवं पत्रकार संगठन द्वारा आयोजित कोई कार्यक्रम होता है। लेकिन इधर बीच प्रेस क्लब परिसर में व्याप्त गन्दगी व अन्य अव्यवस्था के चलते आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में असुविधा हो रही है। श्रमजीवी पत्रकार यूनियन की तरफ से जिलाधिकारी को सौंपे गए ज्ञापन में प्रेस क्लब में लगी लाइट एवं फैन के खराब होने का जिक्र करते हुए उसे बदलवाए जाने, प्रेस क्लब में पत्रकार संगठन को या पत्रकारों के अलावा किसी अन्य व्यक्ति या संगठन को यहाँ कार्यक्रम आयोजित करने की अनुमति न दिए जाने, परिसर की साफ सफाई के लिए एक सफाई कर्मचारी की नियमित ड्यूटी लगाई जाने, दुर्दशा का शिकार शौचालय में जलापूर्ति के साथ ही भवन की रंगाई पुताई के साथ ही हाल एवं कमरों में टाइल्स लगाए जाने की मांग की है। जिलाधिकारी जसजीत कौर ने उपरोक्त समस्याओं के दृष्टिगत प्रेस क्लब का निरीक्षण कर निराकरण का आश्वासन दिया। इस मौके पर वरिष्ठ पत्रकार एवं राष्ट्रीय पार्षद सतीश तिवारी, जिलाध्यक्ष दर्शन साहू, महामंत्री संतोष यादव, उपाध्यक्ष आशुतोष मिश्र, योगेश यादव, राजबहादुर यादव, सरफराज, मो. साकिब आदि मौजूद रहे।

उप जिलाधिकारी से की हेडमास्टर अतानगर की शिकायत

जन एक्सप्रेस। बल्दीराय/सुल्तानपुर

बविकास खंड बल्दीराय के अतानगर में संचालित प्राथमिक विद्यालय में तैनात हेड मास्टर की कार्यशैली से परेशान होकर बल्दीराय प्रधान संघ अध्यक्ष बलराम यादव की अध्यक्षता में बल्दीराय ब्लाक के ग्राम प्रधानों व अतानगर गांव के ग्रामीणों ने एसडीएम व बीडीओ से शिकायत की है। बल्दीराय ब्लाक के प्राथमिक विद्यालय अतानगर में प्रधानाध्यापक के पद पर राज बक्स मौर्य तैनात हैं। उनका रवैये से ग्राम प्रधान व ग्रामीण भी परेशान हैं। उन्होंने रसोइयों को हटाने के लिए पहले तो विद्यालय में छात्र संख्या कम कर दी, बाद में प्रवेश दिलाने गए अभिभावकों से भी बच्चों का प्रवेश लेने से मना कर दिया। इससे नाराज अभिभावक ग्राम प्रधान रामरूप से शिकायत की। इससे नाराज ग्राम प्रधान ने प्रधान संघ अध्यक्ष बलराम यादव,दो दर्जन ग्राम प्रधानों व ग्रामीणों के साथ जाकर एसडीएम व बीडीओ बल्दीराय को ज्ञापन दिया। इसके पहले रसोईयों व ग्रामीणों ने बीएसए से हेडमास्टर की कार्यशैली की शिकायत की थी। इस पर बीएसए ने खंड शिक्षा अधिकारी बल्दीराय को जांच करने के लिए कहा था। बताया जाता है कि हेडमास्टर प्राथमिक शिक्षक संघ बल्दीराय का ब्लाक अध्यक्ष भी हैं, इसलिए अधिकारी भी जांच करने नहीं जाना चाहते। ज्ञापन देने वालों में प्रधान मोहम्मद सम्मू, प्रधान अर्जुन यादव, प्रधान मोहम्मद रिजवान, प्रधान हजारी लाल साहू, प्रधान विकास यादव, प्रधान राम शंकर यादव, प्रधान बिंद्रा यादव, प्रधान श्याम नारायण सोनकर, प्रधान अमन सोनी, प्रधान देवी यादव, प्रधान देवेंद्र सिंह, प्रधान हुसना बानों, प्रधान पुष्पा सिंह, प्रधान फूलमती, प्रधान श्रीपाल पासी, बजरंग सिंह,प्रधान अकबर हुसैन,प्रधान परवेश कुमार,प्रधान राम मनोरथ, सुरेश कुमार प्रजापति, गोकरन शुक्ला,श्याम प्रीत, अकील अहमद, जय प्रकाश मिश्रा आदि प्रधान शामिल रहे।

साहब हरे पेड़ों के सहारे हो रही विद्युत आपूर्ति

जन एक्सप्रेस। राजेश पाल

बाजार शुक्ल, अमेठी। कहने को अमेठी जनपद वीवीआइपी में शुमार होता है। क्षेत्र सत्ताधारी सांसद केंद्रीय मंत्री व विधायक का क्षेत्र माना जाता है। बीआईपी नेताओं द्वारा विकास बहने की बात कही जाती है। हालात ढाक के तीन पात जनपद के आखिरी छोर पर स्थित विकास खंड बाजार शुकुल क्षेत्र में जनता त्रस्त अधिकारी मस्त का नजारा देखा जा सकता है। नहर बिजली-पानी मूलभूत सुविधाओं से कोसों दूर क्षेत्र बिजली व्यवस्था और जर्जर तार लोगों के लिए मुसीबत बने देखे जा रहे हैं। लोगों तक पहुंचाने जाने वाली एलटी लाइन के तार पेड़ की टहनियों से बांधकर सप्लाई पहुंचते देखी जा रही है। बारिश के मौसम में पेड़ के डाल में बंधी एलटी लाइन से कभी भी हादसा हो सकता है। बानगी के तौर पर इन्हौना मार्ग पर मवैया चौराहे समीप साईं गंज चौराहे के पास पेड़ के टहनियों से बंधे एलटी लाइन बिजली के तार देखे जा सकते हैं। पोल होने के बावजूद भी विभाग के जिम्मेदारों के पास शायद समय का अभाव जिससे पोल की बजाय पेड़ की टहनियों से बांधकर विद्युत आपूर्ति जारी की जाती है। इन्हौना रुदौली मुख्य मार्ग के चलते हजारों लोगों का आवागमन बना रहता है। स्थानीय लोगों ने एलटी लाइन को पोल में बांधकर आपूर्ति करने की मांग की है।

✳ पेड़ से बंधे 440 हाई वोल्टेज तार, समय रहते न चेते जिम्मेदार तो कभी भी हो सकता है हादसा

बारिश न होने से बढ़ी चिंता, बिजली की आवाजाही से त्रस्त किसान

बारिश न होने और बिजली संकट के कारण किसानों की चिंता बढ़ी देखी जा रही है। खेतों में फसल सिंचाई के अभाव में सूख रही है। फसल बचाने के लिए किसान जद्दोजहद कर रहे हैं। किसान राधेश्याम,रामजीत,रजनीकांत विशन कपूरे आदि ने कहा कि एक पखवारे से अच्छी बारिश नहीं हुई है। बिजली की आवाजाही भी बनी हुई है। जिसके कारण सिंचाई करने में दिक्कत आ रही है।क्षेत्रीय लोगों का कहना है शासन प्रशासन द्वारा 18 घंटे विद्युत आपूर्ति का दावा महज खोखला साबित होता देखा जा रहा है।प्रदेश सरकार सीना तान के कहती है कि जिला मुख्यालय में 24 घंटे, तहसील मुख्यालय में 20 घंटे तो ग्रामीण क्षेत्रों में 18 घंटे लगातार बिजली सप्लाई की जा रही है। लेकिन वर्तमान में सरकार के यह सारे दावे झूठे और खोखले साबित होते देखे जा रहे हैं।

विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के लिए आवेदन

जन एक्सप्रेस/गौरीगंज,अमेठी। उपायुक्त उद्योग,जिला उद्योग प्रोत्साहन एवं उद्यमिता विकास केंद्र अमेठी राजीव पाठक ने बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा पारंपरिक कारीगर जैसे बढ़ाई, दर्जी, टोकरी बुनकर, नाई, लोहार, कुम्हार, सुनार, हलवाई, मोची, राजमिस्त्री एवं हस्तशिल्पयों के आजीविका के संसाधनों का सुदृढ़ीकरण करने तथा उसमें कौशल विधि लाने एवं उनके जीवन स्तर को उन्नत करने हेतु विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना लागू की गई है। इसके संदर्भ में वर्तमान वित्तीय वर्ष हेतु प्रथम बैच के लिए विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के 10 ट्रेडों में, बढ़ई 50, नाई 25,दर्जी 500, कुम्हार 25, लोहार 25, सुनार 25, टोकरी बुनकर 25,राजमिस्त्री 25, हलवाई 50 एवं मोची 25 हेतु अभ्यर्थियों से पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन मांगे गए हैं। उन्होंने कहा कि अभ्यर्थियों को ऑनलाइन आवेदन करते समय पासपोर्ट साइज फोटो, आधार कार्ड की छाया प्रति, बैंक पासबुक की छायाप्रति, जाति प्रमाण पत्र,ग्रामप्रधान अथवा सभासद द्वारा जारी किया गया, कारीगरी प्रमाण पत्र अपलोड करना अनिवार्य होगा। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि योजना से संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु कार्यालय उपयुक्त उद्योग जिला उद्योग प्रोत्साहन एवं उद्यमिता विकास केंद्र गौरीगंज आकर किसी भी कार्य दिवस में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

डीएम ने गोवंश आश्रय स्थल का किया आकस्मिक निरीक्षण

जन एक्सप्रेस। सुलतानपुर

डीएम जसजीत कौर द्वारा नगर पालिका के अन्तर्गत संचालित गोवंश आश्रय स्थल सौरमऊ देहात, विकास खण्ड दूबेपुर का आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय गोवंश आश्रय स्थल में कुल 155 गोवश (44 नर तथा 111 मादा) संरक्षित और स्वस्थ्य पाये गये। निरीक्षण के दौरान संरक्षित गोवंशों हेतु साफ-सफाई, खान पान, भूषा, हरा चारा, दैनिक सत्यापन आदि का जायजा लिया गया।

केयर केटर द्वारा जिलाधिकारी को अवगत कराया गया कि गोवंश आश्रय स्थल पर नियमित रूप से पशु चिकित्सक द्वारा विजिट नहीं किया जाता है। डीएम ने इस सम्बन्ध में मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी को निर्देशित किया कि एक पशु चिकित्सक को गोशाला में नियमित रूप से नियुक्त किया जाय और वह प्रतिदिन गोशाला में पशुओं की देखभाल हेतु विजिट करें। निरीक्षण के दौरान गोशाला में एक गोवंश घायल अवस्था पाया गया, जिसका उपचार किया जा रहा है। जिलाधिकारी द्वारा गोशाला में बने गोबर गैस प्लांट का अवलोकन करते हुए उसकी सराहना की गयी। उन्होंने केयर टेकर को निर्देशित करते हुए कहा कि गोवंश आश्रय स्थल की नियमित साफ-सफाई, खान पान, भूषा, हरा चारा आदि उपलब्ध कराया जाय। उन्होंने कहा कि प्रायः किसी भी गोशाला में हरा चारा उपलब्ध नहीं होता, इस हेतु सम्बन्धित को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी गोशालाओं में हरा चारा उपलब्ध कराया जाय।

मोहर्रम का पहला अशरा मुकम्मल, आजादारों ने मजलिसे मातम कर कर्बला के शहीदों का मनाया गम

जन एक्सप्रेस। रायबरेली

10वीं मोहर्रम के साथ माहे मोहर्रम का पहला अशरा मुकम्मल हुआ। आजादारों ने सुबह से शाम तक मजलिसे मातम कर कर्बला के शहीदों का गम मनाया। इसी कड़ी में मजलिस ऐतिहासिक इमाम बारगाह मीर वाजिद अली खालीसाहट में हुई। जिसमें मौलाना जावेद साहब ने खिताब किया और उन्होंने आजादारो को मुखातिब करते हुए कहा कि हुसैन ने सर देकर नमाज को बचाया, यजीद भी खुद को मुसलमान कहता था, मगर शराब जुआ जैसे ऐब आम थे, हुसैन जानते थे यजीद को बेनकाब सिर्फ कुर्बानी देकर ही किया जा सकता है और इसी को अंजाम तक पहुंचाने के लिए कर्बला का वाक्या हुआ। जिसमे इमाम हुसैन ने जहां अपने दोस्तों, अंसारो की शहादत दी तो वही अपने 6 माह के बेटे असगर और 18 साल के बेटे अकबर, 32 साल का भाई अब्बास की शहादत पेश की।

सुबह से अस्र तक इमाम हर शहीद की लाश लाते और अल्लाह का शुक्र अदा करते, आखिर मे खुद को भी खुदा की राह मे पेश कर दिया। बाद मजलिस अलम वा ताजिया का जुलूस निकला जो अपने कदीमी रास्तो शाहटोला, सुरजूपुर, राजघाट होता हुआ कर्बला मीर वाजिद अली पहुचा। यहाँ मातम कर नम आँखों से ताजिया सुपुर्द ए खाक किया गया, अंजुमन सज्जादिया द्वारा बरामद जुलूस की निगरानी वा इंतेजाम सेक्रेट्री अजा वसी अजहर नकवी ने की। रास्ते मे नौहा जायर हुसैन रिजवी, शाहबाज जैदी, शावेज अली, हसन मुर्तुजा वा साथियो ने पढ़े। अंजुमन सज्जादिया के सदस्य वा आयोजक मीसम नकवी ने बताया कि जुलूस मे मुख्य रूप से जनरल सेक्रेटरी नवाब अली तकी, इमरान रजा, मुकर्रम नकवी, सलमान नकवी, अकबर अली, राशिद नकवी, आरिफ नकवी, दिलशाद नकवी, साजिद जाफरी, अलमदार हुसैन, मजहर, नासिर मेंहदी, अश्तर नकवी, सय्यद वसी नकवी, रजी हैदर, नजर अली जैदी, दानिश हसन, रजा अब्बास, जीशान अहमद, मंजर भाई, हाशिम अली, अब्बास अहमद, अली, सहित अन्य मातमदार मौजूद रहे।

लम्भुआ तहसील में हुई मुख्य लिपिक की विदाई

जन एक्सप्रेस/लंभुआ/सुलतानपुर। वरिष्ठ लिपिक सुरेन्द्र बहादुर सिंह ने अपनी सेवा का अधिकतम कार्यकाल 60 वर्ष का पूरा किया अपने सेवाकाल में सभी मातहत एवं अधिकारियों को संतुष्ट रखा नाही बादकारी ना ही अधिवक्ता और सामान्य नागरिकों को भी कभी हैरान परेशान नहीं किया अपने जीवन की समस्त जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए कार्यालय को अतुलनीय और जिम्मेदारियों से परिपूर्ण होते हुए सराहनीय कार्य किया। जिसकी प्रशंसा अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष ओम प्रकाश श्रीवास्तव एवं मंत्री साधु सिंह वा तमाम अधिवक्ताओं ने खुले मन से सराहना की उपजिलाधिकारी दीपक वर्मा, तहसीलदार अरविंद कुमार मिश्रा, नवागत नायब तहसीलदार रूबी यादव, नायब भदेंया गरिमा भार्गव, नायब चांदा दुर्गा प्रसाद उपाध्याय और सभी राजस्व निरीक्षक वा लेखपाल मौजूद रहे।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लेकर विशेषज्ञ प्रशिक्षकों ने राइजिंग चाइल्ड स्कूल में लगाई कार्यशाला

जन एक्सप्रेस। रायबरेली

शहर के प्रभुटाऊन स्थित राइजिंग चाइल्ड स्कूल मे नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लेकर कार्यशाला संपन्न हुई। नई दिल्ली से आए हुए नेक्स्ट एजुकेशन सोसायटी के विशेषज्ञ प्रशिक्षकों ने शिक्षा के क्षेत्र मे नए बदलाव के बारे में जानकारी प्रदान किया तथा शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के सवालों के जवाब भी दिए।

प्रशिक्षण कार्यशाला मे आये हुए अतिथियों का अभिनन्दन विद्यालय के प्रबन्धक अरविंद श्रीवास्तव, एडवोकेट द्वारा किया गया। प्रधानाचार्या सीमा श्रीवास्तव ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का स्वागत करते हुए कहा कि कौशल विकास और व्यावसायिक रूप से निपुण होने के लिए नई शिक्षा नीति अत्यंत उपयोगी है। नेक्स्ट एजूकेशन की प्रशिक्षक दुहिता परमार, सुनीता सक्सेना, सौरभ मेहरोत्रा तथा दिनेश प्रकाश सिंह ने जहां स्कूल के शिक्षक शिक्षिकाओं को प्रशिक्षित किया, वहीं उपस्थित अभिभावकों की भ्रांतियों को भी दूर किया। शिक्षा को मनोरंजक रूप से बच्चों के समक्ष रखना नई शिक्षा नीति का प्रमुख उद्देश्य है। प्रशिक्षक दुहिता परमार ने बताया कि बच्चों मे प्री-प्राइमरी और प्राइमरी कक्षाओं के बच्चों के बहुमुखी विकास मे नई शिक्षा नीति जहां एक वरदान है, वहीं हाईस्कूल और इंटरमीडिएट की कक्षाओं तक पहुंचते ही बच्चे व्यवसायिक रूप से कैरियर के लिए अपनी पसंद की राह का चयन कर सकते हैं। विशेषज्ञ सौरभ मेहरोत्रा ने कहा कि बच्चों की रुचि और पसंद के अनुरूप शिक्षा की दिशा तय करने से बच्चे हुनरमंद बनेंगे जो उनके भविष्य के लिए अत्यंत लाभकारी होगा। विद्यालय की प्रधानाचार्या सीमा श्रीवास्तव ने आए हुए सभी अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि इस तरह की कार्यशाला, शिक्षा पद्धति में नया बदलाव लाएंगी।

एनसीओआरडी की जिला स्तरीय कमेटी की बैठक सम्पन्न

जन एक्सप्रेस। रायबरेली

जिलाधिकारी माला श्रीवास्तव की अध्यक्षता में एनसीओआरडी की बैठक कलेक्ट्रेट स्थित बचत भवन में हुई। बैठक में उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि जनपद को नशा मुक्त कराने के लिए हर संभव प्रयास किए जाएं। जिला आबकारी अधिकारी को निर्देश देते हुए उन्होंने कहा कि शराब की दुकानों और संदिग्ध दुकानों पर छापेमारी की जाएं और संबंधित के खिलाफ कार्यवाही की जाए। जिला विद्यालय निरीक्षक और बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देश देते हुए कहा कि स्कूली बच्चों के बीच जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएं जिससे कि वह नशे से दूर रहें। औषधि निरीक्षक को निर्देश दिया कि दवा की दुकानों पर छापेमारी की जाए और संदिग्ध दवाओं को जांच के लिए भेजा जाए और दोषियों पर कार्यवाही की जाए। इसके अतिरिक्त जिलाधिकारी ने कहा कि राजमार्गों पर बने ढाबों की जांच की जाए और नशीली वस्तु यदि मिलती है तो उस पर कार्यवाही की जाए। जिला कारागार अधीक्षक को कहा कि जो भी बंदी कारागार में नशीली दवाई बेचने या लेने के आरोप में बंद हैं या उन पर कड़ी निगरानी रखी जाए और उन्हें नशीली दवाएं कहां से उपलब्ध होती थी, इस संबंध में जानकारी हासिल की जाए। जिला समाज कल्याण अधिकारी को निर्देश देते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि जन जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को नशीली वस्तुओं से दूर रहने के लिए जागरूक किया जाए।

सेवानिवृत्त पुलिस कर्मियों को दी गयी विदाई

जन एक्सप्रेस/रायबरेली। पुलिस विभाग से अधिवर्षता आयु पूर्ण कर सेवानिवृत हुये अधि0, कर्मचारियों को पुलिस अधीक्षक रायबरेली व अपर पुलिस अधीक्षक नवीन कुमार सिंह द्वारा पुष्पमाला व शॉल पहनाकर सम्मानित करते हुए उन्हें स्मृति चिन्ह आदि प्रदान किया गया, साथ ही पुलिस विभाग में उनके द्वारा दिए गए महत्वपूर्ण योगदान व उत्कृष्ट कार्य एवं उनकी कर्तव्यनिष्ठा की सराहना की गयी तथा उपस्थित अधि0, कर्मचारीगणों द्वारा उनके उज्ज्वल भविष्य एवं स्वस्थ जीवन की कामना के साथ भावभीनी विदाई दी गयी। सेवानिवृत्त हुये अधिकारियों, कर्मचारियों में उप-निरीक्षक नागेन्द्र प्रसाद शुक्ला थाना सरेनी जनपद रायबरेली, उप-निरीक्षक रामफल मिश्र थाना महराजगंज जनपद रायबरेली, उप-निरीक्षक विमलेश कुमार मिश्र थाना नसीराबाद रायबरेली, उप-निरीक्षक अशोक कुमार शुक्ला स्थानीय अभिसूचना इकाई रायबरेली, उप-निरीक्षक उदयराज थाना डलमऊ रायबरेली, मुख्य आरक्षी बच्चूलाल पुलिस लाइन रायबरेली, लीडिंग फायर मैन फायर सर्विस रायबरेली रहे।

माँ का दूध बच्चे में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है और बच्चे को संक्रामक रोगों से भी बचाता है: डा. वीरेंद्र सिंह

जन एक्सप्रेस। रायबरेली

मां का दूध शिशु के लिए सर्वोत्तम आहार है। प्रसव के तुरंत बाद निकलने वाला पीला गाढ़ा दूध (कोलोस्ट्रम) न केवल बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है बल्कि शिशु को संक्रामक रोगों से भी बचाता है। बच्चों को कम से कम छह माह तक केवल स्तनपान कराना चाहिए। छह माह के बाद स्तनपान के साथ ऊपरी आहार देना चाहिए। खाना देने के साथ ही कम से कम दो साल तक स्तनपान जारी रखना चाहिए।

इस संबंध में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. वीरेंद्र सिंह ने बताया कि स्तनपान को बढ़ावा देने के लिए हर साल एक से सात अगस्त तक विश्व स्तनपान सप्ताह का आयोजन किसी न किसी थीम के तहत किया जाता है। इस साल थीम है-लेट्स मेक ब्रेस्टफीडिंग एंड वर्क, वर्क। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि बच्चे को छह माह तक सिर्फ स्तनपान कराना चाहिए। बच्चे को कृत्रिम आहार या अन्य पेय नहीं देना चाहिए। यदि बच्चा या मां बीमार हो, तो भी स्तनपान कराना जारी रखना चाहिए। शिशु को छह माह के बाद और दो वर्ष या उससे अधिक समय तक स्तनपान कराने के साथ-साथ पूरक आहार दिया जाना चाहिए। बच्चे को 24 घंटों में आठ बार स्तनपान कराना चाहिए। जुड़वां बच्चों को भी मां भरपूर दूध पिला सकती है। स्तनपान के दौरान धूम्रपान या अल्कोहल का सेवन नहीं करना चाहिए।

यह जच्चा और बच्चा दोनों के लिए हानिकारक हो सकता है। बोतल से दूध पीना बच्चे के लिए हानिकारक हो सकता है। इससे बच्चे को दस्त हो सकते हैं। प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य के नोडल अधिकारी और अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ राधाकृष्णन बताते हैं कि स्तनपान कराने से बच्चों की सेहत ही नहीं सुधरती बल्कि मां भी स्वस्थ रहती है। खास बात यह है कि स्तनपान कराने वाली महिलाओं को स्तन कैंसर का खतरा काफी हद तक कम हो जाता है। स्तनपान से शिशु मृत्यु दर में भी कमी आती है। जिला महिला चिकित्सालय की मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ0 रेनू चौधरी का कहना है-स्तनपान बच्चों को हाइपोथर्मिया (ठंडा बुखार), डायरिया, निमोनिया, सर्दी, मोटापा, कानों का संक्रमण और अन्य बीमारियों से बचाता है। मां के दूध से बच्चे को सभी आवश्यक पोषक तत्व मिलते हैं जो कि बच्चे के शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकास में अहम भूमिका निभाते हैं। जिला स्वास्थ शिक्षा अधिकारी डी एस अस्थाना बताते हैं नियमित स्तनपान कराने से मां को स्तन कैंसर, डिंब ग्रंथि के कैंसर, प्रसव के बाद खून बहने और एनीमिया की संभावना को कम करता है। इसके साथ ही गर्भाशय को सिकुड़ने और सामान्य आकार में लौटने में मदद मिलना, प्रसवोत्तर अवसाद का जोखिम कम होता है। इससे महिलाओं में मोटापा बढ़ने की संभावनाएं कम हो जाती हैं। स्तनपान बच्चों में मृत्यु दर के अनुपात को कम करता है।

तापमान

	अधिकतम	न्यूनतम
लखनऊ	41°C	33°C
कानपुर	40°C	31°C
देहरादून	29°C	23°C
नई दिल्ली	40°C	32°C

नवनीत सहगल प्रशासनिक पद से रिटायर, बने रहेंगे 'जनसेवक'

जन एक्सप्रेस। लखनऊ

उत्तर प्रदेश के चर्चित और विवादित आईएएस अफसर नवनीत सहगल आज प्रशासनिक पद से तो रिटायर हो रहे हैं। मगर उनकी क्षमताओं को देखते हुए मौजूदा सत्ताधारी निजाम उन्हें यूं ही खाली बैठने तो नहीं देगा। यूपी में 35 साल की लंबी प्रशासनिक सेवा का फायदा सियासी दल जरूर उठाना चाहेंगे। सियासी गलियारों में ऐसे कयास लगाए जा रहे हैं कि क्राइसेज मैनेजमेंट में माहिर इस अफसर के कंधों पर 2024 के लोकसभा चुनाव में बड़ी जिम्मेदारी देखने को मिल सकती है। उत्तर प्रदेश की नौकरशाही में हर सरकार में चर्चित रहे 1988 बैच के आईएएस नवनीत सहगल पावर कॉरिडोर में 'लंबे नारायण' या 'लंबू' के नाम से मशहूर रहे। नवनीत पंजाब में लुधियाना के रहने वाले हैं। आईएएस बनने से पहले वो चार्टर्ड अकाउंटेंट थे। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अफसर बनने के बाद बैंलसशीट की तरह जिस तरह उन्होंने उत्तर प्रदेश को समझा और काम करके दिखाया ये अपने आप में एक उपलब्धि है।

अखिलेश, मायावती या योगी सरकार, वो नवरत्नों में शामिल रहे

क्राइसेस मैनेजमेंट में माहिर होने की वजह से अलग-अलग विचारधाराओं वाली सरकारों में नवनीत सहगल ने हमेशा सत्ता के साथ कदमताल किया। उनको सौंपे गए हर कार्य को किसी भी कीमत पर कर के दिखाया। मायावती, अखिलेश यादव और योगी आदित्यनाथ की सरकार के नवरत्नों की सभा में उनका विशेष स्थान रहा। इन्होंने हमेशा राजा की खुशी के लिए सत्ता का दोहन और प्रदोहन किया। अपने मालिकों (मुख्यमंत्री) का हित साधने के लिए वो हर काम किए जिसे ना करने की एक प्रशासनिक अधिकारी शपथ लेता है। कुर्सी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के चलते उनको सोशल मीडिया पर लोग कटप्पा भी कहने लगे थे। जो माहिष्मति के सिंहासन का वफादार था। वरिष्ठ पद पर होने के बाद भी पब्लिक सर्वेंट के रूप में नवनीत ने एक अलग पहचान बनाई। जनता उनसे मिलने दूर-दूर से आती थी। आगरा एक्सप्रेस-वे पर भीषण दुर्घटना के बाद अस्पताल में उनको देखने आने वालों का तांता लगा रहता था। जो किसी भी नौकरशाह के कामकाज की शैली को दर्शाने के लिए काफी था। सूचना विभाग के प्रमुख सचिव रहने के दौरान लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के भी चहेते रहे, कस्बाई रिपोर्टर से लेकर अखबार और चैनल मालिकों तक से मधुर संबंध बना कर चलने वाले अफसरों में शुमार होते हैं नवनीत सहगल। नेताओं में भी ख़ास लोकप्रियता रही, सही मायने में प्रशासनिक निष्ठुरता के साथ ब्रांडिंग और डिलीवरी का सटीक मिश्रण नवनीत सहगल रहे हैं।

आगरा एक्सप्रेस-वे से लेकर कैलाश मानसरोवर यात्रा की दुर्घटना की जिम्मेदारी नवनीत को मिली

लखनऊ में कलेक्टर रहने के दौरान 6 दशक पुराने शिया सुन्नी विवाद को इतिहास के पन्नों में सीमित कर दिया इस अफसर ने, वरना यहां शिया सुन्नी दंगे होना आम बात थी। नवनीत सहगल की न्यायपालिका के साथ कभी भी किसी टकराव की स्थिति नहीं बनी। मायावती की सरकार के दौरान कैलाश मानसरोवर यात्रा के दौरान दुर्घटना हुई थी, जिसमें कई लोग मर गए थे। उस वक्त मायावती ने घटनास्थल पर राहत कार्य की जिम्मेदारी इसी अफसर को सौंपी थी। धारचूला में जान जोखिम में डाल कर इस अफसर ने कई जिंदगियों को बचाया था। पावर कॉरिडोर में एक चर्चा आम थी कि जो विभाग सबसे बेकार, मरा हुआ हो वो नवनीत सहगल को दे दो... कुछ महीनों बाद वो विभाग लहलहाने लग जाएगा। लखनऊ आगरा एक्सप्रेस को रिकार्ड 22 महीने में बनवाने और एअर फोर्स के फाइटर प्लेन को वहां उतारने का श्रेय भी इसी अफसर के नाम जाता है। राम मंदिर पर कोर्ट का फैसला आने के वक्त मायावती ने इस अफसर पर ही सबसे ज्यादा भरोसा किया और वो सही भी निकला, पूरे सूबे में शांति रही, छिटपुट घटना तक नहीं घटी।

फिल्मी सितारों के शो के नाम पर 9 करोड़ ठगी करने वाले गिरफ्तार

लखनऊ में फर्जी होर्डिंग्स लगाई, बुक माई शो पर टिकट बेचे; अब एसटीएफ ने 3 को दबोचा

जन एक्सप्रेस। लखनऊ

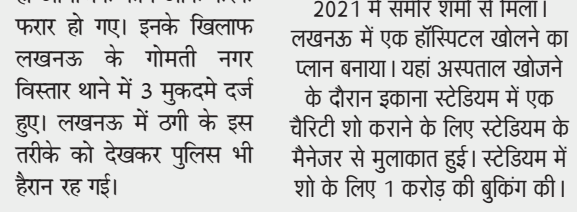

बॉलीवुड एक्ट्रेस सनी लियोन, नोरा फतेही, एक्टर टाइगर श्राफ, सिंगर गुरु रंधावा जैसे फिल्मी सितारों से लाइव कंसर्ट कराने के नाम पर 9 करोड़ की ठगी हुई। फाइनेंसर और ऑनलाइन टिकट बेचकर ठगी करने वाले तीन आयोजक 9 महीने बाद स्त्र्स्त्र की गिरफ्त में आए हैं। लखनऊ के इकाना स्टेडियम में लाइव कंसर्ट का शो कराने का झांसा देकर ये ठगी की गई।

गिरफ्तार आयोजकों ने श्री सुविधा फाउंडेशन द्वारा मई-2022 में शो कराने के नाम पर बुक माई शो पर टिकट तक बेचे। शो के एक-दो दिन पहले ही आयोजक फोन ऑफ करके फरार हो गए। इनके खिलाफ लखनऊ के गोमती नगर विस्तार थाने में 3 मुकदमे दर्ज हुए। लखनऊ में ठगी के इस तरीके को देखकर पुलिस भी हैरान रह गई।

मुंबई में खोला ऑफिस, इंटर पास है मास्टरमाइंड

यूपी एसटीएफ ने जयंती डेरा वालिया, विराज त्रिवेदी, समीर शर्मा को अरेस्ट किया है। इन्हें ट्रांजिट रिमांड पर लखनऊ लाकर पूछताछ की जा रही है। एसटीएफ की पूछताछ में मास्टरमाइंड विराज ने बताया कि 12वीं पास करने के बाद उसने कोरियर कंपनी में डिलीवरी ब्वॉय के रूप में 7 साल तक काम किया। 1999 से पुष्पक कोरियर की एजेंसी लेकर अपना खुद का बिजनेस गुजरात में 2014 तक चलाया। इसके बाद कोरियर का ही एक और ऑफिस मलाड मुंबई में खोला। 2020 में लॉकडाउन के बाद सारा काम बंद हो गया।

कोरोना में हॉस्पिटल खोलने का प्लान बनाया

विराज ने एसटीएफ को बताया कि 2021 में समीर शर्मा से मिला। लखनऊ में एक हॉस्पिटल खोलने का प्लान बनाया। यहां अस्पताल खोजने के दौरान इकाना स्टेडियम में एक चैरिटी शो कराने के लिए स्टेडियम के मैनेजर से मुलाकात हुई। स्टेडियम में शो के लिए 1 करोड़ की बुकिंग की।

इनवेस्टर्स को एक करोड़ का डेढ़ करोड़ वापस करने का लालच दिया

बुकिंग फाइनल होने के बाद स्टेडियम के मैनेजर गौरव ने ही उसकी और समीर की मुलाकात अमित सिंह से कराई। अमित, चैरिटी शो के लिए स्टार्स की बुकिंग कराते थे। स्टार तय होने के बाद शो की तारीख मई-2022 में रखी गई। साथ ही फाइनेंस के लिए इनवेस्टर्स को एक करोड़ का डेढ़ करोड़ वापस करने का लालच दिया गया। फिर सुविधा फाउंडेशन में करीब 5 करोड़ रुपए इनवेस्ट कराए।

डी.पी.एस. एकेडमी स्कूल में मनाया गया प्लांटेशन डे

जन एक्सप्रेस। इटौंजा, लखनऊ

डीपीएस एकेडमी स्कूल इटौंजा में प्लांटेशन डे एवं इंटर हाउस क्विज कंपटीशन का आयोजन हुआ। बता दें कि कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय की प्रबंधक शैल सिंह के द्वारा वृक्षारोपण करते हुए बच्चों को वृक्षों के महत्व को समझाते हुए अपने घरों के आसपास की जगह पर पेड़ लगाने तथा उसको सुरक्षित रखने का भी संकल्प दिलाया। वहीं इंटर हाउस क्विज कंपटीशन में अग्नि, आकाश, जल, पृथ्वी हाउस के बच्चों में क्विज कंपटीशन हुआ। जिसमें अग्नि हाउस विजयी रहा।

इस अवसर पर विद्यालय की प्रबंधक शैल सिंह प्रशासनिक अधिकारी गरिमा सिंह तथा विद्यालय की प्रिंसिपल मीता चक्रवर्ती के साथ समस्त अध्यापकगण भी उपस्थित रहें।

महिला से रुपये छीनने वाली दो महिलाएं गिरफ्तार, हाईवे रोड पर छीने थे रुपये

बैंक से पैसे निकालने गई महिला से रास्ते में पीछा कर छीने रुपये

जन एक्सप्रेस। इटौंजा, लखनऊ

इटौंजा थाना क्षेत्र के अन्तर्गत कल्याणपुर गांव की बबिता बैंक ऑफ इंडिया बीकेटी से (5000) पांच हजार रुपये निकालकर टेंपो पर सवार होकर अपने घर आ रही थी वही दोनों महिलाएं मामपुर बना से पीछा कर रही थी जब मैंने टेंपो चालक को किराए के पैसे देने लगी तो देखा दोनों लुटेरी महिलाओं ने 5000 रूपये निकाल लिए। वहीं इटौंजा थाना प्रभारी निरीक्षक सुनील कुमार तिवारी ने बताया कि बबीता ने दोनों आरोपी महिलाओं को पकड़ लिया बबीता से महिलाएं मारपीट करने लगी तब आसपास के नागरिकों ने दोनों आरोपी लुटेरी महिलाओं को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया

उन्होंने बबीता को 3000 रूपये वापस कर दिया और 2000 रूपये वापस नहीं किए, लूटपाट करने वाली महिलाएं नागपुर जिले की रहने वाली हैं यह इस समय चारबाग में रहती हैं एक लूटपाट करने वाली महिला का नाम माधुरी है दूसरी महिला ने अपना नाम बताने से इंकार कर दिया, पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

परिवारिक कलह के चलते व्यक्ति ने लगाई फांसी, हुई मौत, घर में मचा कोहराम

जन एक्सप्रेस। इटौंजा, लखनऊ

लखनऊ कमिश्नरेट के इटौंजा थाना क्षेत्र के अन्तर्गत ग्राम अकड़रीया कलां गांव में एक व्यक्ति ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बता दें कि इटौंजा थाना क्षेत्र के अकड़रिया कलां गांव निवासी काशीराम रावत उम्र करीब 50 वर्ष जोकि परिवारिक कलह के चलते रविवार रात 10 बजे गांव से लगभग 2 किलोमीटर दूरी पर खेतों के पास लगे बबूल के पेड़ में प्लास्टिक की रस्सी से फंदा डालकर फांसी लगा ली। वहीं मौके पर पहुंचे परिजनों ने इटौंजा पुलिस को सूचना दी इटौंजा पुलिस उपनिरीक्षक ओमप्रकाश तिवारी मौके पर पहुंचकर शव को पोस्टमार्टम के लिए लखनऊ भेज दिया। वहीं मृतक काशीराम के घर में कोहराम मचा हुआ है काशीराम अपने पीछे पत्नी व दो बेटे छोड़ गए हैं।

जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों में चले लाठी-डंडे, एक दर्जन लोग घायल

इटौंजा, लखनऊ

इटौंजा थाना क्षेत्र के अन्तर्गत भीखमपुर गांव में भूमि विवाद को लेकर रामस्वरूप व दिनेश दोनों पक्षों के बीच में लाठी-डंडे व गुम्मे जमकर चलें। जिसमें दोनों पक्षों के आधा दर्जन नागरिक जख्मी हो गए। वहीं इटौंजा थाना की पुलिस ने बताया की भीखमपुर गांव के रामस्वरूप व दिनेश के बीच में भूमि विवाद को लेकर दोनों पक्षों में जमकर लाठी-डंडे व गुम्मे चलें। जिसमें रामस्वरूप पक्ष के रामस्वरूप मालती व महेश बुरी तरह से घायल हो गए। दिनेश पक्ष के विमल आशीष भी गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों पक्षों ने थाना इटौंजा में इस संबंध का प्रार्थना पत्र

दे दिया है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। इन घायलों को

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र इटौंजा में उपचार के लिए भर्ती किया गया है।

बटरफ्लाई ने किचन के लिए पेश की अभिनव समाधानों की नई रेंज

जन एक्सप्रेस। लखनऊ

बटरफ्लाई किचन एप्लायंसेस, भारत के सबसे बड़े किचन एप्लायंस ब्रांड, और क्रॉम्प्टन ग्रीव्स कंज्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड की सब्सिडिएरी, ने आज अपने अत्याधुनिक किचन प्रोडक्ट्स के लॉन्च की घोषणा की। इन उत्पादों को ग्राहकों की लगातार बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह उत्पाद भारत के खाना पकाने और खाने के दौरान खुशी मनाने के तरीके को बदलकर रख देंगे। बटरफ्लाई चार दशकों से अधिक समय से नवीन और टिकाऊ कुकिंग एप्लायंस, चिमनी, ग्राइंडर और किचनवेयर लॉन्च करने में अग्रणी रहा है। बटरफ्लाई गहन उपभोक्ता-केंद्रित अनुसंधान से प्रेरित है, और इसकी रेंज में विशिष्ट खूबियां

हैं जो समझदार ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। वर्ष 2022 में, कंपनी ने उच्च गुणवत्ता, टिकाऊपन और विश्व स्तरीय अनुसंधान और विकास के लिए प्रसिद्ध कंपनी क्रॉम्प्टन के साथ साझेदारी की थी। यह साझेदारी नवाचार और गुणवत्तापूर्ण किचन प्रोडक्ट्स की विशिष्ट रेंज को एक साथ लाने की बटरफ्लाई की प्रतिबद्धता को और मजबूत करती है।

बटरफ्लाई किचन एप्लायंसेज लिमिटेड के प्रबंध निदेशक रंगराजन श्रीराम ने लॉन्च के इस कार्यक्रम में रेंज के बारे में कहा बटरफ्लाई में, हम अपने ग्राहकों की वास्तविक जीवन की जरूरतों के अनुरूप समाधान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम आधुनिक घरों में समय और सुविधा की आवश्यकता को समझते हैं, इसलिए, हम लगातार अपने उपभोक्ताओं के अनुभवों को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं। यह बटरफ्लाई के लिए एक रोमांचक दौर है, जब हम किचन में इनोवेशन की सीमाओं को पार करते हुए ऐसे उत्पाद पेश कर रहे हैं जो हमारे उपभोक्ताओं के लिए खाना पकाने का एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करता है। हमारी नई रेंज हमारी मजबूत टेक्नोलॉजी और क्रॉम्प्टन की इंजीनियरिंग विशेषज्ञता के संयोजन का परिणाम है, हमने एक शक्तिशाली साझेदारी की है जोकि ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करती है। इस सहयोग के साथ, हम इंडस्ट्री में नए मानदंड स्थापित कर रहे हैं और भारत के घरों में खाना पकाने के अनुभव को बेहतर बना रहे हैं।

त्यौहारी सीजन आने वाला है और उपभोक्ता उत्साह से अपने प्रियजनों के साथ खाना पकाने और पार्टी करने का अनुभव करते हैं, यह वह समय होता है जब तरह-तरह की रेसिपीज बनाकर उनका आनंद उठाया जाता है। उच्च गुणवत्ता के किचन प्रोडक्ट्स की इच्छा को पहचानते हुए, जो खाना बनाने के अनुभव को बेहतर बनाते हैं और पारंपरिक खाना तैयार करने में आपकी मदद करते हैं, बटरफ्लाई ने उपभोक्ता केंद्रित उपकरणों की श्रृंखला विकसित की है जो खाना बनाने की प्रक्रिया को सरल और अत्यधिक आनंददायक बनाता है।

तदर्थ शिक्षकों का धरना 42वें दिन भी जारी शनिवार को एक और शिक्षक की हुई थी मौत

जन एक्सप्रेस। लखनऊ

तदर्थ शिक्षकों के धरने का सोमवार को 41वां दिन रहा। शिविर कार्यालय में प्रदर्शन के दौरान शिक्षकों में मायूसी रही। शनिवार रात एक साल से वेतन न मिलने की वजह से इलाज के अभाव में तदर्थ शिक्षक का निधन हो गया था। धरने पर बैठें शिक्षकों ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि देते हुए शोक जताया। इस दौरान कुछ शिक्षकों में भारी आक्रोश भी देखा गया। हालांकि अभी भी ज्यादातर शिक्षकों को भरोसा हैं कि सरकार जल्द ही वेतन निर्गत करने का आदेश जारी करेगी। तदर्थ शिक्षक संघ के संयोजक राजमणि सिंह का कहना है कि विपिन वर्मा अंबेडकरनगर के शास्त्री औद्योगिक इंटर कॉलेज कासिमपुर कर्बला सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत थे। वह बीमार थे। एक साल से वेतन न मिलने के कारण इलाज के अभाव में उनका निधन हो गया। उन्होंने बताया कि अब तक 35 तदर्थ शिक्षकों का बीमारी से निधन हो चुका है। धरने पर बैठे शिक्षकों ने सरकार की कड़ी निंदा की। 40 दिनों से तदर्थ शिक्षक अपने वेतन भुगतान के लिए धरना व याचना कर रहे हैं। इसके बावजूद वेतन का भुगतान नहीं किया गया।

बहराइच में एक अन्य शिक्षक की हुई थी कैंसर से मौत

इससे पहले 26 जून को भी एक शिक्षक की कैंसर से इलाज के आभाव मौत हो गई। बहराइच के महेंद्र कुमार मिश्रा के इलाज का खर्च परिवार उठाने में अक्षम था। साल भर से उनका वेतन रोक दिया गया था। उनकी मौत के बाद बेटी पल्लवी मिश्रा ने पिता की मौत के लिए सिस्टम को दोषी ठहराया था।

ओडीओपी के बाद अब ओबीओपी को भी प्रोत्साहित करेगी सरकार

प्रदेश में एग्रोप्रोसेसिंग के लिए किसानों को किया जायेगा जागरूक, डिजिटलाइजेशन से बढ़ेगी पारदर्शिता

जन एक्सप्रेस। लखनऊ

कृषि क्षेत्र को पूर्ण रूप से विकसित करने के लिए जल तथा मृदा संरक्षण के साथ-साथ फल-फूल, मत्स्य, पशुपालन, डेयरी को एकीकृत रूप से विकसित किया जायेगा। इसके लिए सीएम योगी ने एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) की तर्ज पर प्रदेश स्तर पर एक ब्लाक एक उत्पाद (ओबीओपी) को प्रोत्साहित किया जायेगा। प्राथमिक क्षेत्र के उत्पादों को अच्छा बाजार मूल्य मिल सके, इसके लिए गुणवत्तापूर्ण उत्पादों को बढ़ावा देकर एग्रोप्रोसेसिंग के लिए किसानों को जागरूक किया जायेगा।

कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि हमें कृषि क्षेत्र को बैक टू बेसिक के साथ-साथ टेक्नोफ्रैंडली बनाना होगा, जिससे किसानों के जीवनस्तर में सुधार किया जा सके। उत्तर प्रदेश को सर्वोत्तम प्रदेश बनाने के लिए कृषि तथा प्राथमिक क्षेत्र की भूमिका अति महत्वपूर्ण रहने वाली है। इसके लिए प्रदेश सरकार द्वारा किसानों की लागत को घटाकर गुणवत्तापूर्ण उत्पाद तैयार करके उनकी आय में वृद्धि करने के लिए खेत तथा आधुनिक तकनीक के बीच प्रभावी सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है।

यूपी में कृषि उत्पादकता में हुई वृद्धि

इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में सोमवार को यूपी एग्रीटेक कान्क्लेव 2023 के उद्घाटन अवसर पर कृषि मंत्री ने बताया कि 6 वर्षों में प्रदेश की कृषि उत्पादकता में सराहनीय वृद्धि हुई है। इसके साथ ही सरकारी सुविधाओं में पारदर्शिता बढ़ाने के लिए प्रत्येक स्तर पर डिजिटलाइजेशन किया जा रहा है। कृषि क्षेत्र को अधिक लाभदायी बनाने के लिए नयी खाद्य प्रसंस्करण नीति पर भी कार्य किया जा रहा है। सरकार का लक्ष्य है कि कृषि क्षेत्र के लिए जो स्टार्टअप तकनीक का विकास किया जा रहा है, उनकी तकनीक किसानों द्वारा अपनाई जाए।

G20 उत्तर रेलवे आज़ादी का अमृत महोत्सव

खुली निविदा सूचना (ई-निविदा)

भारत के राष्ट्रपति की ओर से मंडल रेलवे प्रबंधक (इंजीनियरिंग), उत्तर रेलवे लखनऊ द्वारा निम्नलिखित **दोहरी पैकेट पद्धति** कार्य हेतु ई निविदा प्रणाली द्वारा जिसकी अंतिम निविदा तिथि दिनांक **24.08.2023** को 15.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। इस निविदा के मैनुयल आफर स्वीकार नहीं किये जायेगें यदि कोई मैनुयल आफर आता है तो उस पर विचार नहीं किया जायेगा।

1	निविदा सूचना संख्या	08602023 दिनांक 31.07.2023	
2	निविदा संख्या	13-Sr.DEN-III/LKO/2023-24 14-Sr.DEN-III/LKO/2023-24	
3	कार्य का नाम	1	उत्तर रेलवे लखनऊ मण्डल में अमृत भारत स्टेशन योजना के अर्न्तगत लोहता, व्यासनगर, शिवपुर तथा बाबतपुर स्टेशन के उन्नयन एवं विकास का कार्य।
		2	उत्तर रेलवे लखनऊ मण्डल में अमृत भारत स्टेशन योजना के अर्न्तगत शाहगंज, अकबरपुर तथा ज़फराबाद स्टेशन के उन्नयन एवं विकास का कार्य।
4	अनुमानित लागत	1	Rs. 34,27,45,758.52
		2	Rs. 18,25,11,002.46
5	धरोहर राशि	1	Rs. 18,63,700.00
		2	Rs. 10,62,600.00
6	कार्य की समापन अवधि	क्र0सं0 1 एवं 2 के लिये	स्वीकृत पत्र जारी करने की तिथि से 12 माह।
7	निविदा डालने का प्रारंभ	10-08-2023	
8	निविदा बंद होने की तिथि एवं समय	24-08-2023 at 15:00 hrs.	
9	बेबसाईट	www.ireps.gov.in	

नोट :-
1. निविदा संबंधी अन्य विस्तृत विवरण उक्त वेबसाईट पर उपलब्ध है। 2358/2023

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

जन एक्सप्रेस

सम्पादकीय

सावन का महीना और यादों में झूले...

अब वक्त ने ऐसी करवट ली है कि सावन तो आता है पर अपने रंग नहीं बिखेर पाता। जिस सावन के आते ही नववधु ससुराल से मायके पहुंच जाती थी। अब वैसा सावन नहीं होता है। झूले की परम्परा लुप्त होने के साथ ही सावन भादो की खुशबू अब कहीं नहीं दिखती है। कुछ स्थानों को छोड़कर लोग इसका आनंद नहीं ले पा रहे हैं। झूलों के नहीं होने से हमें लोक संगीत भी सुनने को नहीं मिलता है। आधुनिकता की दौड़ में प्रकृति के संग झूला झूलने की बात अब कहीं नहीं दिखती है। आज से दो दशक पहले तक झूलों और मेंहदी के बिना सावन की परिकल्पना भी नही होती थी।

पड़ गए झूले सावन रुत आई रे, सीने में हूक उठे अल्लाह दुहायी रे...। ऐसे गाने सावन आते ही लोगों की जुबान पर खुद-ब-खुद आ जाते हैं। पहले सावन शुरू होते ही गांव की गलियों से लेकर शहरों तक झूले पड़ते थे। महिलाएं झूला झूलतीं और गाती थीं। सावन और भादो का महीना हमें प्रकृति के और निकट ले जाता है। झूला झूलने के दौरान गाए जाने वाले गीत मन को सुकून देते हैं। झूले गांव के बागीचों और मंदिर के परिसरों में डाले जाते थे। सावन को बहुत पवित्र महीना माना जाता है। मान्यता है कि सावन में माता पार्वती ने भगवान शिव की तपस्या करके उन्हें पाया था। सावन दक्षिणायन में आता है जिसके देवता शिव हैं। इसीलिए इन दिनों उन्हीं की आराधना शुभ फलदायक होती है। सावन के महीने में बहुत वर्षा होती है। इसलिए इसे वर्षा ऋतु का महीना या पावस ऋतु भी कहा जाता है। भारतीय संस्कृति में झूला झूलने की परम्परा वैदिक काल से है। श्रीकृष्ण-राधा संग झूला झूलते और गोपियों संग रास रचाते थे। मान्यता है कि इससे प्रेम बढ़ने के अलावा प्रकृति के निकट जाने एवं उसकी हरियाली बनाए रखने की प्रेरणा मिलती है। एक दौर था जब लोगों को सावन के महीने का बेसब्री से इंतजार रहता था। लड़कियां ससुराल से मायके आती थीं। लेकिन अब ये परंपरा खत्म होती जा रही है। अब न तो झूले पड़ते हैं और न गीत सुनाई देतें है। सावन शुरू हो गया है, लेकिन इसका अहसास ही नहीं हो रहा है। उमंग और खुमारी का संगम इसी महीने में हरियाली तीज पर खत्म होता था। सखियों को सुख-दुख बांटने, साथ बैठकर मेहंदी लगाने की परंपरा फिर गीत गाना सब गुम हो चुका है। बच्चे अब झूले नहीं वीडियो गेम में मस्त रहते हैं। महिला संगठन भी अब किटी पार्टी जैसे आयोजनों तक सीमित हैं। झूले की परम्परा लुप्त होने के पीछे सबसे प्रमुख वजह मनोरंजन के भरपूर साधनों का होना भी हैं। सावन के आते ही गली-कूचों और बगीचों में मोर, पपीहा और कोयल की मधुर बोली के बीच युवतियां झूले का लुत्फ उठाया करती थीं। अब न तो पहले जैसे बाग-बगीचे रहे और न ही मोर की आवाज सुनाई देती है। अब बिना झूला झूले ही सावन गुजर जाता है। वन माफिया के चलते गांवों में भी बाग-बगीचे नहीं बचे हैं, जहां युवतियां झूला डाल कर झूल सके। गांवों की बुजुर्ग महिलाएं बताती हैं कि सावन आते ही बेटियां ससुराल से मायके बुला ली जाती थीं और पेड़ों पर झूला डाल कर झूलती थीं। त्योहार में बेटियों को ससुराल से बुलाने की परम्परा तो आज भी चली आ रही है। लेकिन जगह के अभाव में न तो कोई झूला झूल पाता है और न ही अब मोर, पपीहा व कोयल की सुरीली आवाज ही सुनने को मिलती है। दस साल पहले तक रक्षाबंधन तक झूले का आनंद लिया जाता था। गांवों के पेड़ों पर मोटी रस्सी से झूला डाला जाता था और सारे गांव की बहन-बेटियां झूलती थीं। अब पेड़ ही नहीं हैं तो झूला कहां डालें। सावन के महीने में नवविवाहित महिलाओं को अपने मायके जाने की परम्परा राजस्थान में तो आज भी चली आ रही है। समय के साथ पेड़ गायब होते गए और उनके स्थान पर बहुमंजिला इमारतों के बनने से आंगन का अस्तित्व समाप्त हो गया। ऐसे में सावन के झूले भी यादें बनकर हमारी परम्परा से गायब हो रहे हैं। जन्माष्टमी पर मंदिरों में सावन की एकादशी के दिन भगवान को झूला झुलाने की परम्परा जरूर अभी भी निभाई जा रही है।सावन में झूला झूलना मात्र आनंद की अनुभूति नहीं कराता अपितु यह स्वास्थ्यवर्धक यौगिक क्रिया भी है। सावन में चारों तरफ हरियाली छाई होती है। हरा रंग आंखों पर अनुकूल प्रभाव डालता है। इससे नेत्र ज्योति बढ़ती है। झूला झूलते समय श्वांस-उच्छ्वास लेने की गति में तीव्रता आती है। इससे फेफड़े सुदृढ़ होते हैं। इसके साथ ही झूलते समय श्वांस अधिक भरा, रोका एवं वेग से छोड़ा जाता है।

एक्सप्रेस आलेख

एक दौर में हर साल सैकड़ों निकाह होते थे,जब दूल्हा पाकिस्तानी होता था और दुल्हन हिन्दुस्तानी। इसी तरह से सैकड़ों शादियों में दुल्हन पाकिस्तानी होती थी और दूल्हा हिन्दुस्तानी। सरहद के आरपार निकाह इसलिए बंद हो गए, क्योंकि पाकिस्तान लगातार भारत में आतंकवादी घटनाओं को अंजाम देता रहा। वीजा और फिर नागरिकता पाने के झंझट से बचने के लिए बहुत सारे लोग सीमा के उस पार अपना जीवन साथी खोजना बंद कर चुके हैं। पाकिस्तान के भारत के खिलाफ छद्म युद्ध जारी रखने की नीति के कारण दोनों देशों के नागरिकों को ही सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। मुंबई हमलों से पहले दिल्ली-मुंबई में पाकिस्तान से शायर, लेखक, फिल्मी कलाकार बराबर आते रहते थे।

सीमा और अंजू की प्रेम कहानी में पाक की चाल तो नहीं

आर.के. सिन्हा

पाकिस्तान के मशहूर शायर अहमद फराज का एक मशहूर शेर है ''रंजिश ही सही, दिल ही दुखाने के लिए आ, आ फिर से मुझे छोड़ के जाने के लिए आ।' खैर, हर हालत में भारत की सुरक्षा और जांच एजेंसियों को यह गहराई से जाँच कर पता लगाना चाहिए कि सीमा कैसे भारत आ गई और अंजू भारत से पाकस्तान कैसे चली गई।

आजकल सोशल मीडिया पर सीमा और अंजू की मोहब्बत से जुड़ी कहानियों को चटकारे लगाकर पेश किया जा रहा है। पर इस तरफ ध्यान नहीं दिया जा रहा है कि कहीं इन दोनों के कथित इश्क में पाकिस्तान की खुफिया एजेंसियों का कोई रोल तो नहीं है। ये आप सभी जानते हैं कि सीमा एक पाकिस्तानी महिला है। उसका ग्रेटर नोएडा के सचिन नाम के नौजवान से सोशल मीडिया पर इश्क का परवान चढ़ा तो वो अपना वतन और शौहर को छोड़कर नेपाल होते हुए अपने प्रेमी के पास आ गई। वो अपने साथ अपने बच्चों को भी ले आई। उधर, राजस्थान के भिवाड़ी में रहने वाली दो बच्चों की मां अंजू पाकिस्तान चली गई अपने प्रेमी से मिलने। वहां उसने निकाह के बाद इस्लाम धर्म को कुबूल भी कर लिया। अब अंजू हो गई है फातिमा। अंजू की फेसबुक के जरिये पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वाह प्रान्त में रहने वाले 29 साल के नसरूल्लाह से दोस्ती हुई थी, यह बताया जा रहा है। पर यहां हम बातें करेंगे उस बड़े सवाल की, जिसकी तरफ ध्यान देने की जरूरत है। पहले बात सीमा की। सीमा बिना किसी पासपोर्ट या वीजा के नेपाल के रास्ते भारत आ गई। एक बार हम यह मान भी लेते हैं कि वह पाकिस्तान की किसी खुफिया एजेंसी से संबंध नहीं भी रखती होगी। पर एक दुश्मन देश की नागरिक का अपने चार छोटे बच्चों के साथ नेपाल से बिना किसी अवरोध या मदद के या गतिरोध ग्रेटर नोएडा तक आसानी से पहुंचना गंभीर सवाल तो खड़े करता ही है। इसी तरह से नेपाल के रास्ते पाकिस्तानी आतंकवादियों को भारत में कत्लेआम मचाने के लिए भी तो भेजा जा सकता है। उसने 2008 में मुंबई में भी तो यही तो किया था। उसके बाद मुंबई हमेशा-हमेशा के लिए बदल गयी। 26 नवंबर 2008 को पाकिस्तान के आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के 10 आतंकवादियों ने समुद्री मार्ग से मुंबई में प्रवेश किया और अचानक मुम्बई के बाजारों चौराहों पर हमला कर दिया। उस आतंकी हमले में सैकड़ों लोगों की जानें चली गईं और हजारों करोड़ रुपए की संपत्ति तबाह हो गई। इसके बावजूद पाकिस्तान में उस हमले के मास्टर माइंड खुलेआम घूम रहे हैं। अगर कोई सोच रहा है कि मुंबई हमलों के बाद सब कुछ शांत हो गया था, तो वे फिर पठानकोट और उसके बाद उरी की घटनाओं को भी जरा याद कर लें। कहने का मतलब यह है कि हमें जागना होगा। हमें याद रखना होगा कि पाकिस्तान किसी भी रास्ते से भारत की पीठ पर वार कर सकता है। क्या यह संभव नहीं है कि पाकिस्तान की ही खुफिया एजेंसियों ने ही सीमा को भारत में भेजा हो ताकि टोह ली जा सके कि हमारे निगाहबान कितने सतर्क हैं? अब बात कर लेन अंजू से फातिमा बनी महिला की। यह सवाल तो पूछा ही जाएगा कि उसे मजे-मजे में पाकिस्तान का वीजा कैसा मिल गया। पाकिस्तानी एंबेसी से भारतीय नागरिकों को बहुत कम वीजा ही मिलते हैं। आप कभी पाकिस्तानी एँबेसी के गेट के बाहर जाकर खुद देख लें। उनका वीजा देने वाला गेट नेहरू पार्क की तरफ है। वहां पर बुजुर्ग मुसलमान वीजा के लिए सुबह से शाम तक बैठे होते हैं। वे सरहद के उस पार अपने करीबियों को मिलने जाना चाहते हैं। पर उन्हें पाकिस्तान वीजा देने से इंकार करता रहता है। इसलिए ही ये सवाल पूछने का मन कर रहा है कि पाकिस्तान एंबेसी ने अंजू को अपने दोस्त से मिलने का वीजा कैसे दे दिया? पाकिस्तान में मुहाजिरों के हकों के लिए लड़ने वाली मुताहिदा कौमी मुवमेंट (एमक्यूएम) के नेता अल्ताफ हुसैन 2004 में राजधानी दिल्ली आए थे। वे तब कह रहे थे कि दोनों पड़ोसी मुल्कों के संबंध खराब होने के कारण देश के बंटवारे के समय बंट गए परिवार भी हमेशा-हमेशा के लिए एक-दूसरे से दूर हो गए। कारण यह है कि अब दोनों देशों का वीजा लेना मुश्किल हो गया है। भारत तो पाकिस्तान के नागरिकों को वीजा देने में इसलिए बहुत एहतियात बरतता है, क्योंकि; वहां से पाकिस्तान भारत में आतंकी तत्वों को भेजता रहा है। हालांकि वहां से हजरत निजामउद्दीन औलिया के उर्स में भाग लेने के लिए इस बार भी बहुत से तीर्थ यात्रियों को भारत ने वीजा दिया था। पर पाकिस्तान तो भारत के लेखकों, पत्रकारों, डाक्टरों को भी वीजा देने से आनाकानी करता है। पर उसने अकेली अंजू को वीजा देने में गजब की जल्दी दिखाई। इसलिए शक तो होता है कि आखिर पाकिस्तान ने किस वजह से उसे फटाफट वीजा दिया। एक दौर में हर साल सैकड़ों निकाह होते थे,जब दूल्हा पाकिस्तानी होता था और दुल्हन हिन्दुस्तानी। इसी तरह से सैकड़ों शादियों में दुल्हन पाकिस्तानी होती थी और दूल्हा हिन्दुस्तानी। सरहद के आरपार निकाह इसलिए बंद हो गए, क्योंकि; पाकिस्तान लगातार भारत में आतंकवादी घटनाओं को अंजाम देता रहा। वीजा और फिर नागरिकता पाने के झंझट से बचने के लिए बहुत सारे लोग सीमा के उस पार अपना जीवन साथी खोजना बंद कर चुके हैं। पाकिस्तान के भारत के खिलाफ छद्म युद्ध जारी रखने की नीति के कारण दोनों देशों के नागरिकों को ही सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। मुंबई हमलों से पहले दिल्ली-मुंबई में पाकिस्तान से शायर, लेखक, फिल्मी कलाकार बराबर आते रहते थे। दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में पाकिस्तान के मशहूर शायर अहमद फराज को लगातार देखा जा सकता था। उनका एक मशहूर शेर है ''रंजिश ही सही, दिल ही दुखाने के लिए आ, आ फिर से मुझे छोड़ के जाने के लिए आ।' खैर, हर हालत में भारत की सुरक्षा और जांच एजेंसियों को यह गहराई से जाँच कर पता लगाना चाहिए कि सीमा कैसे भारत आ गई और अंजू भारत से पाकिस्तान कैसे चली गई। इन दोनों के कथित प्रेम के पीछे का सच सामने आना ही चाहिए। पाकिस्तान हमें बार-बार नुकसान पहुंचाता रहा है। वहां पर आम लोगों की जिंदगी कठिन होती जा रही है।

पाकिस्तानी एंबेसी से भारतीय नागरिकों को बहुत कम वीजा ही मिलते हैं। आप कभी पाकिस्तानी एँबेसी के गेट के बाहर जाकर खुद देख लें। उनका वीजा देने वाला गेट नेहरू पार्क की तरफ है। वहां पर बुजुर्ग मुसलमान वीजा के लिए सुबह से शाम तक बैठे होते हैं।

एक्सप्रेस कविता

फ़क़ीरों को भला किसका डर होगा,
है खुदा, तो भला किसका डर होगा।
खुशियाँ बाँटिए, तेजी से हैं बढ़ती,
गमों का भला हम पर क्या असर होगा।
उसके लिए है हर पल आनंद ही आनंद
फसानों का भला उस पर क्या कहर होगा।
दो पल की माया है दौलत, शोहरत,
फकीरों के लिए यह बड़ा जहर होगा।
खुशी और गम,सिक्के के दो पहलू,
सोचो गम न हो तो कैसा शहर होगा।
जिंदगी की जंग जीतेगा वहीं,
जो ईमान का सच्चा हमसफ़र होगा।
आज जी ले,जोश जूनून के संग,
अगला पल,बेइंतहा बेहतर होगा।

-संजीव ठाकुर

एक्सप्रेस ज्ञान

यदि पैसा किसी व्यक्ति को दूसरों के लिए अच्छा करने में मदद करता है, तो यह कुछ मूल्य है, लेकिन यदि नहीं, तो यह केवल बुराई का द्रव्यमान है, और जितनी जल्दी इससे छुटकारा मिल जाएगा, बेहतर होगा।

आज का पंचांग

किसी भी शुभ कार्य को करने के लिए सही मुहूर्त, सही समय, और सही नक्षत्र का होना जरुरी होता है, आज हम आपको आज के दिन का सही समय जो की सही कार्य करने का है, और आज कब कौन सी दशा कौन से टाइम में चल रही है उसका समुचित विवरण हिन्दू कैलेंडर और हिन्दू पंचांग के अनुसार दे रहे है, आज आपका दिन मंगलमयी रहे, यही शुभकामना है। आज का दिन शुभ कार्य के लिए सही कार्य है या नहीं आज के चौघड़िया के अनुसार जानें। अगर आप आज वाहन खरीदने का विचार कर रहे हैं या आज कोई नया व्यापार आरंभ करने जा रहे हैं, गृह प्रवेश कर रहे हैं, गृह निर्माण कर रहे है, प्रॉपर्टी खरीद रहे है, या कोई अन्य शुभ कार्य करने के लिए सोच रहे है तो पहले यहाँ सही समय देख लें, आपका कार्य शुभ और सफल होगा, यही हमारी ओर से शुभ मंगल कामना है।

तिथि:	पूर्णिमा 24:00 तक
नक्षत्र:	उत्तराषाढ़ा 15:54 तक
पक्ष:	शुक्ल
वार:	मंगलवार
योग:	प्रीति, 18:49
सूर्योदय:	05:46
सूर्यास्त:	19:08
चंद्रमा:	मकर राशि में
राहुकाल:	15:47-17:28
विक्रमी संवत्:	2080
शक सम्वत:	1944
मास:	श्रावण (अधिकमास)
शुभ मुहूर्त:	12:00-12:54

जन एक्सप्रेस

फसल रहा अब काट !

बोया था आतंक ।
फसल रहा अब काट ।।
है बैठा बारुद पर ।
कौन लगाए डांट ।।
जन्म हुआ है जब से ।
यही है इसका खेल ।।
लेकिन हुआ ज़रुरी ।
कसना भी नकेल ।।
झुलस रहा पर ऐसे ।
मुश्किल है सुधार ।।
करना होगा ठीक से ।
इस पर नया प्रहार ।।
हो ऐसी रणनीति ।
बन जाए कुछ काम ।।
वरना हर पल इसी तरह ।
है मचना कोहराम ।।

- कृष्णेन्द्र राय

एक्सप्रेस स्वास्थ्य

आयुर्वेद के अनुसार फल खाते समय ध्यान रखें ये नियम, सेहत को मिलेगा दोगुना लाभ

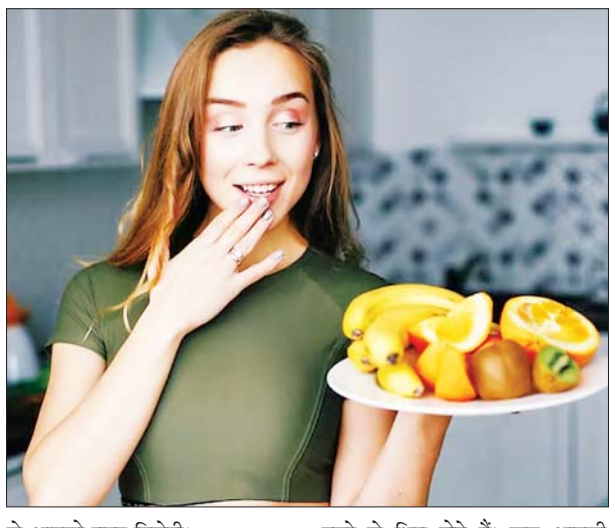

मानव स्वास्थ्य के लिए फल प्रकृति के दिए किसी वरदान से कम नहीं है। फल खाने से सेहत को जबरदस्त लाभ मिलते हैं। इनमें स्वास्थ्य के लिए लगभग सभी जरूरी आवश्यक पोषक तत्व होते हैं। साल भर हम देखते हैं कि बाजार तरह-तरह के फलों से भरा रहता है। डॉक्टर हमेशा सलाह देते हैं कि हमें अपनी रोज की डाइट में कोई एक फल जरूर शामिल करना चाहिए। क्या आप जानते हैं, भले ही फलों का सेवन बहुत फायदेमंद होता है, लेकिन इनका सेवन करते समय कुछ जरूरी नियमों का ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है। अगर आप गलत तरीके से फलों का सेवन करते हैं, तो यह आपकी सेहत को फायदे से अधिक नुकसान पहुंचा सकते हैं। ऐसे में यह जरूरी है कि फल खाने के कुछ बुनियादी नियम जान लें।

हमेशा पके हुए फल चुनें: हमेशा कच्चे फलों की बजाए पके हुए फलों का सेवन करें। या कच्चे फलों का पकने का इंतजार करें और उसके बाद इनका सेवन करें। अगर आप उन लोगों में से हैं, जिन्हें अपच, एसिडिटी, ब्लोटिंग, गैस, हार्टबर्न औ ब्लोटिंग आदि जैसी समस्याएं रहती हैं, तो ऐसे में सबसे अधिक पका हुआ फल खाने से आपको राहत मिलेगी।

मौसम के अनुसार फल खाएं: प्रकृति आपको हमेशा मौसम में परिवर्तन और समय के अनुसार सही फल प्रदान करती है, जो आपको साल भर देखने को मिलते हैं। हमेशा वह फल खाएं, जो मौसम के अनुसार बाजार में देखने को मिलते हैं।

दूध के साथ फलों को मिक्स न करें: आयुर्वेद के अनुसार, फलों के साथ दूध मिलाकर सेवन करना आपके पाचन को नुकसान पहुंचा सकता है। दूध और फल दोनों ही प्रकृति में एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। जब आपकी इनका साथ में सेवन करते हैं, तो इससे पाचन संबंधी समस्याएं देखने को मिलती हैं।

मोडरेशन में खाएं: हमेशा ध्यान रखें कि आपको फल का सेवन अधिक मात्रा में न करें। फल को पचने के लिए पेट में एक अलग तरह के वातावरण की जरूरत होती है। इसलिए आपको मोडरेशन में इनका सेवन करना चाहिए। इसके अलावा, अगर आपकी आंत की परत में सूजन है, तो आपको हमेशा फलों को थोड़ा पकाकर खाना चाहिए।

एक्सप्रेस विशेष

वर्ल्ड वाइड वेब दिवस: इंटरनेट की मायावी दुनिया

योगेश कुमार गोयल

सर्च इंजन में कोई शब्द या वाक्य टाइप कर उससे संबंधित जानकारी चाहते हैं तो सर्च इंजन उस शब्द या वाक्य से संबंधित पृष्ठों की एक विस्तृत सूची बनाकर आपके सामने लाकर रख देता है, 'गूगल', 'याहू', 'खोज' इत्यादि कुछ ऐसे सर्च इंजन हैं, जो आज दुनियाभर में प्रसिद्ध हैं।

इंटरनेट ज्ञान और मनोरंजन का ऐसा खजाना है, जिसके माध्यम से किसी एक कोने में बैठकर आप दुनिया भर की सैर कर सकते हैं। कहना गलत नहीं होगा कि इंटरनेट के माध्यम से विश्वभर की हर प्रकार की महत्वपूर्ण जानकारी को एक छोटे से बंद कमरे में रखे कम्प्यूटर या मोबाइल फोन की स्क्रीन पर समेटकर ला देने वाला मूल मंत्र वर्ल्ड वाइड वेब आज हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। यह शब्द प्रतिदिन दुनियाभर में करोड़ों कम्प्यूटरों पर असंख्य बार टाइप किया जाता है। क्या आपने कभी सोचा है कि 'डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू' नामक इंटरनेट की मायावी दुनिया में प्रवेश कराने वाली यह खिड़की कब और कैसे अस्तित्व में आई? वर्ष 1989 में 'डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू' नामक इस मायावी शब्द को जन्म दिया था ऑक्सफोर्ड के क्वींस कॉलेज से ग्रेजुएशन कर चुके टिम बर्नर्स ली ने। वर्तमान में वेबपेज से जुड़ने या उसका निर्माण करने के लिए जो भी तरीके अपनाए जाते हैं, उनके पीछे बर्नर्स का ही दिमाग है। 08 जून 1955 को लंदन में जन्मे बर्नर्स ली ने 1976 में ऑक्सफोर्ड के क्वींस कालेज से ग्रेजुएशन किया और उसी दौरान मात्र 21 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने अपने लिए एक छोटा सा

यदि आप किसी खास विषय से संबंधित जानकारी पाना चाहते हैं तो अपनी खोज को विशेष बनाने के लिए टाइप किए जाने वाले शब्दों के साथ चिह्नों का प्रयोग कर सकते हैं। यदि आप चाहते हैं कि आपके खोजे जा रहे वेबपज पर इंदिरा और राजीव दोनों का ही नाम हो तो आप सर्च इंजन के टूल बार में इंदिरा राजीव टाइप करके एंटर कर दें। आपकी यह मनपसंद जानकारी कुछ ही पलों में आपके सामने होगी।

कम्प्यूटर सेट बना लिया। बर्नर्स ली के दिमाग में 1980 में अचानक ही 'डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू' से संबंधित शुरुआती विचार आया। उस दौरान वह एक कम्पनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में कार्य कर रहे थे। तब उन्होंने कम्प्यूटर में मौजूद विभिन्न फाइलों को आपस में जोड़ने के लिए 'इनक्वायर' नामक एक प्रोग्राम तैयार किया था। वह कम्प्यूटर पर मौजूद अपने दस्तावेजों और फाइलों को खोलने के लिए कुछ खास कोड नंबरों का प्रयोग करते थे और उनका यह तरीका कम्प्यूटर पर सफलतापूर्वक काम भी करता था किन्तु उन्होंने इससे भी आगे कुछ करने की ठानी। बर्नर्स ली एक ऐसा ग्लोबल प्रोजेक्ट बनाना चाहते थे, जिसकी मदद से दुनिया के सभी कम्प्यूटरों को एक व्यापक सूचना तंत्र से जोड़ा जा सके और उन्हें अपने उद्देश्य में सफलता भी मिली। वह इंटरनेट के जरिये दुनियाभर के लोगों को सूचनाओं के एक विस्तृत नेटवर्क से जोड़ पाने में सफल हो गए। इस तरह इंटरनेट पर 'डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू' की शुरुआत 1991 में हुई। टिम बर्नर्स-ली को एक इंटरनेट-आधारित संचार प्रणाली विकसित करने में उनकी रचनात्मकता के लिए सम्मानित करने के लिए प्रतिवर्ष 01 अगस्त को 'वर्ल्ड वाइड वेब दिवस' मनाया जाता है। 1993 में इंटरनेट पर 'टेक्सट' के साथ-साथ पिक्चर्स व ग्राफिक्स का प्रसारण भी शुरू हो गया।

इससे धीरे-धीरे इसकी लोकप्रियता बढ़नी शुरू हो गई। आज इंटरनेट का उपयोग करने वालों की संख्या दुनिया भर में करोड़ों में हैं। आज इस बात से हर कोई परिचित है कि इंटरनेट ज्ञान और मनोरंजन का खजाना है पर आपको यह खजाना खोजना भी तो आना चाहिए। वर्ल्ड वाइड वेब पर एक ही विषय पर महत्वपूर्ण जानकारियों के असंख्य पृष्ठ भरे पड़े हैं, यदि आपको उनमें से अपने मतलब की जानकारी खोजने का तरीका ही मालूम नहीं हो तो आपके लिए यह सब किस काम के? मान लिया जाए कि जिस विषय पर आपको किसी जानकारी की आवश्यकता है, उससे संबंधित कुछ वेबसाइटों की आपको जानकारी भी है लेकिन यदि उन वेबसाइटों पर आपके मतलब की जानकारी न मिले, तब आप क्या करेंगे? आपकी इसी मुश्किल को आसान करता है इंटरनेट सर्च इंजन। इंटरनेट पर कुछ भी खोजते समय इंटरनेट सर्च इंजन ही आपकी मदद करता है। जिस भी विषय के बारे में आप जानकारी चाहते हैं, इंटरनेट सर्च इंजन के टूल बार में उसका नाम टाइप करने के बाद एक क्लिक करते ही यह उस विषय से संबंधित ढेरों पेज आपके सामने खुल जाते हैं और इस तरह आप अपनी जरूरत आसानी से पूरी कर सकते हैं।

दरअसल सर्च इंजन एक ऐसा प्रोग्राम है, जो विभिन्न प्रोग्राम्स के तहत कार्य करता है और इंटरनेट पर उपलब्ध सभी वेबसाइटों के लाखों-करोड़ों पृष्ठों को अपने अंदर समेटे रहता है। यह वेब आधारित एक ऐसी विशेष साइट है, जिसकी सहायता से आप किसी भी विषय पर एकत्रित की गई सूचनाओं तक आसानी से पहुंच सकते हैं। जब भी आप सर्च इंजन में कोई शब्द या वाक्य टाइप कर उससे संबंधित जानकारी चाहते हैं तो सर्च इंजन उस शब्द या वाक्य से संबंधित पृष्ठों की एक विस्तृत सूची बनाकर आपके सामने लाकर रख देता है, 'गूगल', 'याहू', 'खोज' इत्यादि कुछ ऐसे सर्च इंजन हैं, जो आज दुनियाभर में प्रसिद्ध हैं।

कैसे शुरू हुई कांवड़ यात्रा की परंपरा? जानें कथा और मान्यताएं

कांवड़ यात्रा का महत्व कांवड़ को अपने कंधों पर रखकर लगातार यात्रा करते हैं और अपने क्षेत्र के शिवालयों में जाकर जलाभिषेक करते हैं।मान्यता है कि ऐसा करने से व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है और जीवन में कभी कोई कष्ट नहीं होता है। साथ ही घर में धन धान्य की कभी कोई कमी नहीं होती है और अश्वमेघ यज्ञ के समान फल मिलता है

जन एक्सप्रेस। सुनहरा

लखीमपुर खीरी। हमारे यहाँ अनेकानेक पर्व-त्यौहार मनाए जाते हैं।भिन्न-भिन्न धर्म पूजन देखने? को मिलता है।कावड़ में उमड़े श्रद्धालुओं की कतार एक पूजन यात्रा को किसी त्यौहार में बदल देती है।कहा जाता है प्रथम कावड़िया रावण थे उनके बाद श्री राम जी ने शिव की आराधना में कावड़ यात्रा की थी। इसी प्रकार कावड़ यात्रा आज तक स्वयंभू को प्रसन्न करने हेतु जारी है।कावड़ के शाब्दिक अर्थ पर जायें तो इसका अर्थ उस तपस्वी/श्रद्धालु से है जो नाना प्रकार की कठिन बाधाओं को पार कर भी अपने लक्ष्य से ना चूके,अडिग रहे। कावड़ धर्म में प्रचलित शब्द है लेकिन प्रयोग प्रत्येक उस स्थान पर किया जा सकता है जिस कार्य में कार्यकर्त्ता अपने लक्ष्य के प्रति मुश्किलों को अनदेखा कर मंजिल प्राप्त कर लेता है।

सावन का महीना शुरू होते होंने के साथ कांवड़ यात्रा भी शुरू हो चुकी है। सावन माह में शिव भक्त गंगाटट पर कलश में गंगाजल भरते हैं और उसको कांवड़ पर बांध कर कंधों पर लटका कर अपने अपने इलाके के शिवालय में लाते हैं और शिवलिंग पर गंगाजल अर्पित करते हैं। कांवड़ यात्रा को लेकर शिवभक्तों में खासा उत्साह देखने को मिलता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, कांवड़ यात्रा करने से भगवान शिव सभी भक्तों की मनोकामना पूरी करते हैं और जीवन के सभी संकटों को दूर करते हैं। पुराणों में बताया गया है कि कांवड़ यात्रा भगवान शिव को प्रसन्न करने का सबसे सहज रास्ता है।

कांवड़ यात्रा को लेकर पहली मान्यता

मान्यताओं के अनुसार,भगवान परशुराम ने सबसे पहले कांवड़ यात्रा की शुरुआत की थी। परशुराम गढ़मुक्तेश्वर धाम से गंगाजल लेकर आए थे और यूपी के बागपत के पास स्थित 'पुरा महादेव' का गंगाजल से अभिषेक किया था। उस समय सावन मास ही चल रहा था, इसी के बाद से कांवड़ यात्रा की शुरुआत हुई। आज भी इस परंपरा का पालन किया जा रहा है। लाखों भक्त गढ़मुक्तेश्वर धाम से गंगाजल लेकर जाते हैं और पुरा महादेव पर जल अर्पित करते हैं।

कांवड़ यात्रा को लेकर दूसरी मान्यता

आनंद रामायण में इस बात का उल्लेख मिलता है कि भगवान राम पहले कांवड़िया थे। भगवान राम ने बिहार के सुल्तानगंज से गंगाजल भरकर देवघर स्थित बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग का अभिषेक किया था। उस समय सावन मास चल रहा था।

कांवड़ यात्रा को लेकर तीसरी मान्यता

प्राचीन ग्रंथों में रावण को पहला कांवड़िया बताया है। समुद्र मंथन के दौरान जब भगवान शिव ने हलाहल विष का पान किया था, तब भगवान शिव का कंठ नीला हो गया था और वे तभी से नीलकंठ कहलाए थे। लेकिन हलाहल विष के पान करने के बाद नकारात्मक शक्तियों ने भगवान नीलकंठ को घेर लिया था। तब रावण ने महादेव को नकारात्मक शक्तियों से मुक्त के लिए रावन ने ध्यान किया और गंगाजल भरकर 'पुरा महादेव' का अभिषेक किया, जिससे महादेव नकारात्मक ऊर्जाओं से मुक्त हो गए थे। तभी से कांवड़ यात्रा की परंपरा भी प्रारंभ हो गई।

कांवड़ यात्रा को लेकर चौथी मान्यता

कुछ विद्वान का मानना है कि सबसे पहले त्रेतायुग में श्रवण कुमार ने पहली बार कांवड़ यात्रा शुरू की थी। श्रवण कुमार ने अंधे माता पिता को तीर्थ यात्रा पर ले जाने के लिए कांवड़ बैठया था। श्रवण कुमार के माता पिता ने हरिद्वार में गंगा स्नान करने की इच्छा प्रकट की थी, माता पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए श्रवण कुमार कांवड़ में ही हरिद्वार ले गए और उनको गंगा स्नान करवाया। वापसी में वे गंगाजल भी साथ लेकर आए थे। बताया जाता है कि तभी से कांवड़ यात्रा की शुरुआत हुई थी।

कांवड़ यात्रा को लेकर पांचवी मान्यता

मान्यताओं में बताया गया है कि समुद्र मंथन के दौरान जब महादेव ने हलाहल विष का पान कर लिया था, तब विष के प्रभावों को दूर करने के लिए भगवान शिव पर पवित्र नदियों का जल चढ़ाया गया था। ताकि विष के प्रभाव को जल्दी से जल्दी कम किया जा सके। सभी देवता मिलकर गंगाजल से जल लेकर आए और भगवान शिव पर अर्पित कर दिया। उस समय सावन मास चल रहा था। मान्यता है कि तभी से कांवड़ यात्रा की शुरुआत हो गई थी।

चौथे सोमवार को हर-हर महादेव से गूंजी छोटी काशी

जन एक्सप्रेस/लखीमपुर खीरी। सावन के चौथे सोमवार पर छोटी काशी गोला में कावड़ियों और शिव भक्तों का रेला उमड़ पड़ा। छोटी काशी की हर सड़क पर भगवाधारी कावड़ियों की हर हर महादेव की गूंज सुनाई देती रही। प्रशासन ने कांवड़ियों को सुरक्षित तरीके से मंदिर तक पहुंचाने के प्रबंध किए। इसके बाद भी मंदिर मार्ग पर लंबी कतारें लग गई। सावन के चौथे सोमवार को लेकर प्रशासन और मंदिर समिति कई दिनों से तैयारी में जुटे थे। भक्तों की भीड़ को देखते हुए रात के दो बजे भी मंदिर के कपाट खोल दिए गए। दूरदराज से आए भक्तों ने सूर्योदय से पहले ही भगवान भोलेनाथ के दर्शन किए और उनका जलाभिषेक भी किया। कांवड़ियों के आने का सिलसिला लगातार जारी है। सोमवार की सुबह 10 बजे तक छोटी काशी गोला की सड़कों से लेकर और हाईवे पर भगवाधारी कांवरियों का रेला चल रहा है। भीड़ के देखते हुए प्रशासन ने कांवड़ियों के वाहन शहर के बाहर बनाई गई पार्किंग में रुकवा दिए। लखीमपुर रोड पर कावड़ियों के लिए पार्किंग स्थल बनाया गया है, जहां प्रशासन ने पानी, शौचालय की सुविधाएं की है। सोमवार को शहर के अंदर भारी वाहनों का प्रवेश बंद रहा। यहां तक कि कारें भी नहीं चल सकी। मंदिर को जोड़ने वाले मार्गों पर प्रशासन ने ई रिक्शा भी बंद करा दिए। रोडवेज के सभी बसें बाईपास से गुजारी जा रही हैं।

श्रावण मास के चतुर्थ सोमवार श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़

जन एक्सप्रेस/लखीमपुर खीरी। अमीर नगर सावन के चतुर्थ सोमवार को बाबा टेढेनाथ धाम पर कावरियो तथा दूर दराज से आए शिव भक्तो की भीड रही। तथा पूरा मंदिर हर हर महादेव के जय घोस से गूंज उठा सूर्य उदय के पूर्व में बाबा टेढेनाथ धाम पर काबरियो तथा शिव भक्तो का पहुचना भरी संख्या में शुरु हो गए थे। भक्तो ने बेल पत्री फूल भांग धतूरा गंगा जल से अभिषेक किया। भगवान की पूजा अर्चना की मंदिर मे शिव भक्तो की भरी भीड रही। कई समाजिक और धार्मिक संगठनों ने काबरियो के स्वागत के लिए मंदिर परिसर में जलपान एवम भंडारे का आयोजन किया गया । सुरक्षा की दृष्ट से अमीर नगर पुलिस चौकी प्रभारी सतीश चन्द्र यादव, अरविंद सिंह चंदेल, कास्टेविल संदीप कुमार, अमरीश शुक्ला, देवांश, उर्वेश कुमार, राजीव यादव, वालंटियर आत्मानंद शुक्ला, मैयक तिर्वेदी, राममूर्ती यादव, अमित वाजपेयी, अनुराग वाजपेयी, पवन कुमार, सुभाष यादव, शुभेन्दर, पुनीत मिश्रा टेढेनाथ बाबा सेवा समिति के बलेंटियार उपस्थिति रहे।

डीएम ने की निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेज की प्रगति की समीक्षा

'मेडिकल कालेज निर्माण व्यापक जनहित की परियोजना, अनावश्यक लेटलतीफी पर तय होगी जवाबदेही'

जन एक्सप्रेस। लखीमपुर खीरी

सोमवार को जिले में बेहतरीन स्वास्थ्य सुविधाओं को विकसित करने के उद्देश्य से सोमवार को डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने कलेक्ट्रेट में निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेज की प्रगति की समीक्षा की, संबंधित को जरूरी निर्देश दिए।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए डीएम ने निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेज की सुस्त गति पर कड़ी नाराजगी जताई। इनका गुणवत्तापरक निर्माण तय समय सीमा के भीतर पूरा करने के निर्देश दिए। मेडिकल कालेज निर्माण परियोजना व्यापक जनहित की हैं। इनमें किसी भी दशा में विलंब स्वीकार नहीं है। निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर जोर दिया। चेताया कि निर्माण कार्यों में अनावश्यक लेटलतीफी पर जवाबदेही तय की जाएगी। कहीं कोई समस्या आ रही हो तो उन्हें एवं सीडीओ को जानकारी दें। समीक्षा बैठक में डीएम ने मेडिकल कॉलेज के अस्पताल भवन विंग-ए, विंग-बी, विंग-सी, रेजीडेंट डॉक्टर हॉस्टल, नर्स हॉस्पिटल, मेडिकल कॉलेज परिसर निर्माण की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की एवं संबंधित को दिशा निर्देश दिए। समीक्षा के दौरान उत्तरदायित्व अफसरों ने बताया कि अस्पताल भवन विंग-डी ब्लॉक में वर्तमान में कार्यरत सिटी स्कैन की शिफ्टिंग का प्रस्ताव प्रमुख सचिव, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य उप्र शासन में लंबित है, जिसके कारण शिफ्टिंग का कार्य नहीं किया जा सका। डीएम ने सीएमओ, सीएमएस (पुरुष) को निर्देश दिए कि व्यक्तिगत प्रयास कर प्रेषित प्रस्ताव का यथाशीघ्र निस्तारण कराएं। बैठक में सीएमएस डॉ ज्योति मल्होत्रा ने अवगत कराया कि मेडिकल कॉलेज निर्माण के चलते जिला महिला अस्पताल परिसर में जलभराव हो रहा, जिससे गर्भवती, धात्री महिलाओं को निकलने में असुविधा हो रही। डीएम ने कार्यदाई संस्था निर्देश दिए कि बिना किसी शिथिलता के जलभराव की समस्या से दो दिन के भीतर दूर कराए। सीडीओ अनिल कुमार सिंह ने कहा कि मेडिकल कॉलेज के निर्माण समयबद्ध ढंग से गुणवत्ता के साथ पूरा किया जाए। उन्होंने फेजवार निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेज की प्रगति जानी, जरूरी निर्देश दिए। कार्य में किसी भी प्रकार की समस्या आए तो तत्काल अवगत कराएं। बैठक में सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता, सीएमएस डॉ एससी श्रीवास्तव, सीएमएस डॉ ज्योति मल्होत्रा, कंसलटेंट एजेंसी डीएलएफ की टीम, डीएसटीओ अरविंद वर्मा सहित निर्माण संस्था से जुड़े प्रतिनिधि, अन्य संबंधित अफसर मौजूद रहे।

तालाब पर अवैध अतिक्रमण करने वाले 12 लोगों को नोटिस

जन एक्सप्रेस। राजीव दिवाकर

सीतापुर (सिधौली)। आज सोमवार को नगर पंचायत सिधौली की ईओ रेणुका यादव ने सीतापुर रोड स्थित तालाब का निरीक्षण किया। ईओ ने तालाब में मलवा डालने वाले 12 व्यक्तियों को चिन्हित कर उन्हें नोटिस जारी की है ।

ईओ रेणुका यादव ने बताया कि नगर पंचायत सिधौली में एन एच 24 हाइवे के किनारे सीतापुर रोड स्थित तालाब के पास 12 व्यक्तियों द्वारा अपनी दुकाने रख कर तालब को कूड़ा डाल कर पाटा जा रहा था। जिसका आज निरिक्षण कर सभी 12 व्यक्तियों को चिन्हित कर उन्हें तत्काल प्रभाव से अवैध अतिक्रमण हटाने हेतु निर्देशित किया गया और उन्हें नोटिस जारी की गयी है।

ब्यालन माल सुचंद्र सुभाल गुलाल न सालन भस्म रमाए, देव बड़े सुघरे शिव वरदान मिले बसि गाल बजाए...

जन एक्सप्रेस। सीतापुर

स्थानीय लालबाग स्थित हिंदी -सभा भवन के नरोत्तम सभागार में साप्ताहिक काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता करते हुए झंकारनाथ शुक्ल ने सावन माह में शिवजी का स्मरण करते हुए कहा ब्यालन माल सुचंद्र सुभाल गुलाल न सालन भस्म रमाए, देव बड़े सुघरे शिव जी वरदान मिले बसि गाल बजाए। मुख्य अतिथि राजकुमार तिवारी ने ओज के स्वरों में कहा, चांद तारे न मुझको गगन चाहिए, माल दौलत न ऊंचे भवन चाहिए, शीश पर पावनी धूल इसकी धरूं, हर जनम में मुझे यह वतन चाहिए। विशिष्ट अतिथि डॉ. सतीश चंद्र वर्मा ने कहा, ज्योति जीवन जली प्रभु कृपा आपकी जो सुयश पूर्ण आनंद जीवन जिया, जो कभी दीन था आज संभ्रांत है यह करिश्मा प्रभू आपका है किया। रमाशंकर मिश्र ने कहा, झूठ जब भी फन उठाये उसको कुचल ही दीजिए, सत्य सिंहासन चढ़े कुछ यत्न ऐसा कीजिए, तर्क को इतना न खींचें कि युद्ध होकर ही रहे, संवाद की ठंडी हवा कुछ तो आनी चाहिए। भगवती गुप्त ने कहा, सदा संवेदना संवाद के नव गीत गाएंगे, सुहृद नित भाव की भाषा सुभग नित मुस्कुराएंगे। अशोक मिश्र ने कहा, आत्मा भी प्रभु का प्रतिरूप, न खोजो उसको मंदिर में, अनगिनत होते उसके रूप। अरुण शर्मा बेधड़क ने कहा, वीर बलिदानियों की पावन धरा पे फिर, युवाओं को अब्दुल कलाम होना चाहिए। रजनीश मिश्र ने कहा, आजकल के पेड़ भारी हो गए हैं, एक को दस-दस लगाने में जुटे हैं। जी. एल. गांधी ने कहा, मुझे कोई ग़म नहीं था तेरी दोस्ती से पहले, अब ग़म ही जिंदगी है, तेरी करके याद पहले। उपरोक्त गोष्ठी का संचालन करते हुए इंजी. अम्बरीष श्रीवास्तव अंबर ने कहा, जीवन जीना है कला, यही सतत संघर्ष, आजीवन संघर्ष से, निश्चित हो उत्कर्ष। डॉ. सुनील कुमार सारस्वत एवम तुषार मिश्र ने अपने वचनों से समस्त कवियों का मनोबल बढ़ाते हुए उन्हें साधुवाद दिया। उक्त कार्यक्रम में सतीश चंद्र, ज्ञानेश्वर पांडेय, ओंकार नाथ मिश्रा, व फूल चंद्र सिंह सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

एसडीएम ने बच्चों को पढ़ाया, शिक्षकों को बताया कि पढ़ाते कैसे हैं

शिक्षा और साफ सफाई में कोई भी लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी : एसडीएम

जन एक्सप्रेस। मोहम्मदी खीरी

तहसील क्षेत्र के कई गांव के प्राथमिक विद्यालयों में एसडीएम डॉ अवनीश कुमार आकस्मिक निरीक्षण किया एसडीएम ने शिक्षकों को पढ़ाने का तरीका और स्कूल की साफ सफाई आदि का जायजा लिया इस दौरान बच्चों को पढ़ा कर शिक्षकों को पढ़ाने के तरीकों की जानकारी दी उच्च प्राथमिक विद्यालय में अचानक जा पहुंचे एसडीएम को विद्यालय परिसर में देखते ही शिक्षकों में हड़कंप मच गया एसडीएम ने सबसे पहले कक्षा एक कक्षा चार में बच्चों को पढ़ा रही शिक्षिका का तरीका देखा जिससे देख एसडीएम ने कहा कि जो बच्चों को पढ़ाया जा रहा है उनकी समझ में भी आना चाहिए रचनात्मक तरीके से पढ़ने से बच्चे जल्द समझते हैं छोटी कक्षाओं को पढ़ाने वाले अध्यापकों से संतुष्ट दिखे इसके बाद एसडीएम ने खुद बच्चों को पढ़ाया उन्होंने विद्यालय की साफ-सफाई मिड डे मील की व्यवस्था का भी निरीक्षण किया आवश्यक दिशा निर्देश प्रधानाध्यापक को दिए इसके बाद मिड डे मील में बनी तहरी का भी स्वाद चखा और उसकी प्रशंसा की कई स्कूलों में निरीक्षण की खबर अन्य स्कूलों तक पहुंचते ही शिक्षा और साफ-सफाई व्यवस्था में हुआ बड़ा सुधार।

अभिभावकों के सहयोग से ही शिक्षा व्यवस्था में हो सकते हैं सुधार

जन एक्सप्रेस। महमूदाबाद (सीतापुर)

अभिभावकों के सहयोग से ही शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक सुधार किए जा सकते हैं। अभिभावकों की सहभागिता के बिना विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर में अपेक्षित परिवर्तन संभव नहीं है। जो अभिभावक नियमित रूप से अपने पाल्यों को विद्यालय भेजते हैं, उनकी दैनिक गतिविधियों पर पैनी नजर रखते हैं, उनके बच्चे समाज की बुराइयों से बचे रहते हैं। शिक्षा व्यवस्था में जन समुदाय की भागीदारी बहुत जरूरी है। महमूदाबाद विकास खंड के प्राथमिक विद्यालय बघाइन में आयोजित शिक्षा चौपाल में मौजूद अभिभावकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उप जिलाधिकारी शिखा शुक्ला ने उक्त बातें कहीं। उन्होंने कहा कि कि महमूदाबाद तहसील क्षेत्र के सभी प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के भौतिक परिवेश को सुदृढ़ कराना और शैक्षिक स्तर में गुणात्मक सुधार कराना उनकी प्राथमिकता रहेगी।

चौपाल को संबोधित करते हुए खंड शिक्षा अधिकारी उदय मणि पटेल ने कहा कि वर्तमान में चल रहे निपुण भारत अभियान के तहत सभी विद्यालयों में युद्ध स्तर पर आधुनिक संसाधनों का प्रयोग करते हुए शिक्षण कार्य किया जा रहा है। निर्धारित समय से पूर्व विकास खंड के सभी विद्यालय निपुणता हासिल कर लेंगे। चौपाल को एआरपी पीयूष वर्मा, विजय प्रताप सिंह, अभिषेक परिहार, सिराज अहमद, दिनेश कुमार व वरिष्ठ शिक्षक कमाल अहमद व विजय वर्मा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन टीम पहल के जिला प्रभारी उमेश वर्मा ने किया। प्रधानाध्यापिका अर्चना वर्मा, पवन कुमार, दीप्ति वर्मा, ऊषा वर्मा, शिवेंद्र प्रताप ने स्मृति चिन्ह भेंटकर एसडीएम व बीईओ का स्वागत किया।

जुलाई महीने में बौद्धिक परीक्षण में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने पर अनमोल, जेबा, अन्नू वर्मा, शशी, अंशिका, आरुही शर्मा को अतिथियों ने स्कूल बैग देकर पुरस्कृत किया। इस मौके पर प्रधान प्रेम चंद्र वर्मा, शकील अहमद, उत्कर्ष द्विवेदी, अनिल कुमार, नवीन तिवारी, राजेंद्र कुमार, सुशीला देवी, दीपिका शर्मा, सुषमा, रेशमा सहित कई अन्य अभिभावक मौजूद रहे।

फास्ट फॉरवर्ड

फांसी के फंदे से झूला व्यक्ति परजनों में मचा कोहराम

जन एक्सप्रेस/बिजुआ-खीरी। सोमवार सुबह एक व्यक्ति का शव पेड़ के सहारे लटका हुआ पाया गया। जिसकी सूचना आसपास गांव वालों को लगी। गांव के लोग देखने के लिए मौके पर पहुंचे। जिसके उपरांत इस घटना की सूचना मृतक के परिजनों को लगी तभी मृतक के परिजन मौके पर पहुंचे जिन्होंने मृतक की पहचान रामदत्त पुत्र बाँके लाल लगभग 45 वर्ष निवासी गांव राजगढ़ बताया और यह भी बताया कि मृतक अपनी ससुराल में पत्नी किरन और चार बच्चों के साथ रह रहा था। मृतक की पत्नी ने बताया कि मेरे पति अपने घर राजगढ़ जाने और खेत को देखने के लिए बीती तीस तारीख शाम सात बजे निकला था। जिसकी दुखद सूचना दूसरे दिन सुबह लगी और इस मामले को लेकर मृतक की पत्नी ने पुलिस को सूचना देते हुए भीरा थाने में तहरीर दी। भीरा पुलिस मौके पर पहुंचकर शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय भेज दिया है।

20 साल बाद वापस लौटा बेटा, गांव-घर में खुशी का माहौल

जन एक्सप्रेस/मोहम्मदी खीरी। अमीर नगर मगदापुर क्षेत्र के ग्राम बंजारिया में पंडित जमुना प्रसाद तिवारी के पुत्र अनीश कुमार तिवारी जो कि पिछले लगभग बीस बाईस वर्षों से अचानक अपने घर से चले गए थे और उनका कोई अता पता नहीं चल रहा था घर परिवार में दुख का वातावरण बना हुआ था उनका विवाह भी हो गया और एक बेटा भी है आज वो अचानक अपने गांव घर परिवार वालों के पास वापस लौट कर आ गए जिससे उनके परिवार वालों और नाते रिश्तेदारों खासकर उनकी पत्नी गायत्री देवी एवम् गांव वालों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं उनके घर परिवार के लोगों के साथ साथ जिसको भी यह जानकारी मिल रही है वो सभी उन्हें देखने पहुंच रहे हैं उनको घर पर आस पास गांव के लोगों का तांता लगा है।

पीएचसी पर डॉक्टर और फार्मासिस्ट नदारद

जन एक्सप्रेस/मोहम्मदी खीरी। सोमवार को भ्रमण के लिए 1:00 निकले उप जिलाधिकारी डॉक्टर अवनीश कुमार ने बर बर पीएचसी का किया औचक निरीक्षण जहां डॉक्टर फरहान हाशमी फार्मासिस्ट राम सूर्यमणि नदारद मिले एसडीएम ने दोनों बिना सूचना गायब कार्यवाही के लिए जिले को पत्र भेजा इस संबंध में उप जिला अधिकारी ने बताया कि नगर व क्षेत्र में शिक्षा। स्वास्थ्य। स्वच्छता में कोई भी अधिकारी या कर्मचारी मेरे कार्यकाल में लापरवाही करेगा तो उसके विरुद्ध जो भी कानूनी कार्रवाई है वह की जाएगी इस कार्रवाई से नगर व क्षेत्र के कर्मचारियों में हड़कंप मच गया।

डीएम-एसपी ने कारागार का किया निरीक्षण

जन एक्सप्रेस/लखीमपुर खीरी। सोमवार को कारागार प्रशासन द्वारा बन्दियों को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं, कारागार की साफ-सफाई तथा अन्य व्यवस्थाओं का जायज़ा लेने के लिए सोमवार को डीएम महेंद्र बहादुर सिंह व एसपी गणेश प्रसाद साहा ने सीडीओ अनिल कुमार सिंह, एसडीएम अश्वनी कुमार सिंह के साथ जिला कारागार का औचक निरीक्षण किया। पाकशाला, जेल चिकित्सालय व कारागार की बैरकों का निरीक्षण किया। डीएम-एसपी ने सभी बैरकों में प्रवेश करके गहनता के साथ जांच-पड़ताल किया। निरीक्षण के दौरान कोई भी आपत्तिजनक सामग्री नहीं मिला। डीएम ने मुकम्मल साफ-सफाई के साथ ही सभी बैरकों में सतत निगरानी का भी निर्देश दिया। डीएम-एसपी ने बंदियों का हालचाल जाना, खाने-पीने के बारे में जानकारी प्राप्त की, जेल प्रशासन को जरूरी दिशा निर्देश दिए। दोनों अधिकारियों ने स्वयं भोजन की गुणवत्ता देखी। उन्होंने विभिन्न बैरिकों में जाकर बंदियों से मूलभूत सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं की जानकारी ली। कारागार में साफ-सफाई व्यवस्था मिलने पर संतोष व्यक्त किया। निर्देश दिए कि इसी प्रकार प्रतिदिन जेल में साफ-सफाई बनाए रखी जाए। डीएम एसपी ने जेल के बैरक, पाकशाला, अस्पताल, आदि का निरीक्षण किया। बंदियों से वार्ता कर स्थिति का जायजा लिया। उनकी समस्याओं की जानकारी लेकर उनके निस्तारण के लिए जेल अधिकारियों को निर्देश दिया। निरीक्षण के दौरान जेल अधीक्षक पीडी सलोनिया, प्रभारी जेलर हरिवंश पांडेय, डिप्टी जेलर सुनील कुमार, अजय कुमार सिंह चिकित्सक डॉ. दीपांकर रावत मौजूद रहे।

राकिशसं ने गन्ना आयुक्त को ज्ञापन देकर मांगा भुगतान

जन एक्सप्रेस/गोला गोकर्णनाथ खीरी। राष्ट्रीय किसान शक्ति संगठन के प्रदेश अध्यक्ष पटेल श्री कृष्ण वर्मा ने सहकारी गन्ना विकास समिति गोला के निवर्तमान अध्यक्ष सुरेश चंद वर्मा के साथ प्रदेश के गन्ना आयुक्त से भेंट कर ज्ञापन देकर गन्ना भुगतान करवाने की मांग की है। ज्ञापन में लिखा गया है कि गन्ना आयुक्त के निर्देश पर बैंकों में सीसी क्रेडिट लिमिट न होने वाली निजी चीनी मिलों के चीनी गोदाम इथेनॉल शीरा बैगास और प्रेस मड के भंडार सीज कर दिए हैं जिससे इन उत्पादों की बिक्री बंद हो गई है और किसानों का गन्ना भुगतान रुक गया है इन चीनी मिलों के प्रबंध तंत्र पर तो कोई असर नहीं पड़ा किंतु गन्ना किसान परेशान है मांग की गई है कि गन्ने से बने उत्पाद की सील खुलवा कर अधिकारियों की कडी निगरानी में विक्रय करवा बिक्री धन बैंकों में किसानों के भुगतान के लिए खोले गए एसक्रो अकाउंट में भिजवाने की व्यवस्था की जाए ज्ञापन में यह भी मांग की गई है कि पूर्व वर्षों की भाति सट्टेदार किसानों को उनकी मांग के अनुसार चीनी उपलब्ध कराई जाए जिससे गन्ना किसान चीनी मिलों से चीनी लेकर घाटा सहकर अपने घर का खर्चा चला सके।

साप्ताहिक काव्य गोष्ठी का हुआ आयोजन

जन एक्सप्रेस/सीतापुर। हिंदी भाषा व साहित्य को समर्पित संस्था अन्नपूर्णा साहित्य संगम ने सफलतम 550 सप्ताह पूर्ण करते हुए साप्ताहिक काव्य गोष्ठी का आयोजन शहर के जागेश्वर निवास तरीनपुर रोड निकट हरदोई चुंगी पर किया। वरिष्ठ कवि अवधेश शुक्ल के संरक्षण तथा महफूज रहमानी की अध्यक्षता में सफल काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन युवा शायर यासीन इब्ने उमर ने किया, तथा शिव प्रताप सिंह चौहान की वाणी वंदना के माध्यम से काव्य गोष्ठी का शुभारंभ हुआ, इस अवसर पर अध्यक्षता कर रहे महफूज रहमानी ने सुनाया - कल तक जो बेजोड़ रहे हैं, आज वह बंजर गोड़ रहे हैं। अवधेश शुक्ला ने सुनाया - आया सावन मनभावन है, आज यहां रसवंती मौसम है। यासीन इब्ने उमर ने सुनाया- मजहब का सम्मान जरूरी है, दिल में हिंदुस्तान जरूरी है। शिव प्रताप सिंह चौहान ने सुनाया- दिया और बाती की कैसी अद्भुत प्रेम कहानी है, मित्र प्रेम में जलती बाती हार कभी ना मानी है। राम किशोर श्रीवास्तव ने सुनाया - तूने जुल्फें बिखेरीं गजब हो गया, दिल हमारा न जाने कहां खो गया। रईस रहमानी ने सुनाया- भेष मैं फकीरों का इसलिए बनाए हूं, देखना है यह मुझको कौन कितना दानी है। इसके अलावा काव्य गोष्ठी में केपी मिश्र, डा सतीश चंद्र वर्मा, नफीस सीतापुरी, एपी गौतम, गीता किशोर श्रीवास्तव, कन्हैया लाल शुक्ल, रियाजुद्दीन रियाज, विपिन बिहारी, प्रगति बाजपेई आदि ने काव्य पाठ किया।

गोली कांड मामले में दंपति सहित तीन गिरफ्तार, चौथे की तलाश जारी

जन एक्सप्रेस। उरई

- विरोधियों को फसाने के प्रयास में पत्नी के उकसाने पर युवक ने खुद को मारी थी गोली
- आटा पुलिस एसओजी व सर्विलांस की संयुक्त टीम ने चंद दिनों में किया पर्दाफाश

आटा थाना पुलिस एसओजी व सर्विलांस सेल की संयुक्त टीम ने चंद दिनों में ही गोलीकांड की वारदात से पर्दा उठा दिया। जिसमें विरोधियों को फसाने के प्रयास में युवक ने अपनी पत्नी व साथियों के साथ मिलकर खुद को गोली मारकर घायल कर लिया था। मामले का खुलासा करते हुए अपर पुलिस अधीक्षक असीम चौधरी ने बताया कि 11 जुलाई को आटा थाना क्षेत्र में गोली लगने से वीरेंद्र पुत्र स्व. जयराम निवासी ग्राम हरचंदपुर थाना कदौरा हाल निवास सपा कार्यालय के पास पटेल नगर उरई घायल हो गया था। जिसकी शिकायत आटा थाने में उसकी पत्नी अनीता ने पुलिस से की थी। जिस पर पुलिस ने शिकायत के आधार मुकदमा पंजीकृत कराया था। इस मामले के खुलासे के लिये कालपी सीओ के नेतृत्व में आटा थाना पुलिस के साथ, एसओजी, सर्विलांस टीम को लगाया गया था। टीम ने जांच के दौरान पाया कि वीरेंद्र ने अपनी पत्नी अनीता और दो अन्य साथी मनोज कुमार पुत्र महेंद्र निवासी चंदरसी थाना कदौरा व सोनू के साथ मिलकर अपने विरोधियों को फसाने का प्रयास करते हुए खुद को गोली मारी थी। इस मामले में वीरेंद्र उसकी पत्नी अनीता व मनोज को गिरफ्तार कर लिया, साथ ही सोनू की गिरफ्तारी का प्रयास किया जा रहा है। अभियुक्तों के पास से घटना में प्रयुक्त तमंचा व एक खोखा भी बरामद किया है। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार अभियुक्तों ने अपने रिश्तेदारों को फसाने के लिये यह घटना खुद कारित की थी। इसीलिए इन आरोपियों के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत करते हुए जेल भेजा जा रहा है।

यातायात उपनिरीक्षक ने लगाई ऑनलाइन पाठशाला

जन एक्सप्रेस। बाराबंकी

यातायात नियमों का आपके जीवन में क्या महत्व है। इसकी सटीक जानकारी व प्रशिक्षण देने के लिए यूपी पुलिस के यातायात उपनिरीक्षक संजीव पाल ने एक अनूठी पहल की है। यातायात उपनिरीक्षक संजीव पाल छोटे-छोटे वीडियो बनाकर लोगों को जागरूक कर रहे है। जिसमें वह लोगों को विस्तृत रूप से यातायात नियमों के पालन के बारे में बता रहे है। सोमवार को आयोजित हुई सड़क सुरक्षा की पाठशाला में उपनिरीक्षक ने लोगों को ओवरटेक और ओवर स्पीड से बचने के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। बताया कि भारत में प्रत्येक वर्ष ओवरस्पीडिंग के चलते 58 से 60 प्रतिशत सड़क दुर्घटनाएं होती है। जबकि ओवरटेक में 25 से 27 प्रतिशत दुर्घटनाएं होती है। उत्तरप्रदेश के आंकड़ों की बात करें तो ओवरस्पीडिंग से 59.7 प्रतिशत दुर्घटनाएं हुई। जिसमें 87 हजार 50 लोगों की मृत्यु हो गई। तो वही 2लाख 28हजार 234 लोग घायल हुए। जबकि ओवरटेक में 25 पॉइंट 7 प्रतिशत घटनाएं हुई। जिनमें 42हजार 853 लोगों की मृत्यु हुई और 91हजार 693 लोग घायल हुए। इन सभी घटनाओं का जिक्र करते हुए उपनिरीक्षक ने लोगों से सड़क पर चलते समय यातायात संकेतक सहित अन्य आवश्यक बिंदुओं पर ध्यान देकर यात्रा करने का आग्रह किया। उन्होंने अनुरोध किया कि यात्रा के दौरान लोग ओवरटेकिंग व ओवरस्पीडिंग से बचें। इस प्रशिक्षण में 65 विद्यालय, 50 ढाबा व तीन अन्य सार्वजनिक व्हाट्सएप ग्रुप के लोग ऑनलाइन माध्यम से जुड़े।

बीकेडी स्कूल में सड़क सुरक्षा पखवाड़ा का हुआ समापन

जन एक्सप्रेस। उरई

17 जुलाई से 31 जुलाई तक मनाये जा रहे सड़क सुरक्षा पखबाड़ा कार्यक्रम के तहत सोमवार को एल्ड्रिच पब्लिक स्कूल झाँसी रोड में सड़क सुरक्षा पखबाड़ा का समापन जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. घनश्याम अनुरागी की अध्यक्षता में किया गया। जिला पंचायत अध्यक्ष ने उपस्थित सभी जनों को यातायात नियमों की जानकारी दी। बताया कि यातायात नियमों का पालन पूरी निष्ठा व सावधानी से करें। साथ ही अपील कि वे हेलमेट/सीट बेल्ट का प्रयोग करें। अपर मुख्य चिकित्साधिकारी ने लोगों को सुरक्षित परिवहन के बारे में जागरुक किया गया। गोल्डन आवर व प्राथमिक उपचार व दुर्घटना में घायलों की सहायता करने सम्बन्धी जानकारी दी गई। सुरेश कुमार वर्मा सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन) द्वितीय दल ने उक्त कार्यशाला में लोगों को सुरक्षित परिवहन के बारे में जागरुक किया तथा आमजन से अपील की कि वे नशे की हालत में वाहन न चलाऐं व वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करें, ओवर स्पीड में वाहन न चलायें, दुर्घटना में घायलों की सहायता करें, क्षमता से अधिक माल व सवारी न ढ़ोयें। विनय कुमार पाण्डेय, यात्री/मालकर अधिकारी ने बताया कि वाहनों को अपनी लाइन पर संचालित करने तथा वाहन को रोकते समय साइड इण्डीकेटर का प्रयोग कर सुरक्षित स्थान पर यात्रियों को उतारने अनाधिकृत ढावों पर वाहन को खड़ी न करने, यात्रियों को असुबिधा न हो ध्यान में रखकर यात्रा करायें। अन्त में उपस्थित सभी जनों को सड़क सुरक्षा शपथ दिलाई गई व कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम में दुर्गाशंकर विश्वकर्मा सहायक क्षेत्रीय प्रबन्धक, शोभाराम पाल टीआई, अमित सक्सेना अधिशासी अभियन्ता पीडब्ल्यूडी, प्रबन्धक एल्ड्रिच पब्लिक स्कूल अजय इटौरिया आदि उपस्थित रहे।

छेड़खानी मामले में 5 वर्ष की हुई सजा, 10 हजार का लगा अर्थदंड

जन एक्सप्रेस/उरई। पॉक्सो एक्ट जज ने गवाहों और सबूतों के आधार पर अनुसूचित जाति की किशोरी के साथ छेड़खानी मामले में युवक को 5 वर्ष की सजा सुनाई। साथ ही 10 हजार रुपए का अर्थदंड लगाया। कुठौंद थाना के ग्राम दौनापुर निवासी राम बालक यादव के पुत्र हैप्पी ने सात साल पहले एक अनुसूचित जाति की किशोरी के साथ छेडखानी कर दी थी। पुलिस ने किशोरी के पिता की तहरीर पर वर्ष 2016 में मुकदमा दर्ज कर लिया था और दो तीन माह में ही पुलिस ने आरोप पत्र कोर्ट में पेश कर दिए थे। सात साल तक चली सुनवाई के दौरान कोर्ट में गवाहों और कई साक्ष्य पेश हुए। जिसमें सोमवार को पॉक्सो एक्ट कोर्ट के जज ने हैपी को दोषी मानते हुए पांच साल की सजा सुनाई। इसके अलावा 10 हजार रुपये का अर्थदंड जमा करने का आदेश दिया। पीड़ित पक्ष की ओर से पैरवी शासकीय अधिवक्ता विश्वजीत सिंह ने की।

कई वर्षों से प्राथमिक विद्यालय के सामने बना जलभराव

जन एक्सप्रेस। रामनगर-बाराबंकी

विकासखंड रामनगर अंतर्गत बिछलखा गांव में प्राथमिक विद्यालय व उच्च प्राथमिक विद्यालय के सामने मुख्य सड़क पर कई वर्षों से जल भराव बना हुआ है। जल निकासी की समुचित व्यवस्था न होने के चलते इस रास्ते से गुजरने वाले लोगों को पानी से होकर गुजरना पड़ता है। ऐसे में सबसे ज्यादा दिक्कतें उन नन्हे-मुन्ने नौनिहालों को हो रही है। जोकि विद्यालय में प्रतिदिन पढ़ने के लिए आते है। ग्रामीणों के मुताबिक शिकायत के बाद भी समस्या का समाधान न होने से लोगों में रोष व्याप्त है। ग्रामीणों के मुताबिक में बिछलका से भैंसुरिया को जाने वाले मुख्य मार्ग पर गांव के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्कूल के सामने कई वर्षों से यह समस्या बनी हुई है। इस रास्ते से स्कूली बच्चों के साथ-साथ 5 गांवों के 10 हजार से अधिक लोग प्रतिदिन गुजरते है। रास्ते पर जलभराव व कीचड़ से यहां मोटरसाइकिल आदि वाहन के गिरने के हादसा होना अब आम बात हो गई है। यहां के रहने वाले एक निवासी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि मार्ग पर जलभराव की समस्या का निराकरण कराने के लिए जिम्मेदारों से कई बार मदत की गुहार लगाई जा चुकी है। लेकिन इस समस्या का निराकरण नहीं हो पा रहा है। पूछने पर गांव के ग्राम प्रधान बताते है कि समस्या का समाधान जल्द हो जाएगा। जिसको लेकर विकास खंड अधिकारी अमित कुमार त्रिपाठी ने बताया कि जलभराव होने की समस्या की सूचना मिली है। जिसके लिए ग्राम प्रधान सहित ग्राम सेक्रेटरी को निर्देश दिए जाएंगे। बहुत जल्द ग्रामीणों को इस समस्या से निजात मिल जाएगी।

अज्ञात कंटेनर की ठोकर से छात्रा की मौत

जन एक्सप्रेस/मसौली-बाराबंकी। थाना सफदरगंज अंतर्गत पल्हरी पशु बाजार के सामने एक अज्ञात कंटेनर साइकिल सवार छात्रा को ठोकर मार कर भाग गया। हादसे में छात्रा की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। जिसे सूचना पर पहुंची पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। थाना सफदरगंज के बघौरा गांव निवासी धनीराम की 14 वर्षीय पुत्री सुभाषिनी फतेह चंद जगदीश राय इंटर कॉलेज सफदरगंज में कक्षा 9 में अध्ययनरत थी। सोमवार को विद्यालय के विद्यालय में रिटायर हुए शिक्षक उमाकांत सचान के निधन पर छुट्टी कर दी गई। जिसपर करीब सवा 8 बजे सुभाषिनी अपनी साइकिल से घर वापस लौट रही थी। इसी बीच लखनऊ अयोध्या हाईवे स्थित पल्हेरी पशु बाजार के सामने एक तेज रफ्तार अज्ञात कंटेनर साइकिल सवार छात्रा को पीछे से रौंदता हुआ फरार हो गया। राहगीरों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने छात्रा के पास मिले आई कार्ड से उसकी पहचान कर घटना की जानकारी उसके परिजनों को दी। मौके पर परिजनों के पहुंचते ही उनकी चीख-पुकार मच गई। जिसे देखकर वहां मौजूद लोगों की आंखें भर आई।

तस्कर की 16 करोड़ 12 लाख 99 हजार की संपत्ति होगी कुर्क

जन एक्सप्रेस/बाराबंकी। थाना जैदपुर पुलिस गिरोह सरगना मुनव्वर पुत्र यासीन निवासी राजा कटरा कि 16 करोड 12 लाख 99 हजार 270 की संपत्ति को कुर्क करेगी। जिसके संबंध में सोमवार को जानकारी देते हुए अपर पुलिस अधीक्षक दक्षिणी डॉक्टर अखिलेश नारायण सिंह ने बताया कि गैंगस्टर एक्ट का आरोपी वह गिरोह सरगना मुनव्वर पुत्र यासीन निवासी राजा कटरा थाना जैदपुर पर आरोप है कि उसने आर्थिक लाभ के लिए दर राष्ट्रीय स्तर पर मादक पदार्थ की तस्करी करता था। जिससे कमाए हुए धन से उसने 16 करोड़ 30 लाख की अचल संपत्ति को खरीदा है। जिसे अब पुलिस व जिला प्रशासन कुर्क करेगा।

लोधेश्वर महादेवा में उमड़ा भक्ति सैलाब

सिपाही पर अभद्रता करने का आरोप

जन एक्सप्रेस। रामनगर-बाराबंकी

लोधेश्वर महादेवा ने सावन के चौथे व अधिक मास के दूसरे सोमवार पर लाखों संख्या में श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। यहां देर रात से सोमवार देर शाम तक होने वाली श्रृंगार पूजा तक 2 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने बाबा का जलाभिषेक किया। यहां मंदिर के पुजारी आदित्य नाथ तिवारी ने बताया कि इस बार 19 वर्ष बाद ऐसा संयोग है कि अधिक मास सावन के बीच में पड़ा है। इसलिए लोग बड़ी संख्या में यहां पहुंचकर बाबा का पूजन अर्चन कर रहे है।
इस दौरान चप्पे-चप्पे पर सुरक्षा व्यवस्था मुस्तैद रही। लेकिन मंदिर के रिसीवर हरि प्रकाश द्विवेदी ने मेला सहित मंदिर परिसर में छुट्टा जानवरों की अत्याधिक चहलकदमी को सुचारू व्यवस्था में खलल बताया। वहीं दूसरी तरफ ऑडिटोरियम में बने पार्किंग स्टैंड के पास तैनात सिपाही सौरभ गुप्ता अपने उच्च अधिकारियों के निर्देशों को तार-तार करते देखे गए। जिन पर आरोप है कि वह मेले में आने वाले तमाम श्रद्धालु एवं क्षेत्रीय लोगो से अभद्रता पूर्वक पेश आ रहे थे। सिपाही के अभद्र व्यहार करने पर तमाम श्रद्धालु क्षेत्र के जागरूक जनों के बीच तीखी नोक झोंक भी हुई। जबकि मेले में पैदल चल रहे श्रद्धालुओं की भीड़ के बीच ई-रिक्शा खुलेआम फर्राटा भर रहे थे।

मिशन वात्सल्य की संयुक्त समीक्षा बैठक का हुआ आयोजन

जन एक्सप्रेस। उरई

जिला प्रोबेशन अधिकारी के निर्देश के क्रम में महिला कल्याण विभाग से महिला कल्याण अधिकारी अलकमा अख्तर द्वारा विकास खंड डकोर में मिशन वात्सल्य के तहत ब्लॉक बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, महिला शक्ति केंद्र, बाल विवाह की संयुक्त बैठक का आयोजन किया गया।
आयोजित बैठक में समिति के सदस्यों द्वारा बाल संरक्षण सेवाएं के अंतर्गत 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों के सशक्त संरक्षणात्मक परिवेश का निर्माण, उचित पालन पोषण, बच्चों को हिंसा व दुर्व्यवहार से बचाने, बाल विवाह रोकथाम, परित्यक्त नवजात शिशु के मिलने पर तत्काल थाने पर सूचित करने तथा, बैठक में ग्राम स्तरीय बाल कल्याण एवं संरक्षण समितियों बैठक कराने के लिए जोर दिया गया। बैठको को सक्रिय करने हेतु समन्वय किया गया है। ब्लॉक स्तरीय अगली त्रैमासिक बैठक में सुरक्षा एवं संरक्षण की आवश्यकता की श्रेणी में आने वाले बच्चों को चिन्हित कर कार्यवृति प्रस्तुत करने के संबंधित अधिकारियों से अपेक्षा की गई। संरक्षण अधिकारी जूली खातून ने मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (कोविड-19/सामान्य) के विषय में विस्तार से बताया गया। महिला कल्याण अधिकारी अलकमा अख्तर ने मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, निराश्रित महिला पेंशन योजना इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही बाल श्रम एवं बाल विवाह के संदर्भ में बताया कि पिछले वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष बाल विवाह में कमी देखी गई। बैठक में सत्यनारायण एवं चाइल्डलाइन जालौन की टीम, आंगनवाड़ी कार्यकत्री, सहायिका एवं खण्ड विकास कार्यालय का समस्त स्टाफ व महिलाएं आदि उपस्थित रहे।

आयुर्वेदिक शिविर में 233 रोगियों का किया परीक्षण

जन एक्सप्रेस। कालपी

जिलाधिकारी चांदनी सिंह के निर्देश पर आयुष आपके द्वार के तहत राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय के तत्वधान में सोमवार को पीलाघाट कालपी में शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे 233 मरीजों का परीक्षण कर, उपचार किया गया। शिविर का प्रारंभ धनवंत्री भगवान पूजन से शुरू हुआ। शिविर में डॉक्टर पूर्णिमा चटर्जी द्वारा 233 रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। चिकित्सा अधिकारी डॉ. पूर्णिमा चटर्जी ने कहा कि आयुर्वेदिक पद्धति में जटिल से जटिल बीमारियों का उपचार है। उन्होंने बरसात के मौसम को देखते हुए नागरिकों को बचाव करने के लिए जागरूक किया। उन्होंने कहा कि बरसात में भीगने से जुकाम बुखार तथा खुजली की समस्या पैदा होती है। नेत्र फिल्म के बारे में उन्होंने कहा कि इसके लिए सतर्कता बहुत ही जरूरी है। नियमित तरीके से हाथ धोते रहें तथा साफ-सुथरे पेपर लिया। कपड़े से आंखों को साफ करें। किसी से हाथ मिलाने के बाद सिनिसाइज जरूर करें। डॉक्टरों की परामर्श से दवाइयों का प्रयोग करें। शिविर में बृजेन्द्र स्वरूप पाल फार्मासिस्ट (बबीना) द्वारा औषधि वितरित की गई। शिविर में सरिता देवी आदि कर्मचारी मौजूद रहे।

बढ़ रहा आई फ्लू का प्रकोप

जन एक्सप्रेस। बाराबंकी

जिले में आई फ्लू का प्रकोप तेजी से बढ़ रहा है। सरकारी अस्पतालों सहित निजी अस्पतालों में रोजाना पहुंच रहे मरीजों में 20 प्रतिशत मरीज ऐसे है। जोकि आई फ्लू की चपेट में है। ऐसे में चिकित्सक संक्रमित व्यक्तियों से दूरी रखने की सलाह दे रहे है। सोमवार को जिला अस्पताल की ओपीडी में आए ज्यादातर मरीजों में 10 प्रतिशत मरीज ऐसे पाए गए जिनमें आई फ्लू के लक्षण देखे गए। हालात यह है कि 100 लोगों में 10 की आंखों में यह समस्या देखी जा रही है। जिसको लेकर लोगों को घबराने की जरूरत नहीं है। यह कंजक्टिवाइटिस रोग है सामान्य भाषा में आंख आना कहा जाता है। इसमें आंखें लाल हो जाती है। इस बीमारी का समय पर इलाज करने पर लाभ हो जाता है। लेकिन देर करने पर इसके परिणाम घातक हो सकते है। इसमें आंखें लाल हो जाती है। इस बीमारी का समय पर इलाज करने पर लाभ हो जाता है। लेकिन देर करने पर इसके परिणाम घातक हो सकते है।

सपा नगर अध्यक्ष ने योगासन प्रतियोगिता में टॉप छात्रा को किया सम्मानित

जन एक्सप्रेस। कालपी

गत दिनों जनपद मुख्यालय में आयोजित हुई योगासन प्रतियोगिता में जूनियर बालिका वर्ग में जिले को टॉप करने वाली नगर की होनहार छात्रा नित्या मेहरोत्रा को सपा नगर अध्यक्ष द्वारा वरिष्ठ नेताओ की मौजूदगी में प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह देकर कर सम्मानित किया गया। वहीं दूसरी ओर नेशनल लेवल की परीक्षा में नगर की ही छात्रा गुलफसा ने 9 वां स्थान प्राप्त किया। उसे भी सम्मानित किया गया। शनिवार को देर शाम सपा युवा नगर अध्यक्ष अजीत सिंह यादव के नेतृत्व में वरिष्ठ नेता इकबाल वकील साहब की उपस्थिति में सपा कार्यकर्ताओं ने नगर की होनहार छात्रा जिन्होंने गत दिवस जिले के इन्दिरा स्टेडियम में आयोजित जिला योगासन प्रतियोगिता में जिले में सब बालिका वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त कर नगर का नाम रोशन किया था। ऐसी होनहार प्रतिभावान छात्रा को सपा नेताओं व कार्यकर्ताओं ने एक प्रशंसा पत्र व स्मृति चिन्ह देकर तथा अच्छे प्रदर्शन की हौसला अफजाई करते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की। वही इसीक्रम में नेशनल लेवल की परीक्षा में पूरे देश में 9 वां स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा कुमारी गुलफसा पुत्री मोहम्मद असफाक उर्फ मुन्ना टेलर के आवास पर पहुंचकर सम्मानित किया तथा उज्जवल भविष्य की कामना की। इस दौरान प्रमुख रुप से कपिल शुक्ला सभासद, दिनेश श्रीवास सभासद, लल्लू सभासद, उमदेश यादव, राजकुमार बाल्मीक, रज्जू शेख सभासद, श्याम यादव, मनोज प्रजापति, विनोद खत्री, अरविंद साहू, प्रकाश माथुर, जमील अंसारी, उवेश पठान, सोनू यादव, पंकज खटीक, अदनान आदि सपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

अज्ञात मोटरसाइकिल चालक की ठोकर से युवक की हालत गंभीर

जन एक्सप्रेस। रामनगर-बाराबंकी

थाना रामनगर अंतर्गत बाराबंकी बहराइच हाईवे पर टेलीफोन एक्सचेंज के सामने एक तेज रफ्तार मोटरसाइकिल चालक 40 वर्षीय युवक को ठोकर मारकर फरार हो गया। हादसे के बाद युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे उपचार के लिए परिजनों ने शहर के हिंद अस्पताल में भर्ती कराया है। थाना रामनगर के बाराबंकी बहराइच हाईवे पर बीएसएनल एक्सचेंज के सामने मसौली की तरफ से आ रहा एक मोटरसाइकिल चालक पैदल सड़क पार कर रहे श्याम पुत्र रमेश निवासी अगानपुर को ठोकर मार दी। हादसे के बाद श्याम मौके पर अचेत होकर गिर गया। जिससे राहगीरों की सूचना पर पहुंचे परिजन नजदीकी सीएचसी रामनगर लेकर पहुंचे। यहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद घायल की हालत गंभीर देखने पर उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया। जहां पहुंचने पर चिकित्सकों ने घायल को लखनऊ ट्रामा सेंटर भेज दिया। लेकिन परिजनों ने युवक की हालत गंभीर देखने पर उसे लखनऊ ट्रामा सेंटर न ले जाकर शहर के हिंद अस्पताल में भर्ती कराया। जहां युवक जिंदगी मौत की लड़ाई लड़ रहा है। लेकिन परिजनों ने युवक की हालत गंभीर देखने पर उसे लखनऊ ट्रामा सेंटर न ले जाकर शहर के हिंद अस्पताल में भर्ती कराया। जहां युवक जिंदगी मौत की लड़ाई लड़ रहा है।

आई फ्लू से घबरायें नहीं बल्कि रखें सावधानी : डॉ. शकुन्तला

मरीज आई फ्लू से साफ सफाई रखकर कर सकते है बचाव : प्रदीप कुमार शर्मा

जन एक्सप्रेस। अयोध्या

जिस तरह से प्रकृति का कहर वर्तमान में बरसात के मौसम में उमस भरी गर्मी, कही - कहीं अति बरसात का सामना लोगो को करना पड़ रहा है जिसकी वजह से न सिर्फ लोगों का जन जीवन अस्त-व्यस्त है। बल्कि आँखों से जुड़ी समस्याएं तेज से बढ़ाने लगी हैं जिसमें आई फ्लू के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है द्य आई फ्लू को कंजक्टाइटिस भी कहा जाता हैं, आई फ्लू के बढ़ते मामलों को लेकर होम्योपैथिक दवाएं कितनी कारगर हैं इसको लेकर श्री राम राजकीय होम्योपैथिक चिकित्सालय की डॉ शकुन्तला से जन एक्सप्रेस द्वारा खास बातचीत की गई।

जिस पर उन्होंने आई फ्लू के कारण, लक्षण, उपाय और बचाव के बारे जानकारी दी द्य उन्होंने बताया कि बारिश के मौसम में होने वाली आँखों की एक समस्या ह। आई फ्लू आँखों की सफेद हिस्से में संक्रमण हो जाता है, ऐसे मामले सर्दी खाँसी वाले वायरस की वजह से बढ़ते हैं जिसकी वजह से आँखों से जुड़ी परेशानी होने लगती हैं। आई फ्लू के फैलने के कारण दरसल बारिश के गंदे पानी में नहाने या फिर लंबे समय तक पसीने में काम करने से आँखों में इंफेक्शन की समस्या हो जाती हैं। इसके अलावा आई फ्लू से पीड़ित लोगों के साथ हाथ मिलाने और गंदे हाथों को छूने से एवं पीड़ित व्यक्ति के कपड़े प्रयोग करने से, लाल सफेद आँखें, आँखों में सफेद रंग का कीचड़ दिखाई देना, आँखों से पानी बहाना, आँखों में दर्द, आँखों में जलन, खुजली होना, आँखों के आसपास त्वचा में सफेद या लाल दाग होना। आई फ्लू से बचने के उपाय के बारे मे बताते हुए कहा कि हाथों को नियमित अंतराल पर साबुन से धोयें, आँखों को छूने से पहले या बाद में हाथ साफ करने से खतरा कम हो जाता है संक्रमित व्यक्ति से दूरी बनाकर रखें। हाथ बिल्कुल न मिलाएं आँखों में जलन होने पर या लाल होने पर स्वच्छ पानी से साफ करे द्य गंदे हाथों से आँखों के आसपास न छुयें। आँखों को खुजलायें नहीं, आँखों का चश्मा जरूर लगाएं, अपनी निजी सामान, कपड़े तौलिया आदि प्रयोग न करें। टीवी, मोबाइल देखने से बचें। आई फ्लू होने पर क्या करें आँखों को उबले पानी से साफ करें, आँखों को साफ करने के लिए साफ और सूती कपड़े का प्रयोग करें।

इन दवाओं का प्रयोग कर सकते है। होम्योपैथी की ये दवाएं खाने के लिए हैं - Apis melfica 30 CH, Belladonna 30CH, Euphrasia 30CH

होम्योपैथी की ये दवायें आखों में डालने के लिए - Euphrasia eye drop, Cinaria eye drop. इस दवा से आई फ्लू से पूर्ण रूप से आराम मिल जायेगा।

श्री राम राजकीय होम्योपैथिक चिकित्सालय के कर्मचारी प्रदीप कुमार शर्मा ने बताया कि लोगों के मन में जो आई फ्लू के बारे में इतना हऊवा बना दिया गया है वास्तव में इतना है नही। बस इतना करे कि आई फ्लू के लक्षण देखते ही तुरंत श्री राम राजकीय होम्योपैथिक चिकित्सालय के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी से संपर्क करें।

जंगली नाथन मंदिर जा रहे बाइक सवार दम्पति को ई-रिक्शा ने मारी ठोकर

जन एक्सप्रेस। बहराइच

सावन में जंगली नाथन जल चढ़ाने जा रहे पति-पत्नी टेम्पो से टकराकर घायल हो गये, जिसमें पत्नी की मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना हुजूरपुर अन्तर्गत हुजूरपुर गांव निवासी राम सँवारे(50) अपने भाँजे रामकुमार के साथ मोटरसाइकिल से अपनी पत्नी राम सँवारी(48) को लेकर सोमवार प्रातः बाबा जंगली नाथ जल चढ़ाने निकले थे। जब यह बहराइच से आगे झिंगहाघाट के पास पहुंचे तो एक टेम्पो ने इन्हें टक्कर मार दी, जिससे सभी घायल हो गये। जब पति-पत्नी को इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज बहराइच लाया गया ,तो आपातकालीन चिकित्सक द्वारा पत्नी राम सँवारी को मृत घोषित कर दिया गया, जबकि पति राम संवारे को इलाज के लिए भर्ती कर लिया गया। पुलिस ने राम सँवारी का पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया, जिसका अन्तिम संस्कार कर दिया गया। इस घटना से परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के समापन अवसर पर दिलाई गई शपथ

जन एक्सप्रेस। बलरामपुर

जनपद बलरामपुर में आयोजित हुए सड़क सुरक्षा पखवाड़ा का सोमवार को सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी कार्यालय पर समापन किया गया। समापन समारोह में मौजूद लोगों को सड़क सुरक्षा की शपथ दिलाई गई।

जानकारी के अनुसार कि 31 जुलाई को सड़क सुरक्षा पखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित किया गया। समापन अवसर पर प्राइवेट बस यूनियन के पदाधिकारियों व पुलिस प्रशासन के लोगों की उपस्थिति में बस, ट्रक, ऑटो यूनियन एवं कार्यालय में उपस्थित आम जनमानस को सुरक्षा के तहत सेफ ड्राइविंग व फर्स्ट रिस्पांडर का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम में मौजूद चालकों को आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत 5 लाख रुपए का बीमा प्रदान किए जाने के विषय में जागरूक किया गया। इसके अतिरिक्त हैंड बिल व पंपलेट का वितरण करते हुए लोगों से यातायात नियमों के पालन करने के लिए अपील किया गया। वाहन चालकों को वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग ना करने हेतु सलाह दी गई तथा हेलमेट एवं सीटबेल्ट का प्रयोग करने हेतु प्रेरित किया गया।

उलटी दिशा तथा ओवर स्पीड में वाहन का संचालन ना करने के लिए अपील की गई। सहायक संभागीय परिवहन कार्यालय परिसर में वीडियो क्लिप व पब्लिक ऐड्रेस सिस्टम के माध्यम से यातायात नियमों से संबंधित निरंतर लोगों को जागरूक किया गया। जनपद में सड़क सुरक्षा व यातायात नियमों के संबंध में जागरूक करने के लिए वाहनों से निरंतर प्रचार प्रसार किया कराया गया। सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी अरविंद कुमार यादव द्वारा उपस्थित सभी लोगों को जागरूक करते हुए सड़क सुरक्षा की शपथ दिला कर कार्यक्रम का समापन किया गया। इस अवसर पर आर आई प्रदीप कुमार, निरीक्षक यातायात अशोक कुमार पांडे, प्राइवेट बस यूनियन अध्यक्ष जब्बार खान, सचिव कमलेश प्रताप सिंह, प्रमोद कुमार मिश्रा, संतोष दुबे, शीतला प्रसाद मिश्रा, सतनाम सिंह सहित प्रवर्तन स्टाफ, कार्यालय कर्मचारी, यातायात पुलिस स्टाफ एवं व्यवसायिक चालक व परिचालक मौजूद थे।

बाढ़ की संभावना को देखते हुए खंडवार लगाई गई अवर अभियंताओं की ड्यूटी

जन एक्सप्रेस। बलरामपुर

बाढ़ की संभावना को दृष्टिगत रखते हुए 1 अगस्त से 20 अगस्त तक खण्डवार अवर अभियन्ताओं की ड्यूटी लगाई गई है। यह सभी अभियंता अग्रिम आदेशों तक कलेक्ट्रेट में स्थापित बाढ़ नियंत्रण कक्ष में अपनी ड्यूटी करेंगे और बाढ़ संबंधी कार्यों का निष्पादन करेंगे।अपर जिलाधिकारी प्रदीप कुमार ने बताया कि इन अभियंताओं को 01 अगस्त से 20 अगस्त, 2023 तक तीन पालियों (प्रातः 06:00 बजे से 2:00 बजे तक, 2:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा रात्रि 10:00 बजे से प्रातः 06:0 बजे तक) में जिला आपदा प्रबन्धन केन्द्र, बलरामपुर/ई0ओ0सी0 कलेक्ट्रेट में स्थापित जिला बाढ़ नियंत्रण कक्ष में अग्रिम आदेश तक ड्यूटी पर लगाया गया है। सभी सम्बन्धित अधिकारी /कर्मचारी समय से अपनी ड्यूटी पर उपस्थित रहकर बाढ़ नियंत्रण कार्यों का निष्पादन करेंगे।

बाढ़ नियंत्रण कक्ष के प्रभारी अपर उप जिलाधिकारी कलेक्ट्रेट, बलरामपुर को बनाया गया है, जो ड्यूटी पर लगाये गये कर्मचारियों की उपस्थिति का नियंत्रण करेंगें।उन्होंने कहा कि यदि कोई कर्मचारी ड्यूटी से अनुपस्थित रहता है अथवा समय से नहीं आता है या उपस्थिति पंजिका पर हस्ताक्षर बनाकर ड्यूटी कक्ष से अनुपस्थित हो जाता है तो उसकी सूचना तत्काल देंगें। उन्होंने समस्त अपर अभियन्ताओं को निर्देशित करते हुये कहा है कि ससमय उपस्थित होकर बाढ़ कन्ट्रोल रूम में बाढ़ खण्ड/सिंचाई विभाग/ड्रेनेज/ ड्रेनेज खण्ड व अन्य विभागों से सम्बन्धित प्राप्त होने वाली शिकायतों का निस्तारण सुनिश्चित करायेंगें तथा प्राप्त शिकातयों का शिकायत पंजिका में शिकायतकर्ता के सम्पूर्ण विवरण निस्तारण का अंकना अनिवार्य रूप से कराना होगा व निस्तारण के सम्बन्ध में दैनिक आख्या कन्ट्रोल रूम प्रभारी को उपलब्ध करानी होगी। इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही क्षम्य नहीं होगी।

जूनियर डिविजन एनसीसी भर्ती प्रक्रिया सीएमएस इंटर कॉलेज में आयोजित

जन एक्सप्रेस। बलरामपुर

जनपद बलरामपुर में जूनियर डिविजन एनसीसी भर्ती प्रक्रिया का आयोजन सोमवार को जिला मुख्यालय के सिटी माटिसरी इंटर कॉलेज मे आयोजित की गई। जानकारी के अनुसार 31 जुलाई को कमान अधिकारी 51 यूपी बटालियन बलरामपुर के आदेशानुसार सिटी माटिसरी इंटर कॉलेज बलरामपुर में जूनियर डिवीजन एनसीसी भर्ती प्रक्रिया शुचिता पूर्ण तरीके से संपन्न कराई गई। भर्ती प्रक्रिया में सबसे पहले छात्रों का तौल, नाप करने के पश्चात 1600 मीटर दौड़, 5 मीटर सेटल, चीनप, सीटप, पुष्प, स्किप्पिंग तथा लिखित परीक्षा कराया गया। भर्ती प्रक्रिया प्रधानाचार्य के पी यादव के देख रेख मे सकुशल संपन्न हुआ। भर्ती प्रक्रिया में लेफ्टिनेंट शशांक, थर्ड ऑफिसर आनंद किशोर चौधरी, इंस्ट्रक्टर महेंद्र कुमार त्रिपाठी, करुणाकरण श्रीवास्तव, सौम्या मिश्रा, बंदना मिश्रा तथा एनसीसी के कैडेट उपस्थित रहे।

किसान अनुदान पर खरीदें शंकर बीज, कृषि विभाग की किसानों से अपील

जन एक्सप्रेस/बलरामपुर। जिला कृषि अधिकारी आरपी राणा ने बताया की खरीफ 2023 में प्रदेश में सूखा एवं अवर्षण के दृष्टिगत अपर कृषि निदेशक, (बीज एवं प्रक्षेत्र) उश्प्रश कृषि भवन लखनऊ के निर्देश के क्रम में एक सप्ताह तक विशेष अभियान चलाकर उप कृषि निदेशक कार्यालय परिसर में अधिकृत पंजीकृत संकर बीज वितरण कम्पनियों द्वारा स्टाल और प्रदर्शनी लगाकर अनुदान पर संकर बीज उपलब्ध कराया जायेगा। कृषक बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि अपनी आवश्यकता के अनुसार उप कृषि निदेशक कार्यालय परिसर में सम्बन्धित स्टाल से संकर बीजों यथा संकर मक्का, संकर बाजरा तथा संकर ज्वार अनुदान पर बीज क्रय कर सकते है।

पति सहित चार लोगों के खिलाफ दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज

जन एक्सप्रेस। बाबागंज, बहराइच

नवाबगंज थाना क्षेत्र की एक विवाहिता का विगत दिनों कोतवाली नानपारा क्षेत्र के मथुरा ग्राम अंतर्गत संदिग्ध परिस्थितियों में पेड़ से फंदे पर लटकती मिली शव के मामले में पुलिस ने पिता की तहरीर के आधार पर पति सहित ससुराल पक्ष के 3 लोगों के खिलाफ दहेज हत्या सहित अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है।

पिता का आरोप है कि विवाहिता को दहेज की मांग पूरा न होने पर उसे मारा दिया गया है। पुलिस को दी तहरीर में मृतका के पिता ने बताया कि उन्होंने अपनी पुत्री की शादी करीब 3 साल पहले शकील उर्फ सारिब आलम पुत्र नय्याब अली ग्राम मन्सू गावँ भट्टा के साथ की थी। शादी में उनके द्वारा अपने हैसियत के अनुसार दान दहेज दिया था। किंतु शादी के बाद से ही ससुराल पक्ष के लोगों दिए गए दहेज से संतुष्ट नहीं थे। वह अतिरिक्त दहेज की मांग करते थे। उनकी पुत्री के साथ मारपीट करते थे। मानसिक व शारीरिक रूप से करते थे। परेशान उनकी पुत्री ने यह बात उन्हें कई बार बताई। जिसके बाद उन्होंने ससुराल पक्ष के लोगों को समझाया। किन्तु उसके बाद भी ससुराल पक्ष के लोग उनकी पुत्री को मानसिक एवं शारीरिक रूप से परेशान करने थे। 21 जुलाई को उन्हें गांव के किसी व्यक्ति द्वारा सूचना दी गई कि उनकी बेटी का शव कोतवाली नानपारा के मथुरा गाँव के निकट नहर के पास पेड़ से लटका है।

महिला सशक्तिकरण योजनाओं के प्रति किया गया जागरूक

जिला चिकित्सालय में बेटी जन्मोत्सव कार्यक्रम आयोजित कर नवजात बेटियों को बांटा गया बेबी किट और मिठाई

जन एक्सप्रेस। बलरामपुर

सोमवार को जिला महिला चिकित्सालय, एवं संयुक्त जिला चिकित्सालय में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना के अन्तर्गत कन्या जन्मोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें जन्म लेने वाली 11 बालिकाओं के परिजनो से केक कटवा कर बेबी किट, और वार्ड में मिठाई वितरित किया गया। साथ ही महिला सशक्तिकरण योजनाओं के बारे में जागरूक भी किया गया। डॉ विनीता रॉय मुख्य चिकित्सा अधीक्षक महिला चिकित्सालय ने उपस्थित महिलाओं को सम्बोधित किया गया तथा उनके द्वारा बताया गया कि सरकार द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं को सशक्त करने के लिए सरकारी योजनाओं का संचालन एवं लगातार कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें बेटियों को सशक्त किये जाने के क्रम में आज जिला महिला चिकित्सालय में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के अन्तर्गत कार्यक्रम का आयोजन कराया गया है। श्री सतीश चन्द्र जिला प्रोबेशन अधिकारी द्वारा भी उपस्थित लोगो को बताया गया कि बेटियों को बोझ न समझे, उनको जन्म लेने का पूरा अधिकार है। यदि कोई भी व्यक्ति भ्रूण हत्या कराता है तो यह कानूनन अपराध है और उसके विरूद्ध विधिक कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी। सुश्री रागिनी मिश्रा, महिला कल्याण अधिकारी द्वारा बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना के बारे में सभी को जागरूक किया गया तथा बताया गया कि यह योजना भारत सरकार द्वारा संचालित योजना है। इसके अन्तर्गत बेटियों / उनके परिजनों को जागरूक किये जाने का अभियान जनपद में निरन्तर चलाया जा रहा है तथा संयुक्त जिला चिकित्सालय बलरामपुर में भी बेटी बचाओ-बेटी पढाओ योजना के अन्तर्गत कन्या जन्मोत्सव कार्यक्रम में जन्म लेने वाली 05 बालिकाओं को बेबी किट देकर वार्ड में मिठाई का वितरण किया गया। बेबी किट पाकर एवं जानकारी प्राप्त कर सभी जन-सामान्य ने हर्ष व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस मौके पर डॉ विनीता रॉय मुख्य चिकित्सा अधीक्षक महिला चिकित्सालय बलरामपुर, श्रीमती साक्षी मिश्रा ओ0टी0 इन्चार्ज जिला संयुक्त चिकित्सालय बलरामपुर, सुश्री रागिनी मिश्रा, महिला कल्याण अधिकारी, सुश्री राधिका मिश्रा, जिला समन्वयक महिला शक्ति केन्द्र बलरामपुर, सुश्री सना प्रभारी मैनेजर वन स्टाप सेन्टर, बलरामपुर, श्रीमती मधू वर्मा, सामाजिक परामर्शदाता, वन स्टाप सेन्टर बलरामपुर, श्री राजेश कुमार आउटरीच वर्कर जिला बाल संरक्षण इकाई एवं जन सामान्य के लोग उपस्थित रहे।

एमएड में प्रवेश हेतु 64 अभ्यर्थियों ने काउंसिलिंग कराई

जन एक्सप्रेस/अयोध्या। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की एमएड प्रवेश काउंसिलिंग में क्षैतिज आरक्षण के सभी अभ्यर्थियों की काउंसिलिंग की गई। सोमवार को संत कबीर सभागार में प्रातः 10 बजे एमएड प्रवेश हेतु काउंसिलिंग शुरू की गई। इसमें 1 से लेकर 100 रैंक तक के क्षैतिज आरक्षण के अभ्यर्थियों को बुलाया गया था जिसमें 64 अभ्यर्थियों ने काउंसिलिंग कराई। आवासीय प्रवेश समन्वयक प्रो0 विनोद श्रीवास्तव ने बताया कि 101 से लेकर आगे तक रैंक की प्रवेश काउंसिलिंग मंगलवार को भी होगी। काउंसिलिंग प्रक्रिया में उप समन्वयक प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, डॉ0 अनिल कुमार, डॉ0 शशि सिंह, डॉ0 नीलम सिंह, डॉ0 महेन्द्र सिंह, डॉ0 सुधीर श्रीवास्तव, डॉ0 रवि प्रकाश पाण्डेय तथा विवेक सिंह का विशेष योगदान रहा

सड़क सुरक्षा सप्ताह के समापन अवसर पर महिला पीजी कॉलेज में कार्यक्रम आयोजित

जन एक्सप्रेस। बहराइच

सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के समापन अवसर पर सोमवार को महिला पीजी कॉलेज बहराइच में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का निर्देशन कालेज की प्राचार्या प्रो. प्रिया मुखर्जी ने किया। कार्यक्रम का संयोजन महिला पीजी कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अमृता मिश्रा एवं सड़क सुरक्षा प्रभारी आकांक्षा पटेल ने किया। उन्होंने बताया कि सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के तहत 17 जुलाई 2023 से 31 जुलाई 2023 विभिन्न जन जागरुकता कार्यक्रम कराए गए। इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत निबंध, प्रश्नोत्तरी तथा पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। इसके साथ ही छात्राओं को सड़क सुरक्षा की शपथ भी दिलाई गई। रैली के द्वारा छात्राओं ने लोगों को शराब पीकर वाहन न चलाने, बाइक पर सदैव हेलमेट का प्रयोग करने, वाहन तेज गति से न चलाने, कार चलाते समय सीट बेल्ट पहनने, पैदल व साइकिल से सदैव बाई ओर चलने तथा वाहनों की समय-समय पर जाँच कराते रहने का आह्वान किया जिससे दुर्घटना से बचा जा सके। इसके साथ ही अन्य तमाम प्रकार की जानकारी भी आम जनमानस को दी। कार्यक्रम के तहत छात्राओं द्वारा सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा, सड़क सुरक्षा का रखें ध्यान, यातायात नियमों का करें सम्मान, सड़क सुरक्षा नियमों को अपनाना, कभी भी वाहन तेज नहीं चलाना, सुरक्षित वाहन चलायें, सुरक्षित घर जायें, नजर हटी दुर्घटना घटी आदि नारों से आम जनता को जागरुक किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की समस्त प्रवक्ताएं तथा अन्य शिक्षणेत्तर कर्मचारी उपस्थित रहे।

पशुपतिनाथ जनक सम्मान से नवाजी गई विभिन्न क्षेत्रों की प्रमुख हस्तियां

जन एक्सप्रेस। अयोध्या

समाज में कुछ अलग हटकर कार्य करने वाली संस्थाओं और व्यक्तियों को आरोही एक उड़ान सेवा ट्रस्ट के द्वारा सम्मानित किया गया। यह सम्मान विभिन्न क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने वाली प्रमुख हस्तियों को प्रदान किया गया। साथ ही अपील की गई कि लोग संस्था के साथ जुड़ें और समाजसेवा के कार्यों को प्रदेश व देश स्तर पर कार्य करने में सहयोग दें। कार्यक्रम की शुरुआत संस्था के अध्यक्षा के पिता स्वर्गीय पशुपतिनाथ जी के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया गया।

शहर के एक होटल में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती मनोरमा देवी को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।इस मौके पर मंच पर मौजूद विशिष्ट अतिथि त्रिलोकीनाथ सिन्हा राम बहादुर सिंह अमर चंद श्रीवास्तव अनुपम सहाय विनोद श्रीवास्तव रहे। यह कार्यक्रम चौक स्थित आभा होटल में शहर के गणमान्य अतिथियों के बीच संपन्न हुआ।

इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष पल्लवी वर्मा ने बताया कि हमारा उद्देश्य समाज सेवा के साथ-साथ नारी सशक्तिकरण के लिए किया गया है जिसमें विशेष रूप से आर्थिक एवं सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाओं को आगे बढ़ाना एवं उनको आत्मनिर्भर बनाने से तथा इसी क्रम में संस्था लगातार प्रयास करते हुए कुछ महिलाओं को रोजगार भी मुहैया कराया गया है। आज का यह कार्यक्रम विशेष रूप से पुरुष समाजसेवियों को जो कि समाज के लिए दिन रात एक कर के अपने उत्कृष्ट सेवा दे रहे हैं। उनके उत्साहवर्धन के लिए और उनको देखकर एवं से सीख लेकर समाज के अन्य लोग भी इस इस नेक काम को आगे बढ़ाने हेत आयें। इस मौके पर ट्रस्ट की पदाधिकारी दिनेश श्रीवास्तव संजीव वर्मा राजीव रंजन सुनील अवस्थी प्रज्ञा श्रीवास्तव अनिता सिंह पूनम श्रीवास्तव डॉ प्रियंका श्रीवास्तव बबिता श्रीवास्तव आदि मौजूद रही।

नगर पंचायत कुमारगंज में सास-बहू-बेटा सम्मेलन संपन्न

मिशन परिहार विकास कार्यक्रम के तहत परिवार नियोजन के बारे में किया गया जागरूक

जन एक्सप्रेस। मिल्कीपुर-अयोध्या

शासन के निर्देश पर स्वास्थ्य विभाग के द्वारा चलाई जा रही सरकार की महत्वकांक्षी योजनाओं के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को परिवार नियोजन के बारे में जागरूक किया गया। उन्हें स्वस्थ तथा सुखी परिवार के विषय में जानकारी दी जा रही है।

जिसको लेकर स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा विभिन्न योजनाओं के तहत कार्यक्रम का आयोजन करके लोगों में जागरूकता फैलाने का कार्य तेजी से कर रही है। जिसका नजारा सोमवार को मिल्कीपुर तहसील क्षेत्र स्थित नगर पंचायत कुमारगंज के हेल्थ एंड बेलनस सेंटर बवां में देखने को मिला।जहां स्वास्थ्य विभाग की टीम ने सीएचसी अधीक्षक खंण्डासा आनंद सिन्हा के नेतृत्व में गांव में कार्यक्रम का आयोजन कर दंपती को परिवार नियोजन के विषय में बताते हुए कई महत्वपूर्ण जानकारी दी।

नगर पंचायत क्षेत्र के हेल्थ एंड बेलनस सेंटर पर सीएचसी अधीक्षक डॉ आनंद सिन्हा के नेतृत्व में परिवार नियोजन के तहत सास- बहू- बेटा सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसका उद्देश्य गांव के लोगों को परिवार नियोजन के बारे में जानकारी दी जा सके। इस दौरान आदर्श दंपती स्वाती, विमलेश, खुशबू, पूजा, सीमा, रेनू, गुंजा सहित 10 लाभार्थियों को चेयरमैन विकास सिंह छोटू ने शगुन किट भेंट किया। स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा बैलून प्रतियोगिता के माध्यम से परिवार नियोजन का संदेश दिया गया और सास- बेटा- बहू सम्मेलन में बास्केट ऑफ च्वॉइस की जानकारी दी गई। सीएओ अमरेंद्र कुमार उपाध्याय ने बताया कि मातृ व शिशु मृत्यु दर में कमी लाने व और बेहतर मातृत्व स्वास्थ्य के लिए जरूरी है कि शादी के दो साल बाद पहले बच्चे के जन्म की योजना बनाई जाए और दूसरे बच्चे के जन्म में कम से कम तीन साल का अंतर जरूर रखा जाए। छोटा परिवार रहेगा तो खुशी परिवार रहेगा। बच्चों की अच्छी परवरिश भी माता-पिता कर सकेंगे। इस मौके पर बीसीपीएम नरेंद्र मिश्रा, संदीप गुप्ता, एएनएम रागनी, आशा बहू आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों उर्मिला, संगीता, रीता, ममता, संतोष कुमारी, विजयलक्ष्मी, गंगाजली रेखा सहित सम्मेलन में नगर पंचायत क्षेत्र की महिलाएं एवं पुरुष बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

वरिष्ठ लेखाकार अवधेश कुमार जायसवाल हुए सेवानिवृत्त

जन एक्सप्रेस। अयोध्या

मण्डलीय सूचना कार्यालय अयोध्या के वरिष्ठ लेखाकार अवधेश कुमार जायसवाल ने 31 जुलाई 2023 को अधिवर्षता आयु पूर्ण होने पर उपनिदेशक सूचना अयोध्या मण्डल अयोध्या प्रभारी मुख्यमंत्री मीडिया सेन्टर लोकभवन लखनऊ डा0 मुरलीधर सिंह के नेतृत्व में सूचना विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों सहित अयोध्या जनपद के सम्मानित पत्रकार बन्धुओं की गरिमामयी उपस्थिति में मण्डलीय सूचना कार्यालय में भावभीनि विदाई समारोह का आयोजन किया गया। श्री अवधेश कुमार जायसवाल ने 16 अगस्त 1984 को जनपद अयोध्या में गणक लिपिक के पद पर कार्य ग्रहण किया था। इसके बाद सन् 1992 से 1998 तक जनपद बस्ती में अपना योगदान प्रदान किया। तद्पश्चात फिर से जनपद अयोध्या में लेखाकार के पद पर दोबारा आये, यहां 10 साल सेवा देने के बाद मुख्यालय द्वारा इनको जनपद अम्बेडकरनगर का कार्य दिया गया। जनपद अम्बेडकरनगर में लगभग 5 वर्ष की सेवा प्रदान करने के बाद पुनः सन् 2012 से मण्डलीय कार्यालय अयोध्या में अपना योगदान प्रदान कर आज दिनांक 31 जुलाई 2023 को सेवानिवृत्त हो गये। श्री जायसवाल जी का अयोध्या के प्रति विशेष लगाव रहा है, जिसका परिणाम यह रहा कि इनको वरिष्ठ अधिकारियों से लेकर निचले स्तर तक के कर्मचारी व अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने इनको उच्च सम्मान एवं आदर प्रदान किया। श्री जायसवाल को जनपदीय एवं मण्डलीय कार्यालय के अधिकारियों कर्मचारियों सहित सूचना मुख्यालय लखनऊ के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से सतत स्नेह एवं सहयोग मिलता रहा।

परिवहन विभाग के सड़क सुरक्षा पखवाड़े का हुआ समापन

* अपनी सुरक्षा के लिए सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियमों का पालन करें: डॉ.दलजीत कौर
* जिले में सडक दुर्घटनाओं में आई है कमी: वीरेंद्र सिंह
* 95 प्रतिशत पोस्टमार्टम सड़क दुर्घटनाओं के होते है: आलोक कुमार (सीएमओ)

जन एक्सप्रेस । पीलीभीत

सोमवार को परिवहन विभाग के सड़क सुरक्षा पखवाड़े का समापन हुआ इस अवसर पर अपने उद्बोधन में जिला पंचायत अध्यक्षा डॉ.दलजीत कौर ने कहा हैं। कि सडक सुरक्षा पखबाडा मनाने का मुख्य उद्देश्य सडक दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए युवा पीढी को जागरूक करना है। परिवहन विभाग ने इस पखवाड़े में लोगों को जागरूक करने का कार्य किया है। इसमें सबसे बडी तो यह है हम स्वयं अपनी रक्षा के लिए इन नियमों का पालन आवश्यक है। जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ.दलजीत कौर स्थानीय गांधी प्रेक्षागृह में परिवहन विभाग की ओर से आयोजित सडक सुरक्षा पखबाडे के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रही थी। उन्होंने सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी से आग्रह किया कि सडक सुरक्षा के लिए समय-समय पर विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में प्रतियोगिताओं का आयोजन करें, उसमें जो सहयोग की आवश्यकता होगी, वे उसमें करने को तैयार है।

उन्होंने सड़क पर चलने से पहले नियमों का पालन करते हुए घर से निकलें। समापन समारोह में बोलते हुए मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ.आलोक कुमार ने कहा कि पीलीभीत में जो शवों के पोस्टमार्टम होते है, उसमें 75 प्रतिशत सडक दुर्घटनाओं के होते है। इसमें भी 90 प्रतिशत 18 से 40 वर्ष के युवाओं के होते है। इससे पूर्व स्वागत भाषण करते हुए सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी वीरेंद्र सिंह ने पूरे पखबाडे में हुए कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सडक सुरक्षा जागरूकता के अभियान के चलते पीलीभीत में सडक दुर्घटनाओं में कमी आई है। उन्होंने बताया कि पहली जनवरी से 31 जून 2022 तक 241 दुर्घटनाएं हुई थी, जबकि इस अवधि में 126 लोगों की मृत्यु तथा 130 लोग घायल हुए थे। जबकि पहली जनवरी से 31 जून 2023 तक 215 दुर्घटनाएं हुई। जबकि इस अवधि में 114 मृत्यु हुई जबकि घायलों की संख्या घटकर 116 हो गई। उन्होंने सभी विभागों के सहयोग के लिए आभार जताया। बेसिक शिक्षा अधिकारी अमित कुमार सिंह ने यातायात नियमों के पालन का आग्रह किया। समापन समारोह को छत्र साहिल रजा, डॉ.दिवाकर सिंह, डॉ.राखी सिंह, डॉ.बरखा, डॉ.आरपी गंगवार, डॉ. अजय सक्सेना, अनिल कुमार, कौशलेंद्र भदौरिया, दिव्यांशु भारती, वर्षा गंगवार, आषा वर्मा, चंद्रकली, टीएसआई सुरेंद्र सिंह, अमरिया बस यूनियन के वसीम कुरैशी ने संबोधन किया।

इस अवसर पर नेक व्यक्ति के रुप में मोहित कश्यप, टिंकू कश्यप, राकेश बाबू, शुभम मिश्र, यातायात पुलिस के टीएसआई सुरेंद्र सिंह, मुख्य आरक्षी अमित पांडेय, मुख्य आरक्षी शाहिर हुसैन, शिक्षक डॉ.बरखा, डॉ.दिवाकर सिंह, डॉ.अजय सक्सेना, डॉ.आरपी गंगवार, इंतजार अहमद, अनिल कुमार, स्काउट एंव गाइड के नितिन, तनुष्का शर्मा, चंद्र कली, योगैश मौर्या, छात्रों में गौरव कुमार, वर्षा गंगवार, सहिल रजा को सम्मानित किया गया। इनके अलावा गैर सरकारी व्यक्तिों में डॉ.अमिताभ अग्निहोत्री, कलीम अतहर, कौशलेंद्र भदौरिया, को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ.अमिताभ अग्निहोत्री तथा आभार प्रदर्शन परिवहन विभाग के आरआई हरिओम ने किया।

फ्लू वायरस का प्रकोप बढ़ा सीएचसी में मरीजों की भरमार

* आई फ्लू से ग्रसित सीएचसी पहुंचने वाले मरीजों की संख्या दो सौ पार
* नेत्र परीक्षक दवाई के साथ दे रहे परामर्श

जन एक्सप्रेस । पीलीभीत

पूरनपुर। उमस भरी गर्मी ओर रुक-रुक कर हो रही बरसात के बाद से क्षेत्र में आई फ्लू का प्रकोप तेजी से पैर पसार रहा है। सीएचसी पूरनपुर में इन दिनों आई फ्लू से ग्रसित मरीजों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। क्षेत्र के अधिकांश घरों के सदस्य आई फ्लू वायरस की चपेट में है। यह वायरस एक से दूसरे के संपर्क में आने से तेजी से फैला है।

पूरनपुर क्षेत्र में इन दिनों आई फ्लू का प्रकोप बढ़ रहा है। ग्रसित मरीज सीएचसी में आकर इलाज करा रहे हैं। सोमवार को दोपहर सीएचसी पहुंचे। बंजरिया निवासी छत्रपाल (50) बर्ष ने बताया कि उनके परिवार में चार लोग आई फ्लू की समस्या से ग्रसित है। सीएचसी पहुंचे मदारपुर निवासी रजनीश कुमार ने बताया कि खुजली के बाद आंखें लाल हो गई।अगले दिन आंखों में सूजन आ गई। परिवार में पिता और मां भी आई फ्लू के वायरस की चपेट में है। पूरनपुर के मोहल्ला रजागंज निवासी अखदस (5) बर्ष के पिता ने बताया कि उनके घर में सबसे पहले बेटे की आंखों में लाली और खुजली की समस्या उत्पन्न हुई, जो बाद में सूजन और फिर आंखों से पानी कीचड़ आने में तब्दील हो गई।

बेटे के बाद उनकी पुत्री भी वायरस से संक्रमित हो गई। पुत्री की दोनों आंखें खून की तरह लाल हो गई है, और सूजन के साथ लगातार आंखों से पानी और कीचड़ निकल रहा है।आई ड्राप और गुलाब जल आंखों में डालने से भी राहत नहीं मिली तो अस्पताल पहुंचे हैं। नेत्र चिकित्सक का कहना है कि बीते चार दिनों से आई फ्लू वायरस से ग्रसित मरीजों की संख्या में इजाफा हुआ है। मरीजों की संख्या 150 से लेकर दो सौ पार तक पहुंच रही है।

घातक नहीं है आई फ्लू,ना ही रोशनी पर प्रभाव

आंखों से संबंधित बीमारी के मरीज चार दिन से बढ़ रहे हैं। इन दिनों आई फ्लू व नेत्र संबंधी बीमारी से ग्रसित मरीजों की संख्या दो सौ के पार पहुंच रही है। आई फ्लू में अचानक आंख लाल हो जाना आंखों में जलन खुजली होना आंसू आना और आंखों में सूजन जैसे समस्या देखी जा रही है यह कहना है सीएचसी में तैनात नेत्र चिकित्सक अधिकारी सतीश कुमार सिंह का। बरसात के मौसम में ज्यादा फैलता है। यह एक वायरस है। जानलेवा नहीं है और ना ही किससे रोशनी पर कोई प्रभाव पड़ता है। आंख में कोई भी परेशानी है तो घरेलू नुस्खों को ना अपनाए सीधे नेत्र रोग विशेषज्ञ से सलाह ले। यदि कोई व्यक्ति संक्रमित है तो दवाओं के साथ बचाव पर भी ध्यान देना है।

आई फ्लू से इस तरह करें बचाव....

आंखों पर काला चश्मा लगाए और बार-बार हाथ व कपड़ा ना लगाएं। आंखों से आशु या डिस्चार्ज है तो रुई से पोछें,सफाई का ध्यान रखें। आंखों को एक घंटे में ताजे पानी से धोएं।

कार्रवाई से बचने की जुगत: विभाग के लोगों से संपर्क साधने में जुटे शिक्षक

* बीईओ ने संज्ञान में आए स्कूलों के शिक्षकों को जारी किए नोटिस, मची खलबली
* छुट्टी निरस्त होने के बावजूद शनिवार को पूरनपुर क्षेत्र में अधिकांश स्कूल बंद रहने का मामला

जन एक्सप्रेस । पीलीभीत

पूरनपुर। मोहर्रम की छुट्टी निरस्त कर शनिवार को शासन से स्कूल खोलने के निर्देश थे लेकिन पूरनपुर बीआरसी क्षेत्र में अधिकांश स्कूल बंद रहे। इससे नौनिहालों को बैरंगा लौटना पड़ा था। शिक्षकों की इस मनमानी की कुछ लोगों ने विभागीय अधिकारियों से भी शिकायत की लेकिन ध्यान नहीं दिया गया। रविवार को जनएक्सप्रेस ने समाचार को प्रमुखता से प्रकाशित किया तो अधिकारी हरकत में आए। बीईओ ने अब तक संज्ञान में आए बंद रहे स्कूलों के शिक्षकों को नोटिस जारी किया है। इससे उनमें खलबली मच गई। बताते हैं कि कार्रवाई से बचने के लिए मनमानी करने वाले शिक्षकों ने विभाग के कुछ लोगों से संपर्क साधना शुरू कर दिया है। ताकि मामले को रफा-दफा किया जा सके।

पूरनपुर बीआरसी क्षेत्र में संचालित परिषदीय स्कूलों में नामांकित बच्चों को सरकार की तरफ से एमडीएम और अन्य योजनाओं का लाभ दिया जाता है। शासन स्तर से बच्चों की शिक्षा का स्तर मजबूत करने पर जोर दिया जा रहा है लेकिन अधिकांश स्कूलों में शिक्षकों की मनमानी और उदासीनता से बच्चों की शिक्षा में सुधार नहीं हो रहा है। बतादें कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति की तीसरी वर्षगांठ पर दिल्ली में अखिल भारतीय शिक्षा समागम को लेकर बेसिक के स्कूलों में शनिवार को मोहर्रम की बजह से होने वाली छुट्टी को निरस्त कर दिया गया। इस दिन प्रधानमंत्री का लाइव प्रसारण बच्चों को दिखाने के निर्देश हुए। इसका कुछ ही स्कूलों में पालन हुआ। जबकि अधिकांश स्कूलों में ताले लटके रहे। गांव मोहनपुर जत्ती के ओमनाथ, शिवपाल का कहना है कि स्कूल न खुलने से बच्चों को वापस होना पड़ा। सुआबोझ, बिलदंपुर अशोक, नरायनपुर, सिमरिया के स्कूल में भी ताला लटका रहने की बात सामने आई। ऐसा हाल अन्य कई स्कूलों का रहा। रंपुरा कोन में स्कूल खुला लेकिन बच्चों के लिए एमडीएम नहीं बना। इसके अलावा सेहरामऊ उत्तरी, ट्रांस शारदा क्षेत्र में भी कई स्कूलों के गेट पर ताला लटका रहा। लोगों ने विभागीय अधिकारियों से शिकायत की लेकिन उन्होंने ध्यान नहीं दिया। जनएक्सप्रेस में शिक्षकों की मनमानी को लेकर प्रमुखता से समाचार प्रकाशित हुआ तो खलबली मच गई। बीईओ ने पांच छह स्कूलों के शिक्षकों को कारण बताओ नोटिस दिया है। इसमें निर्धारित समय में जबाब न देने पर कार्रवाई की चेतावनी दी गई है। वहीं चर्चा है कि बीईओ ने कुछ ही स्कूलों के शिक्षकों को नोटिस दिया है जबकि उस दिन अन्य कई स्कूल भी बंद रहे थे। इस मामले की भी चर्चा हो रही है।

> मेहनपुर जत्ती, रंपुरा कोन, सेहरामऊ, गोरा, नवदिया आदि स्कूलों के बंद रहने की सूचना मिली। इन स्कूलों के शिक्षकों से स्पष्टीकरण तलब किया गया है। अन्य स्कूल भी बंद रहे इसकी जानकारी नहीं है। निर्धारित समय में नोटिस का जबाब न देने पर शिक्षकों पर अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।
> -विजय वीरेंद्र सिंह, खंड शिक्षा अधिकारी, पूरनपुर

रामलीला के आयोजन को शीघ्र धन की व्यवस्था में जुटे पदाधिकारी: नयन

जन एक्सप्रेस । प्रयागराज

यमुनानगर। सार्वजनिक रामलीला समिति की बैठक में महामंत्री नयन कुशवाहा ने कहा कि समय बहुत कम है लिहाजा सभी पदाधिकारियों को रामलीला कार्यक्रम के लिए शीघ्रता से धन की व्यवस्था में लग जाना होगा। पीएसी कॉलोनी स्थित एक गेस्ट हाउस मे हुई बैठक की अध्यक्षता करते हुए रामलीला समिति के अध्यक्ष एवं पार्षद राकेश जायसवाल ने सभी उपस्थित पदाधिकारियों के साथ 15 अक्टूबर से ध्वनि एवं प्रकाश के माध्यम से प्रस्तुत होने वाली सार्वजनिक रामलीला की रूपरेखा बनाई। साथ ही आय-व्यय के ब्योरे पर भी चर्चा हुई। समिति के महामंत्री एवं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता नयन कुशवाहा ने कहा कि समय हमारे पास बहुत कम है, ऐसे में हमें शीघ्रातिशीघ्र रामलीला कार्यक्रम के आयोजन के लिए आवश्यक धन की व्यवस्था में लग जाना चाहिए। सभी पदाधिकारियों ने रामलीला कार्यक्रम को और सुंदर बनाने के लिए अपने सुझाव समिति के समक्ष रखें। बैठक का संचालन नयन कुशवाहा ने किया। बैठक में उपाध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष दिलीप केसरवानी, आरके शुक्ला, समर बहादुर सिंह, हरे कृष्ण तिवारी, लक्ष्मीकांत तिवारी, पार्षद मयंक यादव, पार्षद दिलीप जायसवाल, पार्षद पवन यादव, पार्षद रणविजय सिंह, योगेश सिंह, मनोज सिंह, धीरेन्द्र यादव, शिव शंकर मिश्रा, नंदू भाई आजाद, बृजेश सिंह, सिद्धू पांडेय, राजकुमार कुशवाहा, सुरेश पटेल,भोला केसरवानी, मोहम्मद अजहर, रवि करण सिंह, मुन्ना पांडेय आदि उपस्थित रहे।

प्रयागराज का श्रृंगवेरपुर ब्लॉक: फर्जी आंकड़ों के नीचे दबी हांफती योजनाएं

* जन एक्सप्रेस पड़ताल: करोड़ों रुपए हजम कर गए 'मदारी'

जन एक्सप्रेस । प्रयागराज

श्रृंगवेरपुर धाम। खंड विकास दफ्तर श्रृंगवेरपुर में गड़बड़ी का अंबार है। सरकारी विकास योजनाएं हेराफेरी की शिकार हैं। वास्तविकता से कोसो दूर यहां फर्जी कागजी आंकड़ेबाजी का तगड़ा खेल चल रहा है। शासन - प्रशासन के खास होने का भौकाल टाइट रखने वाले यहां सक्रिय हैं। कंधे पर भगवा गमछा यहां की गड़बड़ियों पर पर्दा डालने का पास है। शासन प्रशासन की आंखों में धूल झोंकने का टेंडर लिए कई माहिर लोग सक्रिय हैं। यह सौ फीसदी सच है कि सरकार की करोड़ों रूपए की अति महत्त्वाकांक्षी विकास योजना यहां फर्जी आंकड़ेबाजी के चंगुल में फंसी हांफ रही हैं। मजे की बात यह कि उसी आंकड़े को उपलब्धि बताकर स्थानीय जन प्रतिनिधि खुद गुमराह के शिकार हैं।

नब्बे फीसदी जनता बीडीओ, वीडीओ के नाम चेहरे नहीं जानती

ब्लॉक में अधिकारी, कर्मचारियों की लंबी फेहरिस्त है। कार्य की मुस्तैदी का सहज अंदाज लगाया जा सकता है जिसके लिए नौकरी कर रहे हैं उस क्षेत्र की नब्बे फीसदी जनता खंड विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत अधिकारी, ग्राम विकास अधिकारी के नाम और चेहरे तक से वाकिफ नहीं है। फील्ड में कभी न जाने के अभ्यस्त इन स्थानीय अफसर और कर्मचारियों के बीच ज्यादातर विकास योजनाएं महज आंकड़े में कैद होकर रह गई हैं।यह तल्ख सच्चाई जन एक्सप्रेस की पड़ताल में सामने आई।

उच्च स्तरीय स्थलीय जांच में खुलेगी पोल

करीब तीस फीसदी ग्राम पंचायतों में ग्राम सचिवालय नहीं बने हैं। जो बने भी हैं, वहां पंद्रह फीसदी ग्राम सचिवालय कभी खुलते ही नहीं। शौचालयों, पीएम आवासों के वितरण में गड़बड़ी की गई है। ग्रामीणों ने बताया कि ग्राम पंचायत अधिकारी गांवों में कभी आते ही नहीं।

सावन के चौथे सोमवार को विश्वनाथ दरबार में उमड़े भक्त

जन एक्सप्रेस । वाराणसी

सावन के चौथे सोमवार को श्री काशी विश्वनाथ के दर्शन-पूजन के लिए भक्तों का रेला उमड़ पड़ा। भोर से ही भक्तों की लाइन लग गई। मंगला आरती के बाद दर्शन-पूजन का क्रम शुरू हुआ। वाराणसी समेत देश-दुनिया से आए भक्त बाबा का दर्शन व गंगा जल से अभिषेक कर रहे हैं। रात तक लगभग छह लाख भक्तों के दर्शन का अनुमान है। चौथे सोमवार को बाबा विश्वनाथ का भागीरथी श्रृंगार किया जाएगा। सोमवार की रात शयन आरती के बाद बाबा विश्वनाथ का श्रृंगार किया जाएगा। वहीं, मंगलवार को पूर्णिमा मासी का भव्य श्रृंगार होगा। इस सावन में आठ सोमवार और दो पूर्णिमा पड़ रहे हैं। पूरे 10 दिन तक बाबा का अलग-अलग रूपों में श्रृंगार होगा। अभी तक 3 श्रृंगार चल प्रतिमा, गौरी शंकर और अमृत वर्षा श्रृंगार हो चुके हैं। अब 7 श्रृंगार बाकी हैं। बाबा विश्वनाथ के दरबार को फूलों से सजा दिया गया है। आम श्रद्धालुओं के साथ ही कांवरिये बाबा का जलाभिषेक कर रहे हैं। कारिडोर हर-हर महादेव के उद्घोष से गुंजायमान हो रहा। दर्शनार्थी मंदिर के अंदर व्यवस्था से संतुष्ट दिखे। बोले, काफी अच्छी व्यवस्था की गई है। बड़े अच्छे से दर्शन हो गया। बाबा का दर्शन करने पहुंची भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि बाबा के दर्शन कर मन प्रफुल्लित हो गया। कारिडोर देखकर काफी अच्छा लगा। जिस प्रकार से व्यवस्था चल रही है, वह काबिलेतारीफ है। दर्शनह्या काफी अच्छे से हो रहा है।

किन्नर महामंडलेश्वर करेंगी शिव तांडव

किन्नर महामंडलेश्वर हेमांगी सखी अपने भक्तों के साथ बाबा विश्वनाथ का जलाभिषेक कर सकती हैं। वह दोपहर 12 बजे दशाश्वमेध घाट से कलश में गंगाजल लेकर गेट नंबर चार से धाम में प्रवेश करेंगी। भक्त महामंडलेश्वर को अर्द्धनारीश्वर मानते हैं। इस दौरान हेमांगी सखी भक्तों संग वहां शिव तांडव भी करेंगी।

रामपुर कजरी महोत्सव में लोक कलाकारों की सजी महफिल

जन एक्सप्रेस । प्रयागराज

रामपुर स्थित लोकमंगल संस्थान में आयोजित कजरी महोत्सव में जुटे यमुनापार के लोक कलाकारों ने प्रस्तुतियों से खूब समां बांधा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जागृति मिशन के संयोजक डॉ.भगवत पांडेय रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ.व्यंजना पांडेय, डॉ.आयुषी पांडेय, डॉ.योगेन्द्र प्रताप सिंह मौजूद रहे। अध्यक्षता संस्थान के निदेशक रामलोचन सांवरिया और संचालन वरिष्ठ गीतकार डॉ.राजेंद्र शुक्ल ने किया। त्रिभुवन नाथ गौड़ द्वारा प्रस्तुत देवी गीत के उपरांत कलाकारों ने कजरी के अलग अलग कई रंग उकेरे। आकाशवाणी दूरदर्शन के चर्चित कलाकार श्यामलाल बेगाना की चौलर, कजरी खूब सराही गई। वरिष्ठ लोकगायक बचऊलाल यादव द्वारा प्रस्तुत बनारसी कजरी ने खूब तालियां बटोरी। जनक जी, राजेश कुमार, विभव शंकर यादव, दुखीराम गुप्ता, मोनू मस्ताना, दीपेश कुमार बबलू और सत्यवान ने बेहतर मिर्जापुरी कजरी प्रस्तुत करके खूब वाहवाही लूटी।

रंजीत कुमार, पवन कुमार, आनंद, रामअवतार कुशवाहा के बाद इन्द्रजीत यादव, रामभोर मिश्र, कौशिल्या देवी और मोहिनी श्रीवास्तव ने मिर्जापुरी कजरी प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि ने लोक कलाकारों को संस्कृति का संवाहक बताते हुए इसकी अलख जगाए रखने पर जोर दिया। कार्यक्रम के उपरांत दिवंगत समाजसेवी नारायण दत्त तिवारी एवं दिवंगत लोक कलाकार रामबाबू जूनियर को श्रद्धांजलि दी गई। लोक कलाकार रामबाबू यादव ने सभी के प्रति स्वागत व आभार प्रकट किया। इस मौके पर वेद श्रीवास्तव, जीतेंद्र जलज,आचार्य मंगला प्रसाद, मोहन जी शुक्ला, फूलचंद यादव, रंजीत कुमार, अमर बहादुर, राम सुचित, अतुल तिवारी, पिंटू गुप्ता, विजयपाल, शिवा समेत बड़ी संख्या में संगीत प्रेमी श्रोता मौजूद रहे।

सरकारी गनर के लिए दर्ज कराया हत्या के प्रयास का झूठा मुकदमा, भाजपा नेता की करतूत, गिरफ्तार

जन एक्सप्रेस । वाराणसी

* पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के जरिये जांच की तो उज्ज्वल का झूठ पकड़ गया

भाजपा काशी क्षेत्र के नमामि गंगे विभाग के सहसंयोजक उज्ज्वल वर्मा ने सरकारी गनर पाने के लिए खुद की हत्या के प्रयास व धमकी मिलने की झूठी कहानी गढ़ दी। वहीं तहरीर देकर कोतवाली में मुकदमा भी दर्ज करा दिया। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के जरिये जांच की तो उज्ज्वल का झूठ पकड़ गया। इस पर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

सोमवार को अदालत में पेश करने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। बुलानाला निवासी उज्ज्वल वर्मा ने पुलिस को बताया कि वह शनिवार की रात दारानगर से मैदागिन की तरफ जा रहा था। मैदागिन पानी टंकी के पास त्रिपुरारी चौहान नाम व्यक्ति ने खुद को गुंडा बताते हुए जान से मारने की नीयत से उसके ऊपर फायरिंग कर दी। संयोग अच्छा था कि वह बाल-बाल बच गया। गोली चलने की आवाज सुनकर उसके साथी मौके पर पहुंच गए तो त्रिपुरारी भाग गया। कोतवाली थाना प्रभारी अश्वनी चतुर्वेदी ने बताया कि तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच की गई तो पता चला कि उज्ज्वल पर किसी ने फायरिंग नहीं की, बल्कि खुद ही तमंचा और कारतूस मंगाकर फायरिंग कर अपने हत्या के प्रयास की फर्जी कहानी गढ़ दी।

रिश्तेदारी से लौट रहे बाइक सवार पर कुल्हाड़ी से हमला कर किया लहूलुहान

जन एक्सप्रेस । पीलीभीत

* हालत गंभीर होने पर जिला अस्पताल रेफर
* दोनों पक्षों ने कार्रवाई के लिए पुलिस को दी तहरीर

पूरनपुर। मुझा खुर्द कला निवासी अपनी लड़की के घर से वापस लौट रहे बाइक सवार को घात लगाए बैठे पांच दबंगों ने गर्दन में रस्सी डालकर गिरा लिया। आरोप है कि ताबड़तोड़ कुल्हाड़ी से हमला कर लहूलुहान कर दिया। दबंग बाइक सवार को मरणासन्न अवस्था में छोड़कर मौके से फरार हो गए।

सूचना के बाद परिजन घायल अवस्था में कोतवाली लेकर पहुंचे। कार्रवाई के लिए दोनों पक्षों की ओर से कोतवाली पुलिस को तहरीर दी गई है। पूरनपुर कोतवाली क्षेत्र के गांव शेरपुर कला निवासी शाबान खां ने पुलिस को दी गई तहरीर में बताया कि उसके पिता निजामतुल्ला सोमवार मुझा खुर्द कला निवासी अपनी लड़की के घर से बाइस से वापस लौट रहा था। आरोप है कि रास्ते में पहले से घात लगाए बैठे गांव के ही चार दबंगों ने धारदार हथियार के बल पर बाइक को रोक लिया। दबंगों ने गर्दन में रस्सी डालकर जमीन में गिरा लिया। कुल्हाड़ी व बांका से दबंगों ने बाइक सवार को गिरा कर एक के बाद एक ताबड़तोड़ हमला कर बुरी तरह लहूलुहान कर दिया। हालत गंभीर होने से बाइक सवार युवक बेहोश हो गया। दबंग बाइक सवार को मृत समझकर मौके से फरार हो गए।जानकारी के बाद मौके पर पहुंचे परिजन घायल अवस्था में लेकर कोतवाली पहुंचे। पुलिस ने घायलों को सीएचसी में भर्ती कराया। हालत गंभीर होने पर चिकित्सकों ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया। कार्रवाई के लिए दोनों पक्षों की ओर से पुलिस को तहरीर दी गई।

पानी की बर्बादी को नहीं रोक पाया है जल संस्थान

* रेलवे आईओडब्ल्यू विभाग को भी नहीं है परवाह

जन एक्सप्रेस । प्रयागराज

यमुनानगर। न्यू रेलवे कॉलोनी और नैनी रेलवे स्टेशन पर सप्लाई करने वाली पेयजल पाइप लाइन फटने से हजारों लीटर पानी बर्बाद हो रहा है। लेकिन सम्बद्ध विभागों को इसकी परवाह नहीं है। जबकि फटी हुई पाइप लाइन नैनी स्टेशन प्लेटफार्म नंबर चार की तरफ से छिवकी जंक्शन तक जाने वाली मुख्य सड़क के किनारे बने नाला के पास से गुजरी है। स्थानीय कॉलोनी वासियों का कहना है कि पिछले करीब चार-पांच दिनों से यह पेयजल पाइपलाइन फटी हुई है और अभी तक नहीं बनाई गई है। जिससे हजारों लीटर पानी बर्बाद हो चुका है। सप्लाई शुरू होते ही पानी की मोटी धार फटे हुए पाइप से निकलकर गड्ढे में जा रही है। रेलवे आईओडब्ल्यू विभाग के अधिकारियों का इस सड़क से रोजाना सुबह-शाम आवागमन होता है लेकिन तुमको भी पानी की बर्बादी से कोई फर्क नहीं पड़ता। जलसंरक्षण पर सरकारों का बराबर जोर दिया जाता है लेकिन यहां न्यू रेलवे कॉलोनी मैं ठीक उलट हो रहा है। जल संस्थान ने भी अभी तक पानी की बर्बादी को रोकने का कोई प्रबंध नहीं किया है। जिससे पानी की बर्बादी रोकने की उसकी जिम्मेदारी पर प्रश्नचिन्ह लग रहा है।

सावन का चौथा सोमवार

भोले बाबा के जयकारों से गूंजे शिवालय

गंगातटों पर भी रही स्नानार्थियों की भीड़, मंदिरों में लगी रही लंबी कतारें

जन एक्सप्रेस। उन्नाव

बाबा औढरदानी की उपासना के पावन माह सावन के चौथे सोमवार को सभी शिव मंदिरों में भक्तों की अपार भीड़ उमड़ी। भोले बाबा के जयकारों से मंदिर परिसर दिन भर गुंजायमान रहे। भोरपहर से भक्त अपने बाबा के अभिषेक और दर्शन पूजन के लिए कतार में लगे नजर आए। सावन के चौथे सोमवार पर भोर पहर से हर हर महादेव, जय मां गंगे, बम बम भोले के जयघोषों की स्वर लहरियों ने समूचे वातावरण को शिवमय बना दिया। भक्तों के जत्थे अपने अपने संसाधनों व सवारियों से गंगा तटों का रूख करते नजर आए। परियर में गंगा स्नान के बाद भक्तों ने वहां के बलखंडेश्वर मंदिर का रूख किया। यहां पर दर्शनार्थियों की भीड़ देर शाम तक लगी रही। मगरवारा स्थित गोकुल बाबा, शहर के सिद्धनाथ मंदिर, झंडेश्वर मंदिर, राजा शंकर सहाय मंदिर, अखिलेश्वर महादेव मंदिर समेत सभी छोटे बड़े शिवालयों में अपने आराध्य महादेव का जलाभिषेक और पूजन अर्चन के लिए कतारों में लगे भक्त बाबा की जयकार करते हुए अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करते नजर आए। बाबा के जयकारों और घंटों की ध्वनियों से मंदिर परिसर गुंजायमान रहें। तमाम भक्तों ने शिव मंदिरों में रूद्राभिषेक कर प्रसाद वितरण कराया। कई जगहों पर भक्तों की मंडलियां भजनों के माध्यम से बाबा औढरदानी का गुणगान करती नजर आई।

परियर स्थित बलखंडेश्वर मंदिर में मौजूद भक्त।

दबंग को रंगदारी न देने पर दबंग ने गरीब असहाय को मार मार कर किया लहूलुहान

जन एक्सप्रेस/चौबेपुर। क्षेत्र के ग्राम अमिलिहा के मजरा पनउपुरवा गांव मे दबंग ऋषभ शुक्ला पुत्र श्याम बिहारी शुक्ला व उसके भाई शिशु शुक्ला एवं श्याम बिहारी शुक्ला निवासी पनऊपुरवा व तीन चार अज्ञात लोगो ने एक गरीब लाचार को बहरहमी से सिर्फ इसलिए पीट दिया क्योंकि उसने अपनी मेहनत की कमाई मे उन्हें रंग दरी देने से मना कर दिया वही गरीब सौरभ कुरील पुत्र स्व. रतिराम ने बताया कि 30/07/2023 को रात करीब 7-8 बजे वह अपने काम से घर वापस आ रहा था तभी रास्ते मे गांव के दबंगो ने उसका रास्ता रोक कर उससे पैसे कि मांग करने लगे और कहने लगे कि अगर गांव मे रहना तो हमें हर महीने रंग दरी देनी ही होंगी नहीं तो यहां रह नहीं पाओगे इतना कहते ही बराबर मे खडे शिशु शुक्ला ने उसकी जेब मे हाथ डाल दिया और उसकी जेब मे पड़े पांच हजार रुपए निकाल लिए ज़ब मजलूम ने इसका विरोध किया तो सभी दबंग उसे जातिसूचक गालिया देने लगे और इसी बीच ऋषभ शुक्ला ने जान से मारने की नियत से कुल्हाड़ी से जानलेवा हमला कर दिया व अन्य लोग उसे लाठी से मारने लगे ज़ब लाचार गरीब मरणासन्न की स्थिति मे पहुंच गया तब दबंगो ने गाली देके कहा की आज इस साले को जान से मार दो तभी क्षेत्र मे अपना खौफ कायम हो पाएगा वही ज़ब लोगो ने गरीब असहाये की चीख पुकार सुनी तो वह इकट्ठा हो गए जिसे दबंग वहा से भाग खडे हुए जिसके बाद प्रत्यक्ष दर्शयो ने पुलिस को फोन कर घटना से अवगत कराया जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने अचेत पड़े युवक को उपचार हेतु चौबेपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया जहा अधिक चोट होने के कारण उसे कानपुर के लिए रेफर कर दिया गया हैं वही पुलिस ने तहरीर के आधार पर धारा 147,148, 149, 386, 341,352, 324, 307, 394, 504,506 व अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (नृशंसता 3(2)(1)निवारण) अधिनियम,1989(संसोधन 2015) में मुकदमा पंजीकृत कर कार्यवाही का आश्वासन दिया है।

सोते समय बच्चे को जहरीले कीड़े ने काटा, मौत

जन एक्सप्रेस। हसनगंज, उन्नाव

कोतवाली क्षेत्र के बघवाकोला में बीती रात में घर सो रहे बच्चे को किसी जहरीले कीड़े ने काट लिया। हालत बिगड़ने पर परिजन उसे सीएचसी लेकर पहुंचे जहां से उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। यहां लाते समय रास्ते में ही बच्चे ने दम तोड़ दिया। कोतवाली क्षेत्र के बघवाकोला गांव निवासी अजीत (9) पुत्र कमलेश रविवार रात को खाना खाने में बाद सोने चला गया। रात में उसे किसी जहरीले कीड़े ने सोते समय काट लिया। बच्चे के चीख सुनकर परिजन जाग गए। उसकी हालत बिगड़ने पर बच्चे को सीएचसी मियांगंज लाया गया। वहां डाक्टर ने हालत गंभीर बता कर उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया। परिजन उसको लेकर जा रहे थे तभी रास्ते में अजीत की मौत हो गई। बेटे की मौत पर पिता कमलेश, मां गुड़िया और छोटा भाई सुजीत बिलख उठे। परिजनों ने बताया बेटे की मौत सर्प दंश से हुई है। परिजनों की सूचना पर पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

दही पुलिस ने अंतर्जनपदीय चोर गिरोह का किया पर्दाफाश, पांच गिरफ्तार

दो लोडर समेत बड़ी मात्रा में चोरी का माल किया बरामद, हाइवे किनारे खड़े ट्रकों का तिरपाल काट कर माल करते थे पार

जन एक्सप्रेस। उन्नाव

दही थाना पुलिस ने सर्विलांस टीम की मदद से बड़े अंतर्जनपदीय चोर गिरोह की धरपकड़ की है। पुलिस ने गिरोह के पांच सदस्यों को गिरफ्तार करते हुए उनके पास से दो अवैध असलहे, दो लोडर और बड़ी मात्रा में चोरी का माल बरामद किया है। सभी पद जिले समेत अन्य जनपदों में भी अपराधिक मामले दर्ज हैं।

पुलिस लाइन में इसका खुलासा करते हुए एएसपी शशि शेखर सिंह ने बताया कि रविवार को दही एसओ अनुराग सिंह, उप निरीक्षक भीमशंकर मिश्र और हमराहियों के साथ पुरवा मोड़ पर वाहन चेकिंग कर रहे थें। इस दौरान दो लोडर रोके गए। उन पर सवार वीरेन्द्र सिंह पुत्र रामकुमार व जब्बार पुत्र रज्जाक निवासीगण नयापुरवा, किदवईनगर थाना जुही जिला कानपुर नगर, राहुल कुमार मिश्रा पुत्र अरून कुमार मिश्रा निवासी ग्राम व थाना छिवलहा जनपद फतेहपुर, गौतम राजपूत पुत्र रवी राजपूत निवासी शान्तिनगर थाना दीनहथा जिला जलपाईगुडी पश्चिम बंगाल व आलोक पाण्डेय पुत्र धर्मेन्द्र पाण्डेय निवासी ग्राम खालियापुर थाना जहानाबाद जिला फतेहपुर थे। तलाशी लेने पर युवकों के पास से 12 बोर के दो तमंचे व तीन अदद कारतूस बरामद हुए। उन दोनों लोडरों पर लदा माल चोरी का पाया गया। जब उन्हें थाने लाकर पूछताछ की गयी तो उन्होंने गिरोह बना चोरी की बात स्वीकार की। उन्होंने बतायाि कवे सभी रात में सड़क पर हुए ढाबों पर खड़े ट्रकों से तिरपाल काट कर सामान चोरी करते हैं जिसे बाद में अलग अलग स्थानों पर बेंच देते हैं। उन्होंने बिजली के तार काटकर चोरी करने की भी बात स्वीकार की। चोरों ने आसीवन से तार कटिंग और बांगरमऊ व सफीपुर से ट्रकों का तिरपाल काट कर माल चोरी करने की बात कबूल की है। जब्बार पर 12, गौतम राजपूत पर पांच, वीरेंद्र, आलोक व राहुल पर चार चार अपराधिक मुकदमें अलग अलग थानों में दर्ज हैं। बरामदगी के आधार पर मुकदमा दर्ज कर सभी को न्यायालय में पेश किया गया जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया।

वार्ता में जानकारी देते एएसपी शशि शेखर सिंह।

ये माल हुआ बरामद

पुलिस ने चोर गिरोह के पास से दो लोडर, दो स्मार्ट फोन, सात बंडल बिजली के एल्मुनियम का तार, दो तमंचे, तीन कारतूस, एक बोरी चना दाल, दो बोरी मसूर दाल, एक बोरी साबुत मसूर, एक कार्टून गुड डे बिस्कुट, एक कार्टून ब्रिटानिया बिस्कुट, चार पैकेट चाय, दो कार्टून डिटाल साबुन, पांच बोरी घड़ी पाउडर, तीन कार्टून सरसों तेल, तीन कार्टून निरमा साबुन, तीन गत्ता घंड़ी साबुन, दो बोरी जामुन के बीज, एक प्रेशर कटर बरामद किया है।

फास्ट फॉरवर्ड

सरकार करा रही पौधरोपण, लकड़ी माफिया चला रहे प्रतिबंधित पेड़ों पर आरा

जन एक्सप्रेस/उन्नाव। एक ओर जहां प्रदेश सरकार पौधरोपण कर पर्यावरण को संरक्षित करने की कवायद चला रही है वहीं दूसरी ओर जिले के बिहार थाना क्षेत्र में वन विभाग और पुलिस की अनदेखी विशालकाय प्रतिबंधित पेड़ों पर धड़ल्ले से आरा चल रहा है। बिहार थाने से तकरीबन तीन किलोमीटरदूर रायबरेली हाइवे के किनारे कल्यानपुर गांव में लकड़ी माफियाओं ने महुआ की बाग में आधा दर्जन पेड़ों पर आरा चलाकर उन्हें धराशाही कर दिया। ग्रामीणों के मुताबिक प्रतिबंधित पेड़ों की कटान की सूचना भी जिम्मेदारों को दी गयी लेकिन कोई वहां झांकने तक नहीं पहुंचा। इन अनदेखी को ग्रामीण पुलिस और वन विभाग की लकड़ी माफियाओं से सांठ गांठ बता रहे हैं। उनका तर्क है कि गांव में यदि कोई अपने घर के आस पास लगे नीम आदि प्रतिबंधित पेड़ों छांट भी रहा होता है कि पुलिस और वन विभाग के लोग सूंघते हुए नियम का पाठ पढ़ाने पहुंच जाते हैं। गौरतलब हो कि इसी क्षेत्र में सैकड़ों साल पुरानी आम व महुआ की दर्जनों बागों का सफाया हो चुका है। हरियाली के प्रहरी कहे जाने वाले वन विभाग के अधिकारियों के बिना वरदहस्त के लकड़ी माफियाओं का इस कदर सक्रिय होना संभव नहीं है।

बोर्ड बैठक न होने से नाराज सभासदों ने किया प्रदर्शन

जन एक्सप्रेस/उन्नाव। बोर्ड बैठक न कराए जाने से खफा आठ सभासदों ने सोमवार को नगर पंचायत पुरवा के परिसर में जमकर हंगामा काटा। मौके पर किसी अधिकारी के न पहुंचने पर धरने पर बैठकर नारेबाजी करने लगे। यहां से एसडीएम कार्यालय पहुंचे सभासदों ने नगर प्रशासन के खिलाफ शिकायती पत्र सौंपा है। सोमवार को पुरवा नगर पंचायत में प्रस्तावित बोर्ड बैठक में सभी 17 सभासद कार्यालय पहुंचे। जहां एक कर्मचारी ने बताया कि बोर्ड बैठक को चेयरमैन ने स्थगित कर दिया है। जिससे सभी सभासद आक्रोशित होकर जमकर नारेबाजी बाद धरने पर बैठ गए। लगभग एक घंटे धरने पर बैठने के बाद सभी सभासद एसडीएम कार्यालय पहुंचें। सभासदों ने नगर पंचायत पर मनमानी का आरोप लगाया। बाद इसके सभासदों ने एसडीएम अतुल कुमार को शिकायतीपत्र सौंपकर समस्या का निस्तारण न होने पर धरने पर बैठने की बात कही है। एसडीएम कार्यालय से वापस आकर सभासद एक बार फिर नपं कार्यालय जाकर धरने पर बैठ गए। यह जानकारी मिलने पर एसडीएम अतुल कुमार नगर पंचायत परिसर पहुंचे और सभासदों को समस्याओं के निस्तारण का आश्वासन देकर धरना समाप्त कराया। ईओ संदीप कुमार ने बताया कि विधानसभा का सत्र शुरू हो जाने के चलते बोर्ड की बैठक निरस्त की गई है। सभासदों की समस्याओं का निस्तारण जल्द किया जाएगा।

पंद्रह करोड़, छह लाख रुपये की संपत्ति कुर्क

जन एक्सप्रेस/शुक्लागंज, उन्नाव। अपराधियों पर शिकंजा कसने के लिये डीएम के निर्देश पर लगातार अभियान चलाकर भूमाफिया, गैंगस्टर और हिस्ट्रीशीटर पर कार्यवाही की जा रही है। उसी के तहत गंगाघाट कोतवाली क्षेत्र के कन्हैया अवस्थी उपरोक्त व उसकी पत्नी दिव्या अवस्थी के खिलाफ पुलिस ने पूर्व में गैंगस्टर एक्ट के तहत कार्यवाही की थी। सीओ सदर आशुतोष कुमार ने बताया कि यह सभी संगठित गिरोह बनाकर कटरी पीपरखेड़ा व आसपास के गांव में सरकारी व किसानों की जमीनों पर कब्जा कर लेना तथा आपराधिक कृत्यों से अर्जित धन से क्रय की गई जमीन की बिक्री कर धोखाधड़ी कर अवैध तरीके से धन कमाने का कार्य की जाता है। स्थानीय लोगों द्वारा भी बताया गया कि कन्हैया अवस्थी उपरोक्त द्वारा आर्थिक व भौतिक लाभ हेतु अवैध तरीके से गैंग बनाकर गरीब किसानों की जमीन कब्जा कर उसको प्लाटिंग कर अवैध रूप से बेंचकर अपराध से आर्थिक लाभ प्राप्त कर रहा है अभियुक्त के विरुद्ध मारपीट, हत्या, घर में घुसकर धमकाने जैसे अभियोग पंजीकृत है। गिरोहबंद अधिनियम के तहत कन्हैया अवस्थी द्वारा आपराधिक कृत्यों से अर्जित अचल संपत्ति कीमत पंद्रह करोड़, छह लाख, अरसठ हजार पांच सौ 82 रुपये संपत्ति की कुर्की की गयी। इस जमीन को किसी भी प्रकार से खरीदना और बेचना कानून अपराध होगा। गैंगस्टर एक्ट के अन्य जो मुल्जिम है उनके खिलाफ भी कार्रवाई की जाएगी।

शिव मंदिरों में भक्तों की भीड़, गूंजे बम-बम के जयकारे

जन एक्सप्रेस/शुक्लागंज, उन्नाव। श्रावणमास के चौथे सोमवार को नगर व ग्रामीण क्षेत्रों से लोग मिश्रा कालोनी घाट, गंगा विष्णुघाट, शिव बाबाघाट, पक्काघाट, कच्चा घाट, पुल के नीचे के घाट, बालूघाट, आनन्द घाट और जाजमऊ के चंदन आदि घाटों पर पहुंचे। जहां भक्तों ने गंगा स्नान किया। जिसके बाद गंगा जल लेकर शिवालय पहुंचे। इस दौरान भक्तों ने बाबा की विधि विधान से पूजा अर्चना की। वहीं बालूघाट स्थित गायत्री मंदिर और राजधानी मार्ग स्थित श्री दुर्गा मंदिर में बाबा को पुष्प, दूध, दही, शहद और नैवेद्य समर्पित कर सुख और समृद्धि की कामना की। इसके अलावा गांधी नगर, चंपापुरवा, श्री नगर, गोपीनाथपुरम, नेहरू नगर, मिश्रा कॉलोनी, सीताराम कॉलोनी स्थित शिव मंदिरों में भी भक्तों की भीड़ रही। पूरे दिन शिवालय बम भोले के जयकारों से गूंजते रहे। वहीं देवारा कलां स्थित वीरभद्रेश्वर मंदिर में भी सुबह से शाम तक भक्त पूजा अर्चना करने के लिये पहुंचे। जहां भक्तों ने विधि विधान से बाबा की पूजा अर्चना की। इसके अलावा मंदिरों में सावन के सोमवार को देखते हुये रूद्राभिषेक कराया गया। जहां आचार्यों ने विधि विधान से पूजा अर्चना कराने के साथ ही दुग्धाभिषेक और जलाभिषेक कराया। जिसके बाद ठंडाई का प्रसाद वितरण किया गया।

सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के समापन पर डीएम ने वितरित किए हेलमेट

कलेक्ट्रेट में बाइकर्स को हेलमेट देती डीएम अपूर्वा दुबे।

जन एक्सप्रेस। उन्नाव

परिवहन विभाग की ओर से चलाए जा रहे सड़क सुरक्षा पखवाड़ा को सोमवार समापन हो गया। इस मौके पर जिलाधिकारी ने कलेक्ट्रेट में बाइक सवारों को हेलमेट वितरित करते हुए उन्हें यातायात नियमों का पालन करने की शपथ दिलाई।

बता दें कि परिवहन विभाग द्वारा 17 से 31 जुलाई तक सड़क सुरक्षा पखवाड़ा मनाया गया। जिसका सोमवार को अंतिम दिन रहा है। इस पखवाड़े में स्थानीय सहायक संभागीय परिवहन कार्यालय की विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को यातायात नियमों की महत्ता बताते हुए उनके पालन करने की शपथ दिलाई गयी। पखवाड़े में विभाग की ओर से नियमों की अनदेखी करने वालों पर प्रवर्तन की कार्रवाई भी अमल में लायी गयी। समापन के मौके पर डीएम अपूर्वा दुबे ने कलेक्ट्रेट में बाइक सवारों को मुफ्त हेलमेट वितरित कर उन्हें हमेशा हेलमेट लगाकर ही दो पहिया वाहन चलाने की नसीहत दी। इस मौके पर एआरटीओ प्रशासन आदित्य त्रिपाठी, एआरटीओ प्रवर्तन प्रतिभा गौतम समेत यातायात अमला और कलेक्ट्रेट के जिम्मेदार अधिकारी मौजूद रहें।

ईश्वर को अपने संचित पुण्यकर्म समर्पित करने चाहिए न कि पाप: कथा व्यास

जन एक्सप्रेस। उन्नाव

ईश्वर को अपने संचित पुण्यकर्म अर्पित करने चाहिए न कि पाप। सांसारिक वस्तुओं का ईश्वर के लिए कोई प्रयोजन नही है। यह बातें अचलगंज क्षेत्र के धन्नीपुर में चल रही भागवत कथा के अंतिम दिन कथा व्यास अकिंचन महाराज ब्रह्मचारी ने कही।

कथा के अंतिम दिन सुदामा चरित्र का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि कृष्ण के परम मित्र सुदामा जब हरि अर्थात ईश्वर के मिलने के लिए जाते हैं तो वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के रूप ने चार मुठ्ठी चावल ले जाते हैं। जिसमें कृष्ण धर्म और मोक्ष रूपी दो मुठ्ठी चावल ग्रहण करते हैं। अर्थ और काम रूपी दो मुठ्ठी चावल वापस ले आते हैं। जिनके बदले भगवान उन्हें सांसारिक सुख के संसाधन देते हैं।

उनके पुण्य कर्मों की दो मुठ्ठी से भगवान उनका परलोक संवार देते हैं। जो लोग कहते हैं कि ईश्वर को अपनी बुराई अर्पित कर दो वह अज्ञानी है। अपना भविष्य संवारने के लिए लोग तिजोरी में बहुमूल्य वस्तुओं को रखते है न की कूड़ा करकट। इसलिए अपने परलोक को सवारने के लिए अपने संचित पुण्य को ईश्वर रूपी तिजोरी में रखना चाहिए। इस अवसर पर राधा कृष्ण के साथ लोगो ने फूलों की होली खेल कर वातावरण को भक्ति मय कर दिया। आयोजक अशोक तिवारी ने बताया कि पूर्णाहुति के बाद मंगलवार को प्रसाद वितरण व भंडारे के साथ समापन होगा।

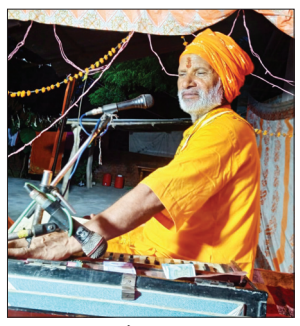

लापरवाही के चलते गांव में नहीं हो रही साफ सफाई

गांव के सफाई कर्मी लगे रहते हैं साहब के सेवादारी में

जन एक्सप्रेस। चौबेपुर

विकासखंड क्षेत्र की गलियों में इन दिनों गंदगी की भरमार है कस्बे से लेकर गांवों तक नालियां बजबजा रही हैं कूड़े के ढेर लगे हुए हैं ऊपर से बीमारियां बेतहाशा फैल रही हैं लेकिन विकास खंड कार्यालय में तैनात कर्मचारी सफाई कर्मियों को अपनी सेवादारी में लगाए हुए हैं सूत्रों की मानें तो विकासखंड कार्यालय में तैनात एडीओ पंचायत आदित्य शुक्ला अकेले ही 4 सफाई कर्मचारियों से अपनी सेवादारी कर आ रहे हैं यही नहीं बल्कि उनसे अपनी निजी गाड़ी भी चलवा रहे हैं ऐसे में साफ सफाई की व्यवस्था मजाक बन गई है सरकार स्वच्छता अभियान को लेकर लाख दावे कर ले लेकिन कर्मचारी अपनी ही चाल चल रहे हैं। विकास खंड कार्यालय में तैनात एडीओ पंचायत सोशल मीडिया पर रील बनाने में काफी चर्चित हैं उनकी सोशल साइट्स पर कई फिल्मी रील्स भी तेजी से वायरल हो रही हैं।

सपा विधायक इरफान सोलंकी गैंग को कोर्ट से लगा झटका

स्वतंत्र गवाह दे सकेंगे गवाही, अधिवक्ताओं द्वारा दिया गया प्रार्थनापत्र हुआ खारिज

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

बीते दिन सोमवार को समाजवादी पार्टी के विधायक इरफान सोलंकी जो वर्तमान समय में जनपद महाराजगंज जेल में दिन और रात काटने पर मजबूर है उसे एम.पी. एम. एल. कोर्ट से तगड़ा झटका लगा है। विधायक के विद्वान अधिवक्ताओं द्वारा स्वतंत्र गवाहों की गवाही पर रोक लगाने के लिए दिए गए प्रार्थना पत्र को कोर्ट ने खारिज कर दिया है। कोर्ट ने अपने आदेश में अभियोजन पक्ष के लिए लिखा है वह स्वतन्त्र गवाहों की गवाही कराना चाहते हैं तो पहले बचाव पक्ष को स्वतंत्र गवाहों के बयानों की नकल उपलब्ध कराकर गवाही करा सकते हैं।

ज्ञातव्य हो कि समाजवादी पार्टी के विधायक इरफान सोलंकी के अग्निकांड मामले की एम पी एम एल ए कोर्ट एडीजे ग्यारह में दिन प्रतिदिन सुनवाई चल रही है। मामले में अब तक कुल 16 गवाहों की गवाही हो चुकी है। 17 वे गवाह के रूप में गवाही देने कोर्ट पहुंचे अशोक कुमार दुबे की गवाही के दौरान ही एडीसी भास्कर मिश्रा द्वारा दो स्वतंत्र गवाहों की गवाही कराई जाने के लिए कोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया गया था। इसके बाद बचाव पक्ष के विद्वान अधिवक्ताओं ने आपत्ति जताते हुए अपनी आपत्ति भी दाखिल की थी। बीते दिन सोमवार को एमपी एमएलए कोर्ट के विद्वान न्यायाधीश द्वारा दोनों पक्षों को सुन लेने के बाद बचाव पक्ष की याचिका को खारिज करते हुए अपने ऑर्डर में स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि अगर अभियोजन पक्ष स्वतंत्र गवाहों की गवाही करवाना चाहता है तो वह सबसे पहले बचाव पक्ष के वकीलों को गवाहों की नकलें प्रदान कर दे और उसके बाद गवाही करवाई जा सकती है।

दुष्कर्म के आरोपी गिरफ्तार

जन एक्सप्रेस/शुक्लागंज, उन्नाव। एसपी के निर्देश पर गंगाघाट कोतवाली पुलिस ने अभियान चलाया। जहां पुलिस ने एक दुष्कर्म के आरोपी को गिरफ्तार कर कोर्ट भेजा है। कोतवाली प्रभारी चंद्रकांत सिंह ने बताया कि रविवार को उ0नि0 हरी निवास शर्मा हमराहियों के साथ अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध अभियान चला रहे थे। तभी पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर दुष्कर्म के वांछित अभियुक्त श्री नगर निवासी मोहित को गिरफ्तार किया।

सूचना

मै अमित भार्गव मेरी पुत्री का नाम पहले आध्या भार्गव था जो कि अब शाम्भवी भार्गव हो गया है। लोग मेरी पुत्री को इसी नाम से जानते पहचानते है और भविष्य में भी मेरी पुत्री को इसी नाम शाम्भवी भार्गव से जाना पहचाना जाए।

सूचना कर्ता
अमित भार्गव पुत्र राजेंद्र भार्गव
पता : 10/492 खलासी लाइन, ग्वालटोली कानपुर नगर

ट्रैक पार करते मालगाड़ी की चपेट में आया किशोर, मौत

रायबरेली रेल रूट पर सोमवार सुबह हुई घटना

जन एक्सप्रेस । उन्नाव

रायबरेली रेल रूट पर बीघापुर कोतवाली अंतर्गत एक किशोर की सोमवार मालगाड़ी की चपेट में आकर मौत हो गई। एसएस के मेमो पर पहुंची पुलिस ने शव को ट्रैक से हटवा कर रूट क्लियर कराया। परिजनों के पहुंचने पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। बीघापुर कोतवाली क्षेत्र के बैजनाथ खेड़ा निवासी ओमकार रैदास (17) पुत्र कमलेश सोमवार सुबह जानवर चराने के लिए घर से निकला था। रायबरेली रेलमार्ग पर किमी 115/03 के गेट नंबर 101 और 102 के बीच उसकी मालगाड़ी की चपेट में आने से मौके पर मौत हो गई। किशोर का शव ट्रैक पर पड़ा होने की जानकारी स्टेशन अधीक्षक बीघापुर ने पुलिस को मेमो भेज कर दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव ट्रैक से हटवा कर रूट क्लियर कराया। ग्रामीणों ने किशोर की पहचान कर परिजनों को सूचना दी। घटना की जानकारी मिलते परिजनों में कोहराम मच गया सभी रोते बिलखते घटना स्थल पर पहुंचे। पुलिस ने पोस्टमार्टम करा शव को परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

सपा सरकार के अलावा भाजपा सरकार में भी एडिशनल सीएमओ का वर्चस्व कायम

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

कानपुर नगर के एडिशनल सीएमओ का सपा सरकार के अलावा भाजपा सरकार ने भी वर्चस्व कायम है। एडिशनल सीएमओ सपा सरकार में कल्याणपुर सीएचसी प्रभारी थे और भाजपा सरकार में अब कानपुर स्वास्थ्य विभाग की बागडोर संभाले हुए हैं।

आपको बताते चलें कि वर्तमान समय में कानपुर स्वास्थ्य विभाग में एडिशनल सीएमओ के पद पर तैनात डॉक्टर सुबोध प्रकाश सपा सरकार के कार्यकाल में कानपुर शहर को अपनी स्वास्थ्य सेवाएं देते चले आ रहे हैं। बीते 10 वर्षों से अधिक समय बीत जाने के बाद भी अभी तक इनका ट्रांसफर नहीं हो सका है। एडिशनल सीएमओ की कार्यकुशलता कहें या स्वास्थ्य मंत्रालय की एडिशनल सीएमओ

हट कर दी आपने- क्यों नहीं हुआ ट्रांसफर ?
दस साल से अंगद पांव जमाए बैठे हैं एडिशनल सीएमओ डॉक्टर सुबोध प्रकाश

जन एक्सप्रेस FOLLOW-UP

साहब पर कृपा जिसका फायदा मानक विहीन अस्पतालों को मिल रहा है। क्योंकि मानक इन अस्पतालों के यूनिटी एडिशनल सीएमओ साहब के ट्रांसफर को रुकवाने में अपना योगदान देती है। तभी तो सपा सरकार हो या भाजपा सरकार एडिशनल सीएमओ साहब योगी सरकार की जीरो टॉलरेंस पॉलिसी को चुनौती देती नजर आ रहे हैं।

मणिपुर वायरल वीडियो केस : पीड़ित सीबीआई जांच के खिलाफ, केंद्र ने कहा

सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में हो इन्वेस्टिगेशन तो हमें ऐतराज नहीं

जन एक्सप्रेस/एजेंसी। नई दिल्ली

मणिपुर में दो महिलाओं के साथ दरिंदगी से देश को शर्मसार करने वाले मामले में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई है। बता दें, शीर्ष अदालत दो महिलाओं पर भीड़ द्वारा किए गए हमले से संबंधित मामले की सुनवाई को स्थानांतरित करने के केंद्र सरकार के अनुरोध पर विचार कर रहा है। उसने इस दौरान कड़े शब्दों में कहा कि घटना को यह कहकर उचित नहीं ठहरा सकते कि ऐसा और भी कहीं हुआ है। फिलहाल, सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई आज दोपहर 2 बजे के लिए स्थगित कर दी है। शीर्ष अदालत में सुनवाई के दौरान पीड़ित महिलाओं की ओर से पेश वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल ने कहा कि महिलाएं मामले की सीबीआई जांच और मामले को असम स्थानांतरित करने के खिलाफ हैं। सिब्बल ने आगे कहा कि पीड़ित महिलाओं में से एक के पिता और भाई की हत्या कर दी गई थी। उनके अभी तक शव नहीं मिले हैं। उन्होंने कहा कि 18 मई को जीरो एफआईआर दर्ज की गई। जब कोर्ट ने संज्ञान लिया, तब कुछ हुआ। तो फिर हम क्या भरोसा रखें? उन्होंने कहा कि ऐसी कई घटनाएं होंगी। इसलिए हम एक ऐसी एजेंसी चाहते हैं जो मामले की जांच करने के लिए स्वतंत्र हो।

एफआईआर पर सुप्रीम कोर्ट का सवाल, केंद्र का जवाब

- **सुप्रीम कोर्ट :** घटना 4 मई को हुई और एफआईआर 18 मई को दर्ज की गई। 14 दिन लग गए जीरो एफआईआर दाखिल करने में पुलिस कर क्या रही थी?
- **केंद्र सरकार :** सरकार के पास छिपाने के लिए कुछ भी नहीं है। सुप्रीम कोर्ट चाहे तो मॉनिटरिंग कर सकती है। यहां हो या वहां, जो कुछ भी सामने आ रहा है।

कोर्ट रूम में किसने क्या कहा...

- **याचिकाकर्ता :** वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल ने कहा कि यह साफ है कि पुलिस उन लोगों के साथ मिलकर काम कर रही है, जो महिलाओं के खिलाफ हिंसा की साजिश कर रहे हैं। पुलिस इन महिलाओं को ले गई और भीड़ में छोड़ दिया। इसके बाद भीड़ ने वो किया, जो सामने आया है। दोनों में से एक के पिता और भाई को कत्ल कर दिया गया। अभी तक उन्हें बॉडी नहीं मिली है। जीरो एफआईआर दर्ज की गई और वो भी 18 मई को। जब कोर्ट ने इस मामले पर सुनवाई की तो कुछ हुआ। हमारे पास अब किसका भरोसा है? ऐसी कई घटनाएं हुई हैं।
- **केंद्र सरकार :** सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि अगर सुप्रीम कोर्ट यह मामला देखता है तो हमें कोई आपत्ति नहीं है।
- **याचिकाकर्ता :** साफ है कि ऐसे कई वाकये हुए हैं। हम सीबीआई जांच के खिलाफ हैं। हम चाहते हैं कि एक स्वतंत्र एजेंसी इसकी जांच करे। लॉ ऑफिसर या अटॉर्नी जनरल निगरानी कैसे करेंगे और क्या निगरानी करेंगे? और अगर कोई पक्षपात हुआ तो?
- **सभी पीड़ित महिलाओं की ओर से याचिकाकर्ता :** वरिष्ठ वकील इंदिरा जय सिंह ने कहा कि केंद्र की रिपोर्ट के मुताबिक 595 एफआईआर दर्ज की गई हैं। इनमें से कितनी सेक्शुअल वॉयलेंस की हैं, कितनी आगजनी, हत्या की हैं। यह अभी स्पष्ट नहीं है। जहां तक कानून का सवाल है, तो रेप विक्टिम इस बारे में बात नहीं कर रही हैं। वो अभी तक अपने दुख से बाहर नहीं आ पाई हैं। सबसे जरूरी चीज भरोसा पैदा करना है। सीबीआई जांच शुरू करती है तो अभी हम यह नहीं जानते हैं कि महिलाएं सामने आएंगी। महिलाएं पुलिस की बजाय महिलाओं से ही बात करने में ज्यादा सहज महसूस करेंगीं। इसके लिए एक हाईपावर कमेटी बनाई जाए और उसमें ऐसी महिलाओं को शामिल किया जाए जिन्हें इस तरह के मामलों का अनुभव हो।

मणिपुर हिंसा की एसआईटी जांच से इनकार : सुप्रीम कोर्ट ने मणिपुर हिंसा पर दायर एक नयी जनहित याचिका पर विचार करने से सोमवार को इनकार कर दिया। इस याचिका में राज्य में जातीय हिंसा के अलावा पोस्ते की कथित खेती और नार्को-आतंकवाद सहित अन्य मुद्दों की विशेष जांच दल (एसआईटी) से जांच कराने का अनुरोध किया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने मामले में 'अधिक विशिष्ट' याचिका दायर करने की अनुमति दी। उसने कहा कि इस जनहित याचिका पर विचार करना 'बहुत कठिन' है, क्योंकि इसमें केवल एक समुदाय को दोषी ठहराया गया है। याचिकाकर्ता मायांगलमबम बॉबी मीतेई की तरफ से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता माधवी दीवान ने याचिका वापस लेने का अनुरोध किया, जिसे सुप्रीम कोर्ट ने स्वीकार कर लिया। प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने कहा कि इस जनहित याचिका पर विचार करना 'बहुत कठिन' है, क्योंकि इसमें केवल एक समुदाय को दोषी ठहराया गया है। पीठ ने कहा कि आप एक अधिक विशिष्ट याचिका के साथ आ सकते हैं। इस याचिका में हिंसा से लेकर मादक पदार्थों और पेड़ों की कटाई सहित सभी मुद्दे शामिल हैं।

उच्चाधिकार प्राप्त समिति हो गठित

जयसिंह ने आगे कहा कि जहां तक कानून का सवाल है, दुष्कर्म की पीड़िताएं इस बारे में बात नहीं करतीं। वे सामने नहीं आतीं। इसलिए सबसे पहले आत्मविश्वास पैदा करना जरूरी है। आज हमें नहीं पता कि अगर सीबीआई जांच शुरू कर दे तो महिलाएं सामने आ जाएंगी। उन्होंने कहा कि पुलिस की बजाय महिलाओं से घटना के बारे में बात करने में पीड़ित महिलाओं के लिए सहूलियत होगी। एक उच्चाधिकार प्राप्त समिति होनी चाहिए, जिसमें नागरिक समाज की महिलाएं हों, जिनके पास इससे निपटने का अनुभव हो।

यह लोग हों शामिल : उन्होंने आगे कहा कि उच्चाधिकार प्राप्त समिति (हाई पावर कमेटी) में सैयदा हमीद, उमा चक्रवर्ती, रोशनी गोस्वामी आदि शामिल हो सकते हैं, ये सभी समुदाय में इस मुद्दे से जुड़े हैं। उन्हें एक रिपोर्ट बनाने दीजिए और इसे इस अदालत में लाने दीजिए। वहीं, ग्रोवर ने सुप्रीम कोर्ट से कहा कि राहत शिविरों की क्या स्थिति है, इस पर एक स्वतंत्र, निष्पक्ष रिपोर्ट आने दीजिए।

कुकी पक्ष ने सीबीआई जांच का किया विरोध : मणिपुर हिंसा मामले में कुकी पक्ष की ओर से पेश वरिष्ठ वकील कॉलिन गोंसाल्वेस ने सीबीआई जांच का विरोध किया और सेवानिवृत्त डीजीपी वाली एसआईटी से जांच की मांग की। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट से मणिपुर के किसी भी अधिकारी को शामिल न करने की मांग की है।

हरियाणा में भगवा यात्रा पर पथराव

बृजमंडल यात्रा के दौरान दो गुट भिड़े, गाड़ियां फूंकी, बाहर से पुलिसफोर्स बुलाई

जन एक्सप्रेस/एजेंसी। नई दिल्ली

हरियाणा के नूंह में सोमवार को विश्व हिंदू परिषद और मातृशक्ति दुर्गावाहिनी की तरफ से निकाली जा रही बृजमंडल यात्रा के दौरान बवाल हो गया। इस दौरान कई गाड़ियों को आग लगा दी गई। पुलिस पर भी पथराव किया गया। इसमें कुछ लोगों के घायल होने और एक व्यक्ति की गोली लगने से मौत की खबर है। हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है। पुलिस के अलावा नूंह जिला प्रशासन के आला अधिकारी स्थिति को कंट्रोल करने में लगे हुए हैं। यात्रा नूंह के नल्हड़ शिव मंदिर से फिरोजपुर-झिरका की तरफ रवाना हुई थी। जैसे ही यह तिरंगा पार्क के पास पहुंची, वहां एक समूह के लोग पहले से जमा थे। दोनों पक्ष के आमने-सामने आते ही उनमें तकरार हो गई और देखते ही देखते पथराव शुरू हो गया। इस वजह से पूरे इलाके में माहौल तनावपूर्ण हो गया। नूंह में तनावपूर्ण हालात को देखते हुए साथ लगे पलवल, फरीदाबाद और रेवाड़ी जिलों से अतिरिक्त पुलिस फोर्स बुलाई गई है। सोमवार दोपहर दो गुटों के बीच हुए पथराव में कई पुलिसकर्मियों को भी चोटें आई हैं। नूंह में होडल बाइपास और आसपास के इलाके में स्थिति बेहद तनावपूर्ण बनी हुई है। यहां उपद्रवियों ने कई गाड़ियों को आग के हवाले कर दिया।

नूंह में सारे मार्केट बंद, आसमान में छाया काला धुआं

विवाद बढ़ने के बाद पूरे नूंह शहर का मार्केट बंद हो गया। सबसे पहले तिरंगा पार्क के आसपास के इलाके की दुकानें बंद हुईं। उसके बाद देखते ही देखते नूंह सिटी के मेन मार्केट के अलावा नया बाजार, गली बाजार और होडल बाइपास समेत शहर के दूसरे मार्केट भी दुकानदारों ने बंद कर दिए। शहर के आसमान में काला धुआं नजर आ रहा है।

दोपहर तक नहीं पहुंचा मोनू मानेसर

बता दें कि एक दिन पहले ही गौ रक्षक मोनू मानेसर ने इस यात्रा में अपनी टीम के साथ शामिल होने की जानकारी देते हुए वीडियो जारी किया था। राजस्थान के भरतपुर की पुलिस टीम मोनू को पकड़ने के लिए नूंह पहुंची है। भरतपुर के स्क मृदुल कच्छावाह ने इसकी पुष्टि की। हंगामा होने तक मोनू यात्रा में नहीं पहुंचा था। हरियाणा में बजरंग दल के प्रांत गौरक्षा प्रमुख मोनू मानेसर पर राजस्थान में भरतपुर के रहने वाले दो युवकों नासिर और जुनैद की हत्या का आरोप है। इन दोनों को भिवानी में उनकी गाड़ी के अंदर जिंदा जला दिया गया था। मोनू इस केस में वांटेड है।

बजरंग दल ने रवाना की थी बृजमंडल यात्रा

विश्व हिंदू परिषद (विहिप) और मातृशक्ति दुर्गावाहिनी की तरफ से हर साल नूंह इलाके में बृजमंडल यात्रा निकाली जाती है। यह यात्रा नूंह से शुरू होती है और इसका समापन फिरोजपुर झिरका के गांव सिगार में होता है। सोमवार सुबह बजरंग दल और गौरक्षा दल ने हरी झंडी दिखाकर नूंह से यात्रा को रवाना किया।

आईआरसीटीसी घोटाला : लालू परिवार की 6 करोड़ की संपत्ति अटैच

जन एक्सप्रेस/एजेंसी। नई दिल्ली

प्रवर्तन निदेशालय ने आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव और उनके परिवार की 6 करोड़ 2 लाख रुपए की संपत्ति अटैच की है। इसमें गाजियाबाद और बिहार की सभी संपत्ति शामिल हैं। ईडी ने आईआरसीटीसी घोटाले में ये कार्रवाई की है। इस मामले में लालू यादव उनकी पत्नी राबड़ी देवी, बेटे तेजस्वी और बेटियां मीसा, हेमा से पहले ही पूछताछ की जा चुकी है। दिल्ली के राउज एवेन्यू कोर्ट में इस मामले की अगली सुनवाई 7 अगस्त को होगी। आईआरसीटीसी (भारतीय रेल पर्यटन एवं खानपान निगम) टेंडर घोटाले में आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव फंसे हुए हैं। लालू पर आरोप है कि उन्होंने 2004 से 2009 के बीच रेल मंत्री रहते हुए एक निजी कंपनी को अवैध तरीके से भुवनेश्वर और रांची में दो होटलों को चलाने का ठेका दे दिया। इसके बदले में उन्हें पटना के सगुना मोड़ के एरिया में इस कंपनी ने 3 एकड़ जमीन दी थी। जमीन राबड़ी देवी और तेजस्वी यादव के मालिकाना हक वाली लारा प्रोजेक्ट कंपनी प्राइवेट लिमिटेड को बेच दी गई। आरोप यह भी कि रेलवे के होटलों को लीज पर देने के बदले में डिलाइट कंपनी को जमीन दी गई। बाद में उस कंपनी से लारा कंपनी ने कम कीमत में जमीन खरीदी। पूरे मामले की जांच सीबीआई कर रही है।

जयपुर-मुंबई एक्सप्रेस में फायरिंग, 4 की मौत

*** आरपीएफ जवान ने एएसआई को गोली मारी, दूसरे डिब्बे में 3 पैसेंजर्स को शूट किया**

जन एक्सप्रेस/एजेंसी। नई दिल्ली

जयपुर-मुंबई एक्सप्रेस (12956) में सोमवार (31 जुलाई) सुबह रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स के एक कॉन्स्टेबल ने अपनी ऑटोमैटिक राइफल से साथी असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर को गोली मार दी। इसके बाद वह दूसरे डिब्बे में गया और 3 पैसेंजर्स को भी शूट कर दिया। घटना के वक्त ट्रेन गुजरात से महाराष्ट्र जा रही थी। फायरिंग पालघर रेलवे स्टेशन के पास ट्रेन के कोच बी-5 में हुई। जवान को उसकी राइफल के साथ अरेस्ट कर लिया गया है।

आरपीएफ ने क्या कहा?

आरपीएफ कमिश्नर रवींद्र शिशवे ने कहा कि चार शव अलग-अलग कोच से मिले। दो बॉडी बी 5, एक पैंट्री कार और एक बी 1 कोच से मिलीं। इस पर अभी जांच के बाद ही नतीजे पर पहुंचा जा सकता है। उससे पहले कुछ कहना ठीक नहीं।

6 महीने बाद रिटायर होने वाले थे मारे गए एएसआई

आरोपी शख्स उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले का रहने वाला है। वहीं, मारे गए एएसआई राजस्थान के सवाई माधोपुर के हैं। वे 6 महीने बाद रिटायर होने वाले थे। उनके परिजन के लिए 25 लाख रुपए के मुआवजे की घोषणा की गई है। परिजन को रेलवे सुरक्षा कल्याण निधि से भी 15 लाख रुपए दिए जाएंगे। पश्चिमी रेलवे के प्रवक्ता सुमित ठाकुर ने बताया कि परिजन को डेथ-कम-रिटायरमेंट ग्रेच्युटी और ग्रुप इंश्योरेंस की रकम भी दी जाएगी। इनके अलावा मारे गए 3 अन्य यात्रियों को भी मुआवजा दिया जाएगा।

एस्कॉर्ट ड्यूटी पर थे एएसआई और कॉन्स्टेबल

आरपीएफ के मुताबिक, घटना सुबह लगभग 5 बजकर 23 मिनट पर हुई। आरोपी कॉन्स्टेबल चेतन कुमार चौधरी और एएसआई टीका राम मीणा एस्कॉर्ट ड्यूटी पर थे। चेतन ने टीका राम पर फायरिंग के बाद 3 और यात्रियों को गोली मारी। इसके बाद वो दहिसर स्टेशन के पास ट्रेन से उतर कर भाग गया था। बाद में उसे हथियार के साथ गिरफ्तार किया गया और पूछताछ के लिए बोरीवली पुलिस स्टेशन ले जाया गया। पूछताछ के बाद फायरिंग की वजह का पता चलेगा।

21 लाख के टमाटर से भरा ट्रक लापता

जन एक्सप्रेस/एजेंसी। नई दिल्ली

कर्नाटक के कोलार से 21 लाख रुपए के टमाटर राजस्थान ले जा रहा ट्रक रास्ते से लापता हो गया। ट्रक ड्राइवर और क्लीनर से भी संपर्क नहीं हो पा रहा है। ट्रक के मालिक ने कहा- ड्राइवर ने अपने साथी के साथ मिलकर टमाटर चुराए हैं। दोनों के खिलाफ कोलार नगर थाने में शिकायत दर्ज करा दी गई है। ट्रक के मालिक ने बताया कि 27 जुलाई को दो व्यापारियों ने कोलार एपीएमसी यार्ड से राजस्थान के जयपुर तक टमाटर ले जाने के लिए ट्रक बुक किया था। ट्रक को शनिवार रात जयपुर पहुंचना था, लेकिन सोमवार तक वह अपनी मंजिल पर नहीं पहुंचा। ड्राइवर का फोन भी बंद है, ट्रक के ऑपरेटर से भी संपर्क नहीं हो पा रहा है। पुलिस का कहना है कि गाड़ी में लगे जीपीएस ट्रैकर के मुताबिक, ट्रक ने कोलार से करीब 1600 किमी की दूरी तय की थी। इसके बाद ट्रक का कोई पता नहीं चला। टमाटर खरीदने वाले व्यापारियों का कहना है कि अगर ट्रक का एक्सीडेंट हुआ होता तो हमें सूचना मिली होती। हमें शक है कि ड्राइवर टमाटर चुराने के लिए ट्रक लेकर भाग गया है। इससे पहले 8 जुलाई को कर्नाटक के चित्रदुर्ग से टमाटर से भरा ट्रक हाईजैक हो गया था।

शिवाजी से लेकर संभाजी तक की याद दिलाती है पुणे मेट्रो, पीएम मोदी आज दिखाएंगे हरी झंडी

जन एक्सप्रेस/एजेंसी। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंगलवार यानी एक अगस्त को पुणे में होंगे। इस दौरान वह पुणे मेट्रो ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। इसके अलावा पीसीएमसी द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत निर्मित 1,280 और पुणे नगर निगम द्वारा निर्मित 2,650 से अधिक पीएमएवाई घर की चाभियां भी लोगों को सौंपेंगे। प्रधानमंत्री का ये पुणे दौरा चर्चा का विषय बना हुआ है। ऐसा इसलिए क्योंकि उन्हें इस दौरान लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित किया जाएगा। यही नहीं, मेट्रो परियोजना के तहत कई स्टेशन ऐसे बनाए गए हैं, जिनकी खासियत हैरान करने वाली है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मंगलवार को पुणे पहुंचेंगे। इस दौरान वह मेट्रो ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। पुणे मेट्रो का ये खंड फुगेवाड़ी स्टेशन से सिविल कोर्ट स्टेशन और गरवारे कॉलेज स्टेशन से रूबी हॉल क्लिनिक स्टेशन तक हैं। प्रधानमंत्री ने 2016 में इस परियोजना की आधारशिला रखी थी। नए खंड पुणे शहर के महत्वपूर्ण स्थानों जैसे शिवाजी नगर, सिविल कोर्ट, पुणे नगर निगम कार्यालय, पुणे आरटीओ और पुणे रेलवे स्टेशन को जोड़ेंगे।

पुणे के मेट्रो की क्या है खासियत

पीएमओ ने इसको लेकर बयान जारी किया है। इसके मुताबिक, पुणे के मेट्रो रूट पर कुछ स्टेशन का डिजाइन छत्रपति शिवाजी महाराज से प्रेरित होकर बनाया गया है। छत्रपति संभाजी उद्यान मेट्रो स्टेशन और डेक्कन जिमखाना मेट्रो स्टेशन का डिजाइन छत्रपति शिवाजी महाराज के सैनिकों द्वारा पहनी जाने वाली पगड़ी से मिलता-जुलता है, जिसे 'मावला पगड़ी' भी कहा जाता है।

पीएमओ ने कहा कि शिवाजी नगर भूमिगत मेट्रो स्टेशन में एक विशिष्ट डिजाइन है जो छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा निर्मित किलों की याद दिलाता है। वहीं, सिविल कोर्ट मेट्रो स्टेशन देश के सबसे गहरे मेट्रो स्टेशनों में से एक है, जिसमें 33.1 मीटर का सबसे गहरा बिंदु है। स्टेशन की छत को इस तरह से बनाया गया है कि सीधी धूप प्लेटफॉर्म पर पड़े।

इन प्रोजेक्ट्स को भी हरी झंडी दिखाएंगे पीएम मोदी

पुणे दौरे के समय प्रधानमंत्री मोदी पिंपरी चिंचवाड़ नगर निगम के तहत अपशिष्ट के उपयोग वाले ऊर्जा संयंत्र का उद्घाटन भी करेंगे। लगभग 300 करोड़ रुपये की लागत से विकसित यह संयंत्र बिजली का उत्पादन करने के लिए सालाना लगभग 2.5 लाख मीट्रिक टन कचरे का उपयोग करेगा। पीसीएमसी द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत निर्मित 1,280 से अधिक मकान भी वह लाभार्थियों को सौंपेंगे। वह पुणे नगर निगम द्वारा निर्मित 2,650 से अधिक पीएमएवाई घर भी सौंपेंगे। इसके अलावा, प्रधानमंत्री पीसीएमसी द्वारा निर्मित किए जाने वाले लगभग 1,190 पीएमएवाई घरों और पुणे महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण द्वारा निर्मित 6,400 से अधिक घरों की आधारशिला भी रखेंगे।

पीएम मोदी को मिलेगा लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार

प्रधानमंत्री को इस यात्रा के दौरान लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। लोकमान्य तिलक की विरासत का सम्मान करने के लिए 1983 में तिलक स्मारक मंदिर ट्रस्ट द्वारा इस पुरस्कार की शुरुआत की गई थी। यह पुरस्कार उन लोगों को दिया जाता है जिन्होंने राष्ट्र की प्रगति और विकास के लिए काम किया है और जिनके योगदान को केवल उल्लेखनीय और असाधारण के रूप में देखा जा सकता है। यह पुरस्कार हर साल एक अगस्त को लोकमान्य तिलक की पुण्यतिथि पर दिया जाता है। प्रधानमंत्री मोदी से पहले यह पुरस्कार पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा और प्रणब मुखर्जी, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, इंदिरा गांधी और मनमोहन सिंह तक को मिल चुका है। इसके अलावा मशहूर व्यवसायी एन आर नारायणमूर्ति तथा 'मेट्रो मैन' ई श्रीधरन जैसे 40 दिग्गजों को यह सम्मान प्रदान किया जा चुका है।

मणिपुर मुद्दे पर गोवा विधानसभा में हंगामा सभी विपक्षी सदस्य दो दिन के लिए निलंबित

जन एक्सप्रेस/एजेंसी। नई दिल्ली

गोवा विधानसभा में सोमवार को मणिपुर मुद्दे पर हंगामा हो गया। इस दौरान हंगामा करने के लिए सभी सात विपक्षी सदस्यों को दो दिन के लिए सदन की कार्यवाही से निलंबित कर दिया गया। जिन नेताओं को विधानसभा की कार्यवाही से निलंबित किया गया है, उनमें विपक्ष के नेता यूरी अलेमाओ, कांग्रेस विधायक एलटोन डीकोस्टा, कार्लोस फेरेरा, आप विधायक वेंजी वीगास, क्रूज सिल्वा, गोवा फॉरवर्ड पार्टी के विजय सरदेसाई और गोवा रिवोल्यूशनरी पार्टी के विरेश बोरकर शामिल हैं। गोवा विधानसभा में प्रश्नकाल के बाद यूरी अलेमाओ ने सदन में मणिपुर हिंसा के मामले पर चर्चा की मांग की। अलेमाओ ने कहा कि शुक्रवार को क्रूज सिल्वा ने इस मुद्दे पर चर्चा के लिए प्राइवेट मेंबर प्रस्ताव दिया था लेकिन सभापति रमेश तावड़कर ने उसे अस्वीकार कर दिया। इसके विरोध में सोमवार को सभी विपक्षी सदस्य काले कपड़े पहनकर विधानसभा पहुंचे और हंगामा शुरू कर दिया। घटना के बाद मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत और पर्यावरण मंत्री नीलेश कबराल ने विपक्षी सदस्यों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की। सीएम ने कहा कि सदन में ऐसे व्यवहार को कतई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। इसके बाद सभापति ने सभी सातों विपक्षी सदस्यों को दो दिन के लिए सदन की कार्यवाही से निलंबित कर दिया।

सभापति ने कहा, संसद में चल रही चर्चा

सभापति ने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्रालय इस मुद्दे को डील कर रहा है और संसद में भी इस पर चर्चा चल रही है। ऐसे में विधानसभा में इस पर चर्चा की इजाजत नहीं दी जा सकती। सभापति के इस जवाब से नाराज होकर विपक्षी सदस्य वेल में आकर नारेबाजी करने लगे। इस दौरान एमजीपी के विधायक जीत अरोलकर ने बोलना जारी रखा तो विपक्षी सदस्य उनकी तरफ लपके और उन्हें बोलना से रोकना चाहता लेकिन मार्शल ने सदस्यों को सदन से बाहर कर दिया।

मणिपुर मुद्दे पर सिर्फ घड़ियाली आंसू बहा रहा विपक्ष : निर्मला सीतारमण

जन एक्सप्रेस/एजेंसी। नई दिल्ली

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को विपक्ष पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि विपक्ष मणिपुर मुद्दे पर चर्चा में हिस्सा नहीं लेना चाहता। आज जब यह मुद्दा संसद में उठाया गया तो विपक्ष चर्चा से भागता नजर आया। विपक्ष के व्यवहार से दुखी हूं। उन्होंने कहा कि मणिपुर जैसे संवेदनशील मसला विपक्ष के लिए सिर्फ एक राजनीतिक मुद्दा है। आज यह साबित हो गया कि वे मणिपुर मुद्दे पर सिर्फ मगरमच्छ के आंसू बहा रहे थे। अगर उन्हें वास्तव में परवाह होती, तो वे इस पर चर्चा करते। उन्होंने कहा कि आज आपने राज्यसभा में देखा कि आज सुबह सूची में मणिपुर मुद्दे पर चर्चा होनी तय थी। जब चर्चा शुरू होने का समय आया, तो विपक्ष ने इससे किनारा कर लिया। यह तो पहले से तय था। सदन के नेता इसके लिए तैयार थे। विपक्षी नेता भी इसके लिए तैयार थे, लेकिन जब समय आया तो सभी ने बाहर जाना जरूरी समझा।

चर्चा के लिए सदन को चलने देने की अपील की

वित्त मंत्री ने चेतावनी देते हुए कहा कि आइए चर्चा करिए। सरकार तैयार है। आपके नेता तो मणिपुर जाकर आएं हैं। वहां के लोगों से चर्चा कर के आए हैं। लोगों का दर्द साझा किया है। तो आइए चर्चा सदन में भी चर्चा करिए। सरकार इसके लिए पहले दिन से तैयार है। कोई भी रुकावट नहीं आएगी।

रायगढ़ा में निर्माणाधीन पुलिया ढही, पांच लोगों की मौत

जन एक्सप्रेस/एजेंसी। नई दिल्ली। ओडिशा के रायगड़ा जिले में सोमवार को एक निर्माणाधीन पुलिया गिर जाने से पांच लोगों की मौत हो गई। मृतकों में चार बच्चे शामिल हैं। यह घटना कल्याणसिंहपुर ब्लॉक के उपरसाजा गांव में हुई। बताया गया है कि जब यह हादसा हुआ, उस वक्त ये लोग पुलिया के नीचे जमा हुए बारिश के पानी में नहा रहे थे। पुलिस के मुताबिक, दमकल और पुलिस के जवानों का एक दल मलबा हटाने के काम में लगा है। पुलिस ने कहा कि उन्हें मलबे में और भी लोगों के फंसे होने की आशंका है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक: अरुण कुमार त्रिपाठी द्वारा ए0वी0बी0 रेप्रोग्राफिक्स, ए-59, इंडस्ट्रियल एस्टेट, ताल कटोरा, लखनऊ से मुद्रित तथा अय्यूब कॉम्प्लेक्स, 82/68, गुरु गोविन्द सिंह मार्ग, लखनऊ पिन-226004, उ0प्र0 से प्रकाशित। संपादक: अरुण कुमार त्रिपाठी, (नेशनल हेड: कमलेश फाइटर) आर.एन.आई. पंजीयन संख्या : UPHIN/2009/30003, फोन नं.: 0522-4330955 मोबाइल नं. 8933805555, (नोट: सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ स्थित न्यायालय होगा।)